श्रीकाली
पूजा-पद्धति

# श्रीकाली-पूजा-पद्धति

(दुर्लभ हस्त-लिखित पाण्डुलिपि के आधार पर)

**श्रीमहा-विद्या-स्तोत्र**

**श्रीमहा-विपरीत-प्रत्यङ्गिरा-स्तोत्र**

**श्रीमहा-विद्या-कवच**

प्रणेता

**'कौल-कल्पतरु' पं० देवीदत्त शुक्ल**

**श्रीचन्द्रनाथ योगेश्वर**

आदि-सम्पादक

**'कुल-भूषणं' पं० रमादत्त शुक्ल**

**श्री जगदीश्वरानन्दनाथ**

सम्पादक

**ऋतशील शर्मा**

प्रकाशक

**कल्याण मन्दिर प्रकाशन**

श्रीचण्डी-धाम, अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-६

०९४५०२२२७६७, ०५३२-२५०२७८३

प्रकाशक
पण्डित देवीदत्त शुक्ल स्मारक
परा-वाणी आध्यात्मिक शोध-संस्थान
कल्याण मन्दिर प्रकाशन
श्रीचण्डी-धाम, अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-६
०९४५०२२२७६७, ०५३२-२५०२७८३

द्वितीय संस्करण
श्रीभैरवाष्टमी
'सौम्य' सं० २०७३ वि०
२१ नवम्बर, २०१६

अनुदान : २५०.०० रु०

मुद्रक
परा-वाणी प्रेस,
अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-२११००६

# अनुक्रम

# प्रस्तावना

(प्रथम संस्करण में प्रकाशित)

'श्रीआदि-काली-मठ, काशी' के दुर्लभ प्रसाद के रूप में प्रस्तुत 'पद्धति' लगभग पचास वर्षों पूर्व 'प्रज्ञा-चक्षु' शुक्ल जी ने अनूठे 'कौल' साधक **श्रीचन्द्रनाथ जी योगेश्वर** की सहायता से प्रकाशन हेतु पूर्ण कर दी थी, जिसका विवरण '**दो शब्द**' के अन्तर्गत श्रीजगदीश्वरा-नन्दनाथ जी ने लिख दिया है। कितने विस्मय की बात है कि लगभग आधी शताब्दी के बाद यह प्रकाश में आ रही है! अभी तक यह 'गुप्त' क्यों रही?

ऐसा नहीं है कि इस 'पद्धति' के प्रकाशन का प्रयास नहीं किया गया। वर्षों पूर्व लगभग ३२ पृष्ठ इसके छपे भी, किन्तु आगे कार्य नहीं चल सका। तब 'मठ' के परम भक्त **श्री अशोक कुमार जी श्रीवास्तव** 'चण्डी-धाम' से इस 'पद्धति' को तुरन्त प्रकाशित करने के विचार से ले गए, किन्तु वे सफल नहीं हो सके और यह पुनः 'चण्डी-धाम' में वापस आ गई। इस समय तक 'श्रीआदि-काली-मठ, काशी' भी अपनी 'गोपनीय' दशा से मुक्त हो चुका था और श्रीवास्तव जी ने 'मठ' की ओर से इसके तुरन्त प्रकाशन का दायित्व इस 'अल्पज्ञ/अकिञ्चन' सम्पादक को सौंपा। 'कम्प्यूटर' की आधुनिक मुद्रण-कला का सहारा लिया गया, किन्तु पग-पग पर बाधाएँ आने लगीं। यह 'मठ' की 'सिद्ध गुरु-परम्परा' का ही प्रताप है कि इसी 'परम्परा' के 'दिव्य साधक' श्री जगदीश्वरानन्द जी तन-मन-धन से इसके प्रकाशन-कार्य में लगे रहे और इस सम्पादक को निरन्तर प्रेरित-प्रोत्साहित करते रहे, जिसके फल-स्वरूप 'महा-काली-पूजा' के महान् पर्व 'दीपावली' के शुभ काल के पूर्व इस 'पद्धति' का प्रकाशन-कार्य पूर्ण हो गया।

जहाँ तक प्रस्तुत 'पद्धति' की विशेषताओं की बात है, उनका आकलन विद्वान् साधक ही कर सकते हैं। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि जिस हस्त-लिखित पाण्डु-लिपि के आधार पर यह 'पद्धति' प्रस्तुत की गई है, वह अति जीर्ण-शीर्ण एवं दीमकों द्वारा खाई हुई थी। प्रातः-स्मरणीय 'कौल-कल्पतरु' शुक्ल जी और श्रीचन्द्रनाथ जी जैसे 'ऋषि-कल्प' मनीषी- धुन के पक्के 'साधक' ही यह अभूतपूर्व कार्य कर सकते थे।

एक विशेष महत्त्व की बात का यहाँ उद्घाटन करना उचित ही होगा। 'काशी' में माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करते समय 'कौल-कल्पतरु' शुक्ल जी 'दशाश्वमेध घाट' पर स्थित 'कान्यकुब्ज संस्कृत पाठशाला' में निवास करते थे और नित्य 'श्रीकाली-मठ' के 'निशार्चन' में भाग लिया करते थे। उनकी मर्मज्ञता से प्रभावित होकर 'मठ' के तत्कालीन 'महन्त जी' ने उनसे अपना 'उत्तराधिकारी' बनने का प्रस्ताव किया था, किन्तु जब 'शुक्ल जी' ने बताया कि वे विवाहित हैं और उनके पुत्र-पुत्रियाँ हैं, तब महन्त जी ने सखेद अपना प्रस्ताव वापस ले लिया। उन्हीं दिनों स्वामी अक्षोभ्यानन्द जी सरस्वती भी ब्रह्मचारी-रूप में 'काली-मठ' में शिक्षा प्राप्त कर रहे थे। उनसे भी 'महन्त जी' ने उक्त प्रस्ताव किया था, किन्तु उन्होंने भी स्वीकार नहीं किया। इस तथ्य का महत्त्व यह है कि 'श्रीआदि-काली-मठ' के 'प्रसाद-रूप' में प्रकाशित होनेवाली इस 'पद्धति' के प्रस्तुत करने का दायित्व शुक्ल ज़ी को यों ही वहन नहीं करना पड़ा। 'श्रीआदि-काली-मठ' की 'दिव्य परम्परा' से वे जुड़े हुए थे और इसी प्रकार श्री चन्द्रनाथ जी तो स्वामी अक्षोभ्यानन्द जी सरस्वती के प्रिय शिष्य ही थे। स्वामी जी कालान्तर में 'मठ' के 'अन्तिम महन्त' बने और श्रीचन्द्रनाथ जी को 'मठ' के 'न्यास' का सदस्य बनना पड़ा।

उक्त विवरण से प्रकट है कि प्रस्तुत 'पद्धति' के तैयार करने और प्रकाशित करने में जिन-जिन लोगों का योग-दान रहा है, वे सभी किसी-

न-किसी रूप में 'श्रीआदि काली-मठ, काशी' की दिव्य 'सिद्ध परम्परा' से सम्बद्ध रहे हैं। जहाँ तक इन पंक्तियों के अकिञ्चन लेखक का प्रश्न है, वह 'कौल-कल्पतरु' परम पूज्य शुक्ल जी के एक-मात्र पुत्र होने के नाते अनायास ही प्रातः-स्मरणीय परम पूज्य श्री स्वामी अक्षोभ्यानन्द जी का प्रिय पात्र बन गया था और श्री चन्द्रनाथ जी का तो कहना ही क्या! उन्होंने एक कर्तव्य-परायण बड़े भाई के समान सदा इस लेखक के उत्कर्ष हेतु अहर्निश प्रयास किया। आज वह जो कुछ है, उसका बहुत कुछ श्रेय उन्हीं को है, इसमें सन्देह नहीं।

हाँ, आज उक्त विभूतियाँ इस संसार में विद्यमान नहीं हैं, किन्तु उनकी दिव्य आत्माएँ निरन्तर पथ-प्रदर्शन करती आ रही हैं। यह उन्हीं की कृपा है कि इस 'अल्पज्ञ' सम्पादक को 'प्रयागराज' के 'सरस्वती-घाट' पर विशेष अनुभूति की उपलब्धि हुई और 'त्रिवेणी-सङ्गम' में गुप्त 'सरस्वती-देवी' की कृपा से 'घाट' पर ही अवस्थित 'श्रीज्ञानेश्वर शिव' की अनुकम्पा का अनुभव हुआ। इसी अनुकम्पा के सहारे वह 'श्रीआदि-काली-मठ, काशी' के 'प्रसाद-रूप' में इस 'पद्धति' के प्रकाशन-कार्य में आवश्यक योग-दान कर सका।

दीपावली, 'खर' सं० २०५५ — रमादत्त शुक्ल
सोमवार, १९ अक्टूबर, १९९८ 'चण्डी-धाम',
प्रयागराज ( उ०प्र० )

# दो शब्द

(प्रथम संस्करण में प्रकाशित)

'आर्यावर्त्त-भारत' के जगद्-गुरु होने में एकमेव रहस्य 'ब्रह्म-स्वरूपिणी विद्या' का सर्वतोभावेन यजन-पूजन एवं नमन रहा है। देश की भौगोलिक सीमा को व्यक्त करते हुए उत्तर में काश्मीर में सिद्ध-विद्या 'राज-राजेश्वरी श्रीविद्या' की, दक्षिण में 'कन्या-कुमारी' ब्रह्म-चारिणी-स्वरूपा क़ी, पूर्व में 'कामेश्वरी' सर्व-विद्या-स्वरूपिणी की एवं पश्चिम बिलोचिस्तान (कनिष्क एवं अशोक के समय तक यह प्रदेश 'आर्यावर्त्त' के ही भौगोलिक परिक्षेत्र में था) में 'हिङ्गुला देवी' की और इनके अतिरिक्त देश के हर प्रान्त, हर नगर एवं ग्राम में स्थित 'देवी' के अनेकानेक रूपों की पूजा सनातन काल से ही होती आ रही है।

वैदिक-पौराणिक काल से ही 'काशी' का महत्त्व 'भारतवर्ष' के इतिहास में अक्षुण्ण रहा है।

'काशी' का 'काली-मठ' भारत का 'शक्ति-केन्द्र' है। सदियों से यह 'मठ' भारत की आध्यात्मिक साधना का निर्देशक, उत्प्रेरक तथा सञ्चालक रहा है। यद्यपि इस 'मठ' में 'गौड़-क्रम' की पूजा-पद्धति प्रचलित है, लेकिन सम्पूर्ण 'शाक्त-जगत्' को यहाँ से प्रचारित 'तान्त्रिक विधान' मान्य रहा है। 'काली-मठ' के गुरुओं द्वारा निर्धारित अर्चन-विधान ही 'पूर्णागिरि पीठ, जालन्धर पीठ, उड्डीयान पीठ' और 'कामाख्या पीठ' में प्रचलित है।

खेद है कि उक्त अति प्राचीन 'काली-मठ' का क्रम-बद्ध इतिहास उपलब्ध नहीं है। यहाँ का इतिहास जानने के लिए जन-साधारण में प्रचलित कुछ कथ्यों तथा तथ्यों को विश्वसनीय मानना ही श्रेयस्कर है।

प्राचीन काल में 'काशी' नगर 'राज-घाट' के पास केन्द्रित था। 'बाबा विश्वनाथ' का अविमुक्त क्षेत्र 'आनन्द-वन' कहलाता था, जहाँ छोटे नाले और क्षीण-काय नदियाँ बहकर गङ्गा में मिलती थीं। सम्पूर्ण 'आनन्द-वन' श्मशानी और वन्य परिवेश में परिलिप्त था। 'गोदावरी' नदी के तट पर भयानक वन में एक 'तान्त्रिक आश्रम' था, जो बाद में 'काली-मठ' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। सामान्य जनों की पहुँच से दूर वह सिद्धों और साधकों का 'साधना-केन्द्र' था। जाति और ऊँच-नीच के विचार से परे वह 'आश्रम' कुलाचार-परम्परा का प्रधान स्थल था, लेकिन जब 'आदि-शङ्कराचार्य' की कीर्ति-पताका सम्पूर्ण भारत में लहरा उठी, तब यह 'आश्रम' भी इस प्रभाव से अछूता न रहा और यहाँ के 'कौलावधूत' महात्माओं ने भी 'संन्यासियों का दण्ड' धारण कर लिया। कहा जाता है कि 'आश्रम' की प्रसिद्धि से प्रभावित होकर 'आदि-शङ्कराचार्य' यहाँ पधारे थे और उन्होंने यहाँ के महात्माओं को 'दण्ड' और 'सरस्वती' नामक उपाधि से विभूषित किया था। तब से आज तक यह 'काली-मठ' कुलाचारी दण्डी संन्यासियों का 'मठ' बना हुआ है।

'काली-मठ' में सिद्ध महात्माओं की अटूट परम्परा बनी रही। यहाँ एक-से-एक उच्च कोटि के 'सिद्ध' होते रहे। एक बार किसी दक्षिण भारतीय विद्वान् ने 'ज्ञान-वापी' में शास्त्रार्थ द्वारा 'काशी' के पण्डितों को परास्त कर दिया। तब 'काली-मठ' के 'स्वामी वाणी-विलास' जी से कुछ लोगों ने उस पण्डित से शास्त्रार्थ करने के लिए आग्रह किया। 'स्वामी वाणी-विलास' जी ने कहा कि '**बाँस पर एक मछली टाँग दो, वही शास्त्रार्थ करेगी।**' वैसा ही हुआ और मत्स्य से परास्त उस दक्षिणी पण्डित ने 'स्वामी वाणी-विलास' जी के चरणों में नत-मस्तक हो 'कुलाचार' स्वीकार कर लिया।

इसी तरह एक अद्भुत घटना तब हुई, जब 'महा - रानी अहल्याबाई' द्वारा नव-निर्मित 'विश्वनाथ मन्दिर' में दो लिङ्गों की स्थापना हुई। मन्दिर-निर्माण के बाद एक पण्डित को जबलपुर भेजा

गया। नर्मदा जी में डुबकी लगाने पर उसके हाथों में दो लिङ्ग आ गए। किसे फेंके, किसे ले जाए– इस असमञ्जस में दोनों लिङ्गों को लेकर वह 'काशी' पहुँचा। यहाँ भी पण्डित-गण कुछ निर्णय न कर पाए और अन्ते में 'दोनों लिङ्गों' की स्थापना कर दी गई। 'काली-मठ' के 'स्वामी हरिहरानन्द जी' वहाँ दर्शन करने गए। उन्होंने शिव जी की स्तुति करते हुए अपने 'दण्ड' से 'शिव-लिङ्गों' को स्पर्श कराया और वे परस्पर सटकर एकाकार हो गए! आज भी शृङ्गार-रहित 'बाबा विश्वनाथ' के लिङ्ग को देखने से वह जोड़ दिखाई पड़ता है।

'काली मठ' के स्वामी गणेशानन्द जी माया से शेर पर चढ़कर गङ्गा-स्नान करने जाया करते थे। ढाका से एक बङ्गाली शिल्पी ने दो मूर्तियों– एक दुर्गा, दूसरी काली के सहित 'काशी' आकर यह घोषित किया कि जो सवा लाख स्वर्ण-मुद्राएँ देगा या इन मूर्तियों को हँसा देगा, उसे वह मूर्ति दे देगा। एक दिन 'स्वामी गणेशानन्द जी' उन मूर्तियों को देखने गए और 'काली-मूर्ति' को हँसा-कर अपने शेर पर बिठा-कर 'काली-मठ' ले आए। बहुत दिनों तक वे 'काली जी' बालिका-रूप में मठ में विराजमान रहीं।

इसी प्रकार 'काली-मठ' के स्वामी लोगों के सम्बन्ध में नाना प्रकार की कथाएँ जन-साधारण में प्रचलित हैं, लेकिन 'काली-मठ' को सर्वाधिक प्रभावित करनेवाली घटना तब हुई, जब मुगल सम्राट औरङ्गजेब ने विश्वनाथ जी के मन्दिर को ध्वस्त कर दिया। मन्दिर तोड़ने के बाद मुगल सैनिक हैजे से मरने लगे। मन्त्रियों की सलाह पर बादशाह 'काली-मठ' में आया। 'मठ' के स्वामी जी से उसने प्रार्थना की। स्वामी जी ने उससे कहा कि "सेना-सहित शीघ्र काशी-मठ से पचास कोस दूर चले जाओ, वरना तुम भी नहीं बचोगे।" वह जब सेना को आदेश देने लौटा, तो देखा कि मृत सैनिक भी जीवित हो गए हैं! प्रयाग पहुँचकर बादशाह फिर अकेले 'काली-मठ' लौटा। स्वामी जी से वह इतना प्रभावित हुआ कि उसने 'काली-मठ' के आस-पास का जङ्गल साफ

कराकर १० बीघे में बाग लगवाकर, 'मठ' के लिए पञ्च-मञ्जिला भवन और पक्का तालाब बनवा दिया। वही तालाब 'लक्ष्मी-कुण्ड' के नाम से प्रसिद्ध है। 'मठ' की सेवा में उसने सत्रह सौ बीघे भूमि भी समर्पित की। स्वामी जी की आज्ञा शिरोधार्य कर फिर उसने किसी भी मन्दिर को नहीं तोड़ा और तब से मन्दिरों को मुसलमान शासकों द्वारा ध्वस्त करने का क्रम बन्द हो गया।

'मठ' के 'पक्के भव्य भवन' की मरम्मत और सेवा के लिए 'मठ' के जीर्णोद्धार के क्रम में जब कुछ सफाई आदि का कार्य चलने लगा, तो मुझे प्राचीन दिव्य गुरुओं की 'चरण-पादुकाएँ' प्राप्त हुईं। उनमें से कुछ बहुत ही जीर्ण हो चुकी थीं। मैंने उनका संग्रह कर उन्हें प्रक्षालित करवाया एवं उन्हें लकड़ी की शीशेवाली पेटिकाओं में रखवाया। कुल ६४ पादुकाएँ प्राप्त हुई थीं, जिन्हें मैंने फाल्गुन शुक्ला पञ्चमी संवत् २०४९ को 'काली-मठ' में पुनः प्रति-स्थापित करवाया।

यदि एक गुरु का कार्य-काल २५ वर्ष भी माना जाए, तो १५-१६ सौ वर्षों का जीवन्त इतिहास उक्त 'पादुकाओं' द्वारा परिलक्षित होता है! यह भी सिद्ध होता है कि 'कौल-सम्प्रदाय' की कितनी अद्भुत एवं सुदृढ़ 'गुरु-परम्परा' काशी के 'काली-मठ' में निहित है। पूर्व के गुरुओं के कुछ ज्ञात चरित, संवत् १९९९ वि० (सन् १९४२ ई०) में प्रकाशित 'चण्डी' पत्रिका के अङ्कों में 'कौल-कल्पतरु' पं० देवीदत्त शुक्ल जी महाराज द्वारा प्रकाशित किए गए थे। जिज्ञासु पाठक चण्डी पत्रिका के पुराने अङ्कों से उस सन्दर्भ में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

'सत्रह सौ बीघे जमीन' मिल जाने से पूरे भारत में 'काली-मठ' का गौरव और प्रभाव बढ़ गया। दूर-दूर से लोग यहाँ शिक्षा-दीक्षा के लिए आने लगे। उसके लिए 'मठ' में 'संस्कृत-विद्यालय' और विद्यार्थियों को मुफ्त आवास तथा भोजन के लिए 'छात्रावास' का प्रबन्ध हो गया। 'काली-मठ' का 'पुस्तकालय' अति उच्च कोटि की दुर्लभ एवं गोप्याति-गोप्य 'पाण्डु-लिपियों' का अद्भुत 'संग्रहालय' था। यहाँ किसी भी

विद्वान् की किसी शङ्का अथवा जिज्ञासा का समुचित समाधान निर्णयात्मक रूप से होता था।

यह व्यवस्था 'स्वामी मधुसूदनानन्द जी' तक चलती रही। इनके ब्रह्म-लीन होने पर 'स्वामी वासुदेवानन्द जी' महन्त की गद्दी पर आसीन हुए, लेकिन वे असमय ही अचानक दिवङ्गत हो गए और 'मठ' पर अनधिकारी तत्त्वों का अधिकार हो गया। उस समय सन् बयालिस का आन्दोलन चल रहा था। 'मठ' के असली उत्तराधिकारी 'स्वामी अक्षोभ्यानन्द सरस्वती' विन्ध्याचल में थे। 'मठ' की उक्त दुःखद घटना को सुनकर वे 'काशी' आए, लेकिन उन्हें 'मठ' में घुसने नहीं दिया गया। इसके बाद फौजदारी और दीवानी मुकदमों का सिलसिला शुरू हुआ, जो हाई कोर्ट और सुप्रीम कोर्ट तक पहुँचा। अन्त में 'वाराणसी' के जिला जज ने धारा ९२ की सुनवाई में निर्णय करते हुए १९६८ में स्वामी अक्षोभ्यानन्द सरस्वती को 'मठ' का महन्त माना। स्वामी जी को जनवरी १९६८ में 'काली-मठ' एक भयावह खण्डहर के रूप में प्राप्त हुआ। एक लम्बे सङ्घर्ष में वे थक चुके थे। उनकी आयु भी सौ के करीब हो चुकी थी। इसलिए उन्होंने समाधि ले ली और जिला जज ने 'मठ' के सञ्चालन के लिए 'स्वामी जी के पाँच शिष्यों का एक ट्रस्ट' बना दिया।

स्वामी अक्षोभ्यानन्दनाथ महाराज जी उस समय भैरव-कुण्ड (विन्ध्याचल) में रहा करते थे। देश के सुप्रसिद्ध एवं सम्भवतः अपने समय के वे योग्य-तम एवं सर्व-समर्थ सिद्ध थे। भारत भर में उनके असंख्य शिष्य थे। 'वाराणसेय संस्कृत विश्व-विद्यालय' में आयोजित 'तन्त्र-सम्मेलन' में देश भर के सम्मानित तन्त्र-विद्वान् एकत्र हुए थे। उन्होंने स्वामी अक्षोभ्यानन्दनाथ को सर्व-सम्मति से अध्यक्ष मनोनीत किया था।

इन्हीं 'स्वामी अक्षोभ्यानन्दनाथ महाराज' के शिष्य श्री चन्द्रनाथ योगेश्वर के पास स्वामी जी की कृपा-स्वरूप एक हस्त-लिखित

पाण्डुलिपि 'श्री श्यामा-पूजन-पद्धति' थी। जो प्रस्तुत पुस्तक का आधार है। योगेश्वर जी का जन्म-स्थान प्रयागराज से पश्चिम अमवाँ, खागा, जिला फतेहपुर है। यह स्थान कनवार स्टेशन से लगभग ५ किमी० दूर है। इनके पिता का नाम श्री बद्रीनाथ एवं माता का नाम शीतल देवी था। चन्द्रनाथ जी जब ढाई वर्ष के थे, तभी इनके माता-पिता का स्वर्गवास हो गया और इनका पालन-पोषण प्रयागराज में 'भरद्वाज-आश्रम' के पास इनके मौसा व मौसी के यहाँ हुआ। १२-१३ वर्ष की अवस्था में इनका विवाह वहीं श्री चौहरजानाथ की पुत्री श्रीमती सत्तन देवी के साथ हुआ था। वहीं उन्होंने मकान नं० ३९६ खरीदा और वहीं स्थायी रूप से निवास करने लगे। माता सत्तन देवी का ननिहाल विन्ध्याचल में था और उनके पिता तीर्थ-पुरोहित थे। 'विन्ध्याचल' आते-जाते चन्द्रनाथ जी का सम्बन्ध 'देवी के साधकों' से बढ़ा और वे 'भैरव-कुण्ड' के स्वामी अक्षोभ्यानन्दनाथ के सम्पर्क में आए तथा कालान्तर में उनके शिष्य हो गए।

स्वामी अक्षोभ्यानन्द जी महाराज जब भी प्रयाग आते थे, तो चन्द्रनाथ जी के यहाँ ही रुकते थे। चन्द्रनाथ जी एक बहुत ही कुशल कम्पोजीटर भी थे। प्रयाग में जब 'कौल-कल्पतरु' पं० देवीदत्त शुक्ल जी ने देश की एवं हिन्दू-समाज की दुरवस्था को सुधारने के निमित्त 'चण्डी पत्रिका' के प्रकाशन का श्रीगणेश किया, तो चन्द्रनाथ जी ने बड़ी तत्परता से उसके अङ्कों की कम्पोजिङ्ग एवं प्रकाशन में सहयोग किया। कालान्तर में शुक्ल जी प्रज्ञा-चक्षु हो गए, किन्तु 'तन्त्र' की गूढ़ एवं गोपनीय पद्धतियों को 'चन्द्रनाथ जी' एवं अपने यशस्वी पुत्र 'कुल-भूषण' श्रीरमादत्त शुक्ल जी को समझाते रहे एवं लिखने/छपवाने का आदेश देते रहे। शुक्ल जी की ही प्रेरणा से चन्द्रनाथ जी ने स्वामी अक्षोभ्यानन्दनाथ से विधि-वत् 'दीक्षा' प्राप्त की और उनसे सम्पूर्ण विद्या एवं पूजन-विधि आदि का ज्ञान प्राप्त कर लिया। श्री शुक्ल जी के सान्निध्य में उस ज्ञान का परिमार्जन एवं लेखन करने में भी सक्षम हुए।

उन्हीं की हस्त-लिखित पाण्डु-लिपि का प्रकाशन अब पुस्तक-रूप में 'कुल-भूषण' श्री रमादत्त शुक्ल के प्रयासों एवं लगन-पूर्ण कार्यों से सम्पन्न हो सका है।

परम-गुरु स्वामी श्री अक्षोभ्यानन्दनाथ जी की 'साधना', जहाँ तक मुझे समझ में आई, 'नाथ-सम्प्रदाय, अघोर-पन्थ' और 'कौल-मत'– सभी में बहुत ही गहराई तक रही और उनमें इन तीनों का ही अद्भुत समन्वय था। समय-समय पर इन सभी के गूढ़-से-गूढ़ रहस्य के विषय में अपना मत वे इतनी स्पष्टता के साथ व्यक्त करते थे कि सुनकर मन आश्चर्य-चकित हो जाता। स्वामी जी द्वारा लिखित 'श्यामा-पूजन-पद्धति', 'श्रीतारा नित्यार्चन' एवं कई अन्य ग्रन्थ 'कौल-मार्ग' की अमूल्य धरोहर हैं। अब 'कुल-भूषण' श्री रमादत्त जी के सत्प्रयासों से इस 'पद्धति' का प्रकाशन हो रहा है। इससे कृत-कृत्य हुआ मैं इसे 'आद्या माँ दक्षिण-कालिका' की अनूठी अनुकम्पा ही मानता हूँ।

– जगदीश्वरानन्दनाथ

# तन्त्र की अधिष्ठात्री देवी काली एवं कौल-साधना

* श्रीजगदीश्वरानन्दनाथ, आजमगढ़

'विद्ययाऽमृतमश्नुते' एवं 'सा विद्या या विमुक्तये' अर्थात् विद्या से अमृत की प्राप्ति एवं 'विद्या' वह, जो विमुक्त करे, ऐसे श्रुति-वाक्य प्रचलित हैं। विमुक्त किससे करे? बन्धन से—'पाशों' से! जो 'जीव' अष्ट-पाशों में आबद्ध है, वह 'विद्या' की उपासना से विमुक्त हो जाता है। ऐसी 'विद्या' की उपासना सभी प्राणियों के लिए श्रेयस्कर है।

'विद्या' क्या है? 'तन्त्रों' में 'दश विद्याओं' की घोषणा की गई है। यथा—१. काली, २. तारा, ३. षोडशी, ४. भुवनेश्वरी, ५. भैरवी, ६. छिन्नमस्ता, ७. धूमावती, ८. बगलामुखी, ९. मातङ्गी, १०. कमलात्मिका।

काली, तारा, महा-विद्या, षोडशी, भुवनेश्वरी,<br>
भैरवी, छिन्नमस्ता च, विद्या धूमावती तथा।<br>
मातङ्गी सिद्ध-विद्या च, कमला, बगला-मुखी,<br>
एषा दश महा-विद्या, सर्व-तन्त्रेषु गोपिताः।।

इन 'दश विद्याओं' में प्रथम तीन अर्थात् 'काली'-'तारा' और 'षोडशी' को 'महा-विद्या', 'भुवनेश्वरी, भैरवी, छिन्नमस्ता' और 'धूमावती' को 'विद्या' के नाम से जाना जाता है तथा शेष तीन 'मातङ्गी, बगला-मुखी, कमला' को 'सिद्ध-विद्या' के नाम से। 'काली'–'प्रथम' व 'आद्या' कही गई हैं। इनकी उपासना से साधक को 'भोग' एवं 'मोक्ष'—दोनों ही, निश्चय ही, प्राप्त होते हैं। ऐसा 'तन्त्रों' का मत है एवं 'साधकों' का प्रकट विश्वास है।

'क' ब्रह्म की संज्ञा है। सृष्टि में चैतन्य के उद्भव का प्रमाण है। बच्चा पैदा होते ही ''केहाँ-केहाँ'' की आवाज में रोता है। इसके अभाव में उसमें जीवन का लक्षण नहीं माना जा सकता। सारे पक्षी उषा-वेला में 'कल-रव' द्वारा नव प्रभात की घोषणा करते

हैं। 'क' सविता देवता की द्वादश कलाओं में प्रथम हैं (यथा— 'कं भं तपिन्यै नमः'.. आदि। 'अ' चन्द्रमा की षोडश कलाओं में प्रथम है। यथा—'अं अमृतायै नमः'..... आदि, 'लं' पृथ्वी-तत्त्व का बोधक है अर्थात् सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को जो चैतन्य-रूपा शक्ति व्याप्त एवं आप्लावित किए है, वह 'काली' है। प्रश्न है कि ऐसी सर्व-व्यापिनी, ब्रह्म-चैतन्य-स्वरूपिणी 'आद्या' शक्ति के स्वरूप से जन-साधारण क्यों भय एवं कौतूहल का अनुभव करता है? उसे तामसी, शव पर आरूढ़ा,. मुण्ड की माला धारण किए, भूत-प्रेत आदि से संयुक्ता, श्मशान-वासिनी आदि मानकर सहज ही प्रीति नहीं कर पाता। ऐसा प्रतीत होता है कि स्वरूप के प्रतीकात्मक ज्ञान-मय लक्षणों को न समझ पाने के कारण ही ऐसा है। तन्त्रों में 'काली' का ध्यान इस प्रकार बताया है—

शवारूढां महा-भीमां, घोर-दंष्ट्रां हसन्मुखीम् ,
चतुर्भुजां खड्ग-मुण्ड-वराभय-करां शिवाम् ।
मुण्ड-माला-धरां देवीं, ललज्जिह्वां दिगम्बराम् ,
एवं सञ्चिन्तयेत् काली, श्मशानालय-वासिनीम् ।।

अर्थात् भगवती काली शव पर आरूढ़ा हैं। अत्यन्त घोर दन्त-पंक्तियाँ उनके काले रङ्ग के वेष में, हँसते हुए मुख में शोभायमान हैं। उनके चार भुजाएँ हैं। उन शिवा की बाँईं ओर की भुजाओं में 'खड्ग' और 'मुण्ड' हैं तथा दाईं ओर की भुजाओं में 'वर' एवं 'अभय' मुद्राएँ शोभित हो रही हैं। गले में 'मुण्डों की माला' धारण किए हुई हैं! लपलपाती हुई जिह्वा है। दिगम्बरा अर्थात् पूर्ण नग्न वेष है। इस प्रकार श्मशान में निवास करनेवाली 'काली' का चिन्तन करना चाहिए।

विचार करें, कितने भयावह वेष का वर्णन उन ममता-मयी, लालित्य-स्वरूपिणी, ऋद्धि-सिद्धि एवं भोग-मोक्ष-दात्री माँ का 'तन्त्र' में दर्शाया है! 'काली' के स्वरूप के विषय में जो कुछ मेरी समझ में 'गुरु-कृपा' से आया है, उसका विवरण निम्न प्रकार है—

सभी धर्मों में 'शव' के प्रति आदर का भाव रखने की आज्ञा

है। किसी भी **'शव-यात्रा'** को देख आदर से बगल हट कर खड़े होते जन-साधारण को प्रायः देखा जा सकता हैं। प्रश्न है कि **'मृतक'** के कुल-शील के विषय में कोई जानकारी न होने पर भी ऐसा आदर स्व-चालित-सा मनुष्य क्यों प्रदर्शित करता है? वस्तुतः उस **'शव'** में अवस्थित **'चैतन्य'** को ही, जो उस **'शव'** पर आरूढ़ है, संस्कार के वशीभूत स्व-चालित-सा व्यक्ति प्रणाम कर आदर प्रदर्शित करता है। विचार करें, **'शव'** पर आरूढ़ उन चैतन्य-स्वरूपिणी महा-माया का स्वरूप भी तो **'तन्त्रों'** में ऐसा ही दर्शाया गया है। प्रत्येक व्यक्ति, चाहे किसी भी धर्म-सम्प्रदाय का हो, स्व-चालित-सा उन्हीं **'आद्या'** को प्रणाम करता है।

उनके चार हाथों में क्रमशः **'मुण्ड'** एवं **'खड्ग'**, **'अभय'** एवं **'वर'** मुद्राएँ भी विशेष तात्पर्य-युक्त हैं। **'मुण्ड'** एवं **'खड्ग'** का तात्पर्य यह नहीं है कि माँ ने किसी पुत्र का सिर काट कर धारण कर लिया है। वस्तुतः **'मुण्ड'** एवं **'खड्ग'**—मनुष्य को उसके मैं-**'अहं'** को उसकी **चेतना** से—वास्तविक सत्ता से अलग करते हैं। यह उसके **'अहं'** के उन्मूलन को दर्शाता है।

माँ की **'अभय'** मुद्रा से अत्याचारियों एवं दुष्टों को अभय नहीं वरन् साधक को अपने कर्म एवं कर्तव्य को इतने विचार-पूर्ण रूप से करने का उपदेश है कि अपने से भय न हो। विचार करें—मनुष्य अन्य से नहीं, वरन् **'अपने'** से ही भय खाता है—लोभ-वश, ईर्ष्या-वश किए हुए कर्मों के कुफल से डरता है। अपने कर्म विवेक-पूर्ण एवं अनासक्त रूप से हों, तो वह जीव भगवती का **'अभय'** प्राप्त करेगा।

माँ की **'वर-मुद्रा'** तो सबको प्रिय है, किन्तु अपने **'अहङ्कार'** का नाश कर अनासक्त विवेक-पूर्ण कार्य करनेवाला ही **'वर'** प्राप्त करता है।

विज्ञान के विद्यार्थी जानते होंगे कि सौर-मण्डल में **'सूर्य'** अपने अक्ष पर एक तरफ (बाँईं ओर) झुका हुआ (२२१/२° लगभग) सदैव चक्कर किया करता है। **पृथ्वी**, **बुध**, **मङ्गल** आदि ग्रह

अण्डाकार परिधि (आरबिट) में **'सूर्य'** का एवं स्वयं अपने अक्ष पर भी (बाँईं ओर झुक कर सदैव चक्कर किया करते हैं। **सूर्य, पृथ्वी** और **चन्द्रमा** की इन गतियों के कारण ही **दिन-रात, जाड़ा-गर्मी** आदि ऋतुएँ होती हैं, जिससे **दिन, पक्ष, मास, वर्ष** आदि **'काल'** के गणकों की उत्पत्ति होती है। यदि यह **'गति'** न रहे, तो न सृष्टि रहेगी और न **'काल'** ही रहेगा। सृष्टि के लिए प्रकृति की उक्त **'गति'** ही नियामक एवं कारक है। ध्यान दें—भगवती का स्वरूप भी बाँईं ओर झुका हुआ एवं पैर चलने की मुद्रा में प्रदर्शित है। यही प्रकृति का स्वरूप है। अक्ष पर झुकी हुईं एवं चलन की मुद्रा से ही **'काल', 'सृष्टि'** और **'जीव'** की उत्पत्ति भी होती है एवं रक्षण भी। **'मूल-प्रकृति'** का यह स्वरूप ही सृष्टि की उत्पत्ति—**'ब्रह्मा'**-रूप में, पालन अथवा रक्षण—**'विष्णु'** के रूप में एवं विनाश—**'रुद्र'** के रूप में **'त्रिदेवों'** को उत्पन्न करता है। गुण एवं कर्म के विभाजन से **सृष्टि, काल, ऋतु, सुख-दुःख** को उत्पन्न कर यह चराचर प्रपञ्च रचता है।

विचारणीय है कि इस प्रपञ्च से मुक्ति—गुण एवं कर्म से निवृत्ति उसी **'मूल-प्रकृति'–'चैतन्य-स्वरूपिणी'** की कृपा के बिना कैसे सम्भव है? उसका सम्पूर्ण नग्न रूप—**'दिगम्बरा'**-वेश (दिक्+अम्बर अर्थात् दिशाएँ ही जिसके अम्बर—वस्त्र हों अर्थात् दिशाओं के अन्त तक जिसका विस्तार हो) उसकी सर्व-व्यापकता का द्योतक है। कटे हाथों की **'करधनी'** लज्जा-निवारण के लिए सत्कर्म करने पर बल देती है। **'श्मशान-वासिनी'**-रूप सृष्टि के सनातन एवं नश्वर स्वरूप का उद्बोधक है। गले में **'मुण्ड-माला'**—कटे सिरों की माला—वस्तुतः **'अक्ष'** (**'अ'** से **'क्ष'** पर्यन्त) ५० अक्षर (जिसका क्षरण न हो—अविनाशी) की **'वर्ण-माला'** है, जिसे भगवती ने सृष्टि के विनाश करते समय **'बीज'**-रूप में सँजो कर गले में धारण कर लिया। ज्ञातव्य है कि यही **'वर्ण'** (अक्षर) वेदों के, सृष्टि के—ब्रह्मा के उद्भव के कारण हैं। **'वर्णों'** से ही वेदों की, वेद से ब्रह्मा की, कालान्तर में सृष्टि की उत्पत्ति होती है। भगवती के ध्यान में—

'**अक्ष-स्त्रक्-परशु-गदेषु......**' आदि में इस '**अक्ष-माला**' का वर्णन है। मस्तक पर '**द्वितीया का चन्द्र**', चन्द्रमा की षोडश कलाओं में बीज-स्वरूप हैं, जिसकी उत्तरोत्तर वृद्धि पर '**पूर्णमासी**' और '**ह्रास**' पर '**अमावास्या**' होती है। ऐसे '**मूल-प्रकृति**' के स्वरूप को, जिसमें सम्पूर्ण सृष्टि की '**उत्पत्ति, स्थिति एवं संहार**' के नियामक एवं कारक समाहित हैं, '**काली**', '**आद्या**' एवं '**विद्या-राज्ञी**' के सम्बोधनों से जाना जाता है।

जैसी धारणा '**काली**' के स्वरूप को लेकर जन-साधारण में है, वैसी ही धारणा उनकी आराधना एवं पूजा-विधि को भी लेकर है। '**कांली**' के उपासक '**कौल**'-सम्प्रदाय के अन्तर्गत हैं। लोग '**कौल**' को '**पञ्च मकार**'– '**म**' से आरम्भ होनेवाले पाँच नाम— **१.मद्य, २. मांस, ३. मीन, ४. मुद्रा** एवं **५.मैथुन** ही जानते हैं, परन्तु '**कौल-धर्म**' कुछ विलक्षण ही धर्म है। '**कौल-धर्म**' क्या है? इसका स्पष्टीकरण '**कुलार्णव तन्त्र**' में निम्न-वत् है—

**अकुलं शिवमित्युक्तम्, कुलं शक्तिः प्रकीर्तिता।**
**कुलाकुलस्य संयोगात्, कौल-धर्मस्तु जायते।।**

अर्थात् '**अकुल**' (शिव—ब्रह्म-स्थान पर) और '**कुल**' (शक्ति—मूलाधार में सुषुप्तावस्था में) का संयोग कराने की कला को '**कौल-धर्म**' कहते हैं। ''**कुले भवः कौलः**''—प्रत्येक गृहस्थ की प्रवृत्ति के अनुसार देवता की उपासना ही '**कुल-धर्म**' हैं। '**रुद्र-यामल**' में '**चक्रार्चन**'-क्रिया में बताया है—

**शरीरं चिन्तयेदादौ, निजं श्रीचक्र-रूपकम् ।**
**नागाध्वाकार-निर्मुक्तं, ज्वलत्-कालाग्नि-सन्निभम् ।।**
**वैन्दवं ब्रह्म-रन्ध्रे स्यात्, मस्तके च त्रिकोणकम् ।**
**पुनस्त्रिकोणं भ्रू-मध्ये, कण्ठे चैव त्रिकोणकम् ।।**
**हृदये तु त्रिकोणं स्यात्, त्रिकोणं पञ्च मणिपूरे ।**
**स्वाधिष्ठाने च अष्टारं-पत्रं, मूलाधारे तु भूपुरम् ।।**
**एवं विधि-वत् ध्यात्वा वै, चक्रार्चनं यथा-विधि ।**
**यन्त्र-राजमिदं प्रोक्तं, श्रीचक्रं शिवयोर्वपुः ।।**

अर्थात् आदि में अपने शरीर में 'श्रीचक्र' की परिकल्पना करे। जलती हुई कालाग्नि के समान तेजोमयी 'नागिन' के रूप में 'कुण्डलिनी'-शक्ति का ध्यान करे। मस्तक पर ब्रह्म-रन्ध्र के सहस्रार के त्रिकोण, भृकुटि के आज्ञा-चक्र के त्रिकोण, कण्ठ में विशुद्ध चक्र के त्रिकोण, हृदय के अनाहत चक्र के त्रिकोण, नाभि में मणिपुर चक्र के त्रिकोण की कल्पना करे। स्वाधिष्ठान चक्र (लिङ्ग) में अष्ट-दल-कमल एवं मूलाधार में चतुष्कोण भूपुर की कल्पना करे। 'श्रीचक्रार्चन' में ऐसा ही शिव ने 'यन्त्र-राज' के विषय में कहा है।

सुधी पाठक-गण कृपया ध्यान दें कि उक्त 'अर्चन-क्रिया' कितनी भावना-प्रवर है। प्रातः समय से अहोरात्र तक सारा समय 'कौल' नित्य देवाराधना में ही बिताता है। दुनियादारी भी करता है एवं अपनी आराधना—अपने 'कुल-धर्म' को दुनिया में गुप्त भी रखता है! देखें, 'कुलार्णव तन्त्र' में, 'कौल' की उपासना-पद्धति निम्न प्रकार है—

हृत्-पद्मेनासनं दद्यात्, सहस्रार-च्युतामृतैः।
पाद्यं चरणयोर्दद्यात्, मनस्त्वर्घ्यं प्रकल्पयेत्।।
स्वर्ण-पात्रे तज्जलं च, दद्यादाचमनं मुखे।
मधुपर्कं मुखे दद्यात्, पुनराचमनीयकम्।।
तेनामृतेन सर्वाङ्गे, स्नानीयमपि कल्पयेत्।
आकाश-तत्त्वं वसनं, नानाऽऽभरणमेव च।।
चतुर्विंशति-तत्त्वेन, गन्धं दद्यात् विचक्षणः।
मानसोत्थं च कुसुमं, कुंकुमं रक्त-चन्दनम्।।
चित्तं प्रकल्पयेत् पुष्पं, धूपं प्राणान् नियोजयेत्।
तेजस्तत्त्वं च दीपमेव, नैवेद्यं हि सुधाम्बुधिम्।।
अनाहत-ध्वनिं घण्टां, वायु-तत्त्वं च चामरम्।
नृत्यमिन्द्रिय-कर्माणि, चाञ्चल्यं मनसस्तथा।।
पुष्पं नाना-विधिर्दद्यात्, आत्मनो भाव-सिद्धये।
अमायमनहङ्कारमरागं अमदं तथा।।

अमोहकं अदम्भं च, अद्वेषाक्षोभके तथा।
अमात्सर्यं लोभं चैव, दश-पुष्पं प्रकीर्त्तितम्।।
अहिंसा परमं पुष्पं, पुष्पं इन्द्रिय-निग्रहः।
दया-क्षमा-ज्ञान-पुष्पं, पञ्च-पुष्पं ततः परम्।।
इति पञ्च-दशैः पुष्पैर्भाव-रूपैः प्रपूजयेत्।
दधि-क्षीर-सागरं च, नाना-मूल-फलान्वितम्।
भक्ष्यं भोज्यं तथा चोष्यं, लेह्यं पेयं च चर्वणम्।
कुलोत्थं चैव पानीयं, ताम्बूलं च निवेदयेत्।।
काम-क्रोधौ विघ्न-रूपौ, बलिं दत्वा जपं चरेत्।
माला वर्ण-मयी प्रोक्ता, कुण्डली-सूत्र-यन्त्रिता।।
स - विन्दु - वर्णमुच्चार्य, मूल - मन्त्रं समुच्चरेत्।
अकारादि - क्षकारान्तमनुलोमविलोमतः।।
अष्ट - वर्गान्तिमैर्वर्णैः, सह - मूलमथाष्टकम्।
एवमष्टोत्तर - शतं, जप्त्वाऽनेन समर्पयेत्।।
सर्वान्तरात्म - निलये, स्वात्म - ज्योतिः-स्वरूपिणि !
गृहाणान्तर्जपं मातः! आद्ये मातः! नमोऽस्तु ते।।

हृदय के अष्ट-दल-कमल पर भगवती को 'आसन' दे। ब्रह्मा-रन्ध्र के सहस्त्र-दल-कमल से टपके हुए अमृत से माँ के चरणों में 'पाद्य' दे। मन का 'अर्घ्य' निवेदन करे। उसी अमृत को कल्पित स्वर्ण-पात्र में भरकर 'आचमन' कराए। उसी अमृत से 'मधुपर्क', पुनः 'आचमन' एवं स्नान कराए। 'आकाश-तत्त्व' से 'वस्त्र' एवं 'आभूषणादि' की परिकल्पना करे। २४ तत्त्वों (यथा : पञ्च-तन्मात्राएँ—शब्द, स्पर्श, रूप, रस एवं गन्ध, पञ्च-महा-भूत-पृथ्वी, वायु, तेज, जल, आकाश, पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाँ-आँख, कान, नासिका, जिह्वा एवं त्वचा, पाँच कर्मेन्द्रियाँ—हाथ, पैर, लिङ्ग, गुदा एवं मुख तथा अन्तःकरण-चतुष्टय—मन, बुद्धि, चित्त एवं अहङ्कार—ये मिलाकर कुल '२४ आत्म-तत्त्व' कहे जाते हैं) का 'गन्ध' दे। मन की मनोरम भावनाओं से 'पुष्प', 'धूप' और 'सुगन्ध' प्रदान करे। 'तेज-तत्त्व' का 'दीप' जलाकर आरती करे।

सुधाम्बुधि का 'नैवेद्य' अर्पण करे। अनाहत-ध्वनि का 'घण्टा-नाद', वायु-तत्त्व का 'चँवर', इन्द्रियों के विविध कार्यों एवं मन की चञ्चलता को 'नृत्य'-रूप में प्रस्तुत करे। १. अमाय, २. अनहङ्कार, ३. अराग, ४. अमद, ५. अमोह, ६. अदम्भ, ७. अद्वेष, ८. अक्षोभ, ९. अमात्सर्य, १०. अलोभ—इन दश गुणों को 'पुष्प-रूप' में अर्पित करे। १. अहिंसा (सुधी पाठक कृपया ध्यान दें), २. इन्द्रिय-दमन, ३. दया, ४. क्षमा और ५. ज्ञान—इन पाँच विशिष्ट 'पुष्पों' को पुनः अर्पित करे। दधि और क्षीर-सागरों को नाना फूलों एवं फलों से युक्त कर 'भक्ष्य', 'चोष्य', 'लेह्य' और 'पेय' की कल्पना करे। 'कुल-जल' का 'ताम्बूल' निवेदित करे। 'काम' और 'क्रोध' (ध्यान दें) की 'बलि' दे। पुनः 'जप' करे। 'कुण्डलिनी' (चित्रिणी नाड़ी में सूत्र-वत् पिरोई हुई) के 'अ'कार से 'क्ष'कार तक तथा 'क्ष'कार से 'अ'कार तक (५० वर्ण अनुलोम एवं ५० वर्ण विलोम) तथा 'अ', 'क', 'च', 'ट', 'त', 'प', 'य', 'श'—इन वर्गाष्टक के आदि ८ वर्णों (५०+५०+८=१०८ वर्णों) को बिन्दु-युक्त अर्थात् (अं, आं, इं, ईं, उं, ऊं, ऋं, ॠं, लृं, ॡं, एं, ऐं, ओं, औं, अं, अः। कं, खं, गं, घं, ङं । चं, छं, जं, झं, ञं। टं, ठं, डं, ढं, णं। तं, थं, दं, धं, नं। पं, फं, बं, भं, मं। यं, रं, लं, वं, शं, षं, सं, हं, ळं।। क्षं और फिर ळं हं, सं, .....विलोम..... अं' तक, फिर वर्गाष्टक के आदि आठ वर्ण 'अं, कं, चं, टं, तं, पं, यं, शं—इस १०८ 'वर्ण-माला' से 'मूल-मन्त्र' का जप कर प्रकाश-स्वरूपिणी सर्वात्म-ज्योति-रूपिणी भगवती आद्या को जप समर्पित करे।

'कौल-धर्म' की उक्त पूजन-पद्धति में न अभक्ष्याभक्ष्य की, न अगम्यागम्य की कोई बाधा है, न कोई भय। सब पुण्य-मयी उसी चैतन्य-स्वरूपिणी को—उसी को समर्पित। 'गीता' में भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा है—

ब्रह्मार्पणं ब्रह्म - हविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम् ।
ब्रह्मस्य तेन गन्तव्यं, ब्रह्म - कर्म समाहितम् ।।

**'अग्नि'** भी **'ब्रह्म-मयी'**, **'हविष्य'** भी **'ब्रह्म-मय'**, **'होता'** भी **ब्रह्म-मय,** स्वयं भी **'ब्रह्म-स्वरूप'**—उसी **'ब्रह्म'** को समर्पित एवं उसी में समाहित। यही है **'कौल-साधना'**-**'आद्याकाली'** की उपासना।

अब एक दृष्टि **'पञ्च-मकार'** पर। सृष्टि की उत्पत्ति **'पञ्च-तन्मात्राओं'** (यथा—रूप, रस, गन्ध, शब्द एवं स्पर्श) के प्रपञ्च से होती है। यही तन्मात्राएँ **'सतो-गुण'** से मिश्रित होकर **'पाँच ज्ञानेन्द्रियों'** (यथा—रूप से नेत्र, रस से रसना (जिह्वा), गन्ध से नासिका, शब्द से श्रोत्र (कर्ण) एवं स्पर्श से त्वचा) रजोगुण से मिश्रित हो पाँच कर्मेन्द्रियों (यथा—रूप से मुख, रस से लिङ्ग, गन्ध से गुदा, शब्द से पैर एवं स्पर्श से हाथ) एवं **'तमो-गुण'** से मिश्रित होकर **'पाँच महा-भूत'** (यथा—रूप से अग्नि (पावक), रस से जल, गन्ध से पृथ्वी, शब्द से आकाश एवं स्पर्श से वायु) की सृष्टि करते हैं। ये पाँच तन्मात्राएँ+पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ+पाँच कर्मेन्द्रियाँ+पाँच महा-भूत एवं चार (मन, बुद्धि, चित्त एवं अहङ्कार) =२४ तत्त्व **'आत्म-तत्त्व'** कहे जाते हैं, जिनके गुण-दोष एवं न्यूनाधिक संयोग से **'जीव'** माया के प्रपञ्च में जन्म-जन्मान्तर तक भटकता रहता है—जब तक कि उसे उक्त वर्णित **'विद्या'** का दान न मिले—जब तक उसे **'सद्-गुरु'** न मिले और वह उसे साधना में न लगाए।

**'कण्टकेनैव कण्टकम्'**—काँटे से ही शरीर में धँसा हुआ दुःखद काँटा निकाला जा सकता है, यदि योग्य एवं समर्थ उपचारक मिल जाय।

उक्त **'पञ्च-तन्मात्राओं'** के प्रपञ्च से **'पञ्च-मकार-साधना'** वीरोचित ढङ्ग से मुक्ति प्रदान कर सकती है। **'पञ्च-मकारों'** में **'मद्य'** तेज/'अग्नि-तत्त्व' का, **'मांस'** पृथ्वी-तत्त्व का, **'मीन'** जल-तत्त्व का, **'मुद्रा'** वायु-तत्त्व का एवं **'मैथुन'** आकाश-तत्त्व का उद्-बोधक अथवा शोधक है। कृपया विचार करें, यदि **'मद्य'** पीने से साधना होती—**मुक्ति** मिल सकती, तो सारे मद्यप, जो पशु-रूप

से मद्य-पान कर पशु-वत् व्यवहार करते हैं, वे मुक्त हो जाते। **'वीर-साधना'** में **'मद्य'**-तत्त्व के सेवन का अधिकारी वही है, जिसकी **कुण्डलिनी** अन्यान्य **'विधि-साधना'** से जागृत हो गई हो (यथा—**पात्रार्पण** में कहा जाता है—**'कुं कुण्डलिनी-मुखे इष्ट-देवता-स्वरूपे जिह्वाग्रे जुहोमि'** अर्थात् **कुण्डलिनी** की पूर्ण जागृदवस्था में इष्ट-देवता-स्वरूपा **कुण्डलिनी-शक्ति** के श्री-मुख में साधक को हवन करना चाहिए। **'साधना'** के चरमोत्कृष्ट स्तर पर पूर्ण-रूपेण जागृत **'कुण्डलिनी-शक्ति'** वाला **'साधक'** ही **'पञ्च-मकार'** के **'मद्य-तत्त्व'** के सेवन का अधिकारी है। **पात्र-दोष** से अपरिपक्व साधकों द्वारा किया जानेवाला **मद्य-पान** उन्हें अधो-गामी ही बनाएगा, इसमें संशय नहीं। इसी कारण **'वीर-साधना'** की आज प्राय: दुर्गति और निन्दा दिखाई-सुनाई देती है। निन्दित **'दृष्टि-गत'** रूप है। **'सद्-गुरु'** को **'साधक'** के **'साधना-स्तर'** एवं **'मनोदशा'** तथा **'भावों'** की पूर्ण परीक्षा किए बिना कभी भी **'पात्र'** नहीं बनाना चाहिए। अन्यथा मार्ग की ही निन्दा होगी। इसी कारण **'वीराचार'** एवं **'कौल-साधना'** को सभी तन्त्रों ने तब तक **'गुप्त'** रखने का आदेश किया है, जब तक कि जिज्ञासु शिष्य **'सत्पात्र'** न प्रमाणित हो जाय। अस्तु, श्री पूज्य गुरु-देव की पुण्य स्मृति में समर्पित।

३०-१०-९७ **–अशोककुमार श्रीवास्तव**

# श्रीकाली-पूजा-पद्धति

## प्रातः-कृत्य

**गुरु-पूजन :** अपने मस्तक के भीतर श्वेत-वर्ण सहस्र-दल-कमल की कर्णिका के चन्द्र-मण्डल के योग-पीठ पर विराजमान श्रीगुरुदेव का ध्यान करे—

**रक्तं रक्त - विलेप - माल्य - वसनं वामेन रक्तोत्पलम्।**
**विभ्रत्या प्रिययेतरेण तरसा श्रेष्ठं प्रसन्नाननम्।।**
**हस्ताभ्यामभयं वरं च दधतं शम्भु-स्वरूपं महान्।**
**हाला-लोहित - लोचनोत्पल - युगं ध्यायेच्छिरस्थं गुरुम्।।**

इस प्रकार गुरुदेव का ध्यान कर दोनों हाथों से मृग-मुद्रा बनाकर मानसोपचारों से निम्नलिखित मन्त्रों से उनका पूजन करे–

**१. लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीगुरु-मूर्त्तये समर्पयामि नमः।**
**२. हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीगुरु-मूर्त्तये समर्पयामि नमः।**
**३. यं वायव्यात्मकं धूपं श्रीगुरु-मूर्त्तये समर्पयामि नमः।**
**४. रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीगुरु-मूर्त्तये समर्पयामि नमः।**
**५. वं अमृतात्मक नैवेद्यं श्रीगुरु-मूर्त्तये समर्पयामि नमः।**

इस प्रकार मानसिक उपचारों से **श्री गुरुदेव** का पूजन कर नीचे लिखे **'गुरु-पादुका-मन्त्र'** का दश बार जप करे—

**ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हसखफ्रें हसक्षमलवरयूं सहखफ्रें सहक्षमलवरयीं 'श्रीगुरु - अमुकानन्दनाथ' - तच्छक्त्यम्बा-श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः स्वाहा।**

इसी मन्त्र में **'श्रीगुरु-अमुकानन्दनाथ'** के समान **श्रीपरमगुरु, श्रीपरात्पर गुरु, श्री परमेष्ठि गुरु** आदि के नाम जोड़कर अलग-अलग **'गुरु-पादुका-मन्त्र'** का जप-कर उनका जप-फल निज गुरु के दाहिने हाथ में नीचे लिखे मन्त्र को पढ़कर समर्पित करे–

**ॐ गुह्याति-गुह्य-गोप्ता त्वं, गृहाणास्मत्-कृतं जपम् ।**
**सिद्धिर्भवतु मे देव ! त्वत्-प्रसादान् महेश्वर ! ।।**

ॐ इदं जप-फलं श्रीगुरवे समर्पयामि नमः।

अब नीचे लिखे तीन मन्त्र पढ़कर गुरुदेव के श्रीचरणों में नमस्कार करे—

ॐ अखण्ड-मण्डलाकारं, व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्-पदं दर्शितं येन, तस्मै श्रीगुरवे नमः।।
ॐ अज्ञान-तिमिरान्धस्य, ज्ञानाञ्जन - शलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन, तस्मै श्रीगुरवे नमः।।
ॐ नमोऽस्तु गुरवे तस्मादिष्ट - देव - स्वरूपिणे।
यस्य वागमृतं हन्ति, विषं संसार - संज्ञकम्।।

ऊपर के तीन श्लोकों (मन्त्रों) से गुरुदेव को नमस्कार कर नीचे लिखे स्तव से उनकी स्तुति करे—

नमोऽस्तु तस्मै भगवन्, शिवाय गुरु - रूपिणे।
विद्यावतार - संसिद्ध्यै, स्वीकृतानेक - विग्रहाः।।
नवाय नव - रूपाय, परमार्थैक - रूपिणे।
सर्वाज्ञान - तमो - भेद - भानवे चिद् - घनाय ते।।
स्वतन्त्राय दया-क्लृप्त-विग्रहाय शिवात्मने।
पर - तन्त्राय भक्तानां, भव्यानां भव्य-रूपिणे।।
विवेकिनां विवेकाय, विमर्शाय विमर्शिनाम्।
प्रकाशिनां प्रकाशाय, ज्ञानिनां ज्ञान-रूपिणे।।
पुरस्तात् पार्श्वयोः पृष्ठे, नमस्कुर्याम्युपर्यधः।
सदा संचित्त - रूपेण, विधेहि भवदासनम्।।
त्वत्-प्रसादादहं देव ! कृत-कृत्योऽस्मि सर्वतः।
माया-मृत्यु-महा-पाशाद्, विमुक्तोऽस्मि शिवोऽस्मिच।।

इस प्रकार गुरुदेव की स्तुति कर अपने किए जानेवाले सब कर्म-फलों को नीचे लिखे मन्त्र द्वारा गुरुदेव को पूजा-रूप में अर्पित करे—

ॐ प्रातः प्रभृति सायान्तं, सायादि प्रातरं ततः।
यत्-करोमि जगन्नाथ! तदस्तु तव पूजनम्।।

इसके बाद गुरुदेव की आज्ञा लेकर उनके चरण-कमलों से झरते हुए चरणामृत से अपने मन को धोने की भावना करे।

**कुल-गुरु और इष्ट-देवता-स्मरण**—मूलाधार-चक्र के सुवर्ण रङ्ग के चतुर्दल-कमल की कर्णिका में त्रिकोण का ध्यान करे। उसके बीच में प्रातःकाल के उदित सूर्य के रङ्ग कें सत्त्व, रज-तमो-गुणात्मक **'स्वयम्भू लिङ्ग'** का ध्यान करे। उस लिङ्ग के ऊपर चैतन्य-रूपा बिजली के सदृश्य प्रकाशमान कमल की नाल के तन्तु के समान सूक्ष्म, सोती हुई, सर्प के समान साढ़े तीन फेरों में स्थित महा-माया **'कुण्डलिनी-शक्ति'** का ध्यान करे।

गुरु के बताए हुए क्रम से **'हुं'** बीज के उच्चारण द्वारा उसे जगाकर **सुषुम्ना-नाड़ी** के मार्ग से **मूलाधार-चक्र** से **स्वाधिष्ठान, मणिपुर, अनाहत, विशुद्ध, आज्ञा** आदि चक्रों का भेदन कराता हुआ उसे शिर में स्थित **अधोमुख सहस्र-दल-कमल** की कर्णिका में ले जाकर **परम शिव** से उसके मिलन का चिन्तन करे और सुस्थिर भाव से समाहित-मन होकर ध्यान करे कि वहाँ पर स्थित जो **चन्द्र-मण्डल** है, उससे झरित अमृत से **'कुण्डलिनी'** तृप्त हो गई है। अब उसकी ज्योति में **'कुल-गुरुओं'** के रूप का ध्यान करे। यथा—

**कुलामृत - रसोल्लोल - हृदयाघूर्ण - लोचनान् ।**
**कुलालिङ्गन् - सम्भिन्नान् तान् घूर्णिताशेष - तामसान् ।।**
**पूर्ण - शिष्टैः परिवृतान्, पूर्णान्तः - करणोद्यतान् ।**
**वराभय - युतान् सर्वान्, कुल - तन्त्रार्थ - वादिनः ।।**

**१. श्रीप्रह्लादानन्दनाथाय नमः, २. श्रीसकलानन्दनाथाय नमः, ३. श्रीकुमारानन्दनाथाय नमः, ४. श्रीवशिष्ठानन्दनाथायं, ५. श्रीक्रोधानन्दनाथाय नमः, ६. श्रीसुखानन्दनाथाय नमः ७. श्रीध्यानानन्दनाथाय नमः, ८. श्रीबोधानन्दनाथाय नमः, ९. श्रीविरूपाक्षानन्दनाथाय नमः, १०. श्रीशुकानन्दनाथाय नमः।**

इसके बाद **मूलाधार चक्र** से **ब्रह्मरन्ध्र** तक प्रकाश-रूप में मूल विद्या अर्थात् **इष्ट-मन्त्र** की भावना करे। फिर **परम शिव** को नमस्कार कर **मूल-मन्त्र** से तीन बार **प्राणायाम** करे। फिर **ऋष्यादि,** कर और **षडङ्ग-न्यास** आदि करे।

इसके बाद **सहस्रार** से **'कुण्डलिनी-शक्ति'** को हृदय-कमल

में लाकर वहाँ इष्ट-देवता के स्वरूप का ध्यान कर उसका मानसोपचारों से मुद्राएँ दिखाकर पूजन करे।

फिर 'गुरु-पादुका'- मन्त्र, देवता और आत्मा की एकता की भावना क़रे। इसके बाद नीचे लिखे हुए **'श्रीकाली गायत्री मन्त्र'** का अट्ठाइस बार जप करे–

**ॐ क्रीं दक्षिणायै विद्महे चामुण्डायै धीमहि तन्नो काली प्रचोदयात् ।**

**'गायत्री'** का जप कर चुकने पर अपने मूल-मन्त्र का यथाशक्ति जप करे। फिर जप का फल **'ॐ गुह्याति०'** मन्त्र से देवता के दाहिने हाथ में अर्पित करे।

## अजपा-जप-क्रिया

गुरुदेव से अजपा-जप-क्रिया करने की आज्ञा लेकर पहले **'अजपा-जप'** का सङ्कल्प करे। यथा—

**ॐ अद्य पूर्वेद्युरहोरात्राचरितमुच्छ्वास-निश्वासात्मकं षट्-शताधिकमेक-विंशति-सहस्त्र-संख्याकं अजपा-जपमहं करिष्ये।**

**ॐ मूलं मूलाधार-चक्रस्थाय गणपतये अजपा-जपानां षट्-शत-संख्याकं जपं समर्पयामि नमः।**

**ॐ मूलं स्वाधिष्ठान-चक्रस्थाय ब्रह्मणे अजपा-जपानां षट्-सहस्त्र-संख्याकं जपं समर्पयामि नमः।**

**ॐ मूलं मणिपूर-चक्रस्थाय विष्णवे अजपा-जपानां षट्-सहस्त्र-संख्याकं जपं समर्पयामि नमः।**

**ॐ मूलं अनाहत-चक्रस्थाय रुद्राय अजपा-जपानां षट्-सहस्त्र-संख्याकं जपं समर्पयामि नमः।**

**ॐ मूलं विशुद्ध-चक्रस्थाय जीवात्मने अजपा-जपानां सहस्त्र-संख्याकं जपं समर्पयामि नमः।**

**ॐ मूलं आज्ञा-चक्रस्थाय परमात्मने अजपा-जपानां सहस्त्र-संख्याकं जपं समर्पयामि नमः।**

**ॐ मूलं सहस्त्र-दल - कमल - कर्णिका - मध्यस्थायै श्रीगुरु-पादुकायै अजपा-जपानां सहस्त्र-संख्याकं जपं समर्पयामि**

नमः।

इस प्रकार 'अजपा-जप' का सङ्कल्प कर नीचे लिखे विनियोग आदि करे—

**विनियोग : ॐ अस्य श्रीअजपा-मन्त्रस्य हंस ऋषिः, अव्यक्त-गायत्री छन्दः, परम-हंसो देवता, हं बीजं, सः शक्तिः, सोऽहं कीलकं, श्रीदक्षिण-कालिका-देवताऽङ्गत्वेन सिद्ध-योग-सिद्धये जपे विनियोगः।**

**ऋष्यादि-न्यास : ॐ हंसाय ऋषये नमः शिरसि, अव्यक्त-गायत्री-छन्दसे नमः मुखे, परम-हंसाय देवताय नमः हृदये, हं-बीजाय नमः गुह्ये, सः-शक्तये नमः पादयोः, सोऽहं-कीलकाय नमः नाभौ, श्रीदक्षिण-कालिका-देवताऽङ्गत्वेन सिद्ध-योग-जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।**

**कर-न्यास : ॐ हंसां सूर्यात्मने तेजोवत्यै शक्तिः अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ हंसीं सोमात्मने प्रभा-शक्तिः तर्जनीभ्यां नमः। ॐ हंसूं जीवात्मने अविद्या-शक्तिः निरञ्जनात्मने मध्यमाभ्यां नमः। ॐ हंसैं परमात्मने माया-शक्तिः निराभासात्मने अनामिकाभ्यां नमः। ॐ हंसौं निरञ्जनात्मने ईक्षण-शक्तिः अव्यक्ताय कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ हंसः निराभासात्मने ज्ञान-शक्तिः अनन्ताय करतल-कर-पृष्ठाभ्यां नमः।**

**अङ्ग-न्यास : ॐ हंसां सूर्यात्मने तेजोवत्यै शक्तिः हृदयाय नमः। ॐ हंसीं सोमात्मने प्रभा-शक्तिः शिरसे स्वाहा। ॐ हंसूं जीवात्मने अविद्या-शक्तिः निरञ्जनात्मने शिखायै वषट्। ॐ हंसैं परमात्मने माया-शक्तिः निराभासात्मने कवचाय हुं। ॐ हंसौं निरञ्जनात्मने ईक्षण-शक्तिः अव्यक्ताय नेत्र-त्रयाय वौषट्। ॐ हंसः निराभासात्मने ज्ञान-शक्तिः अनन्ताय अस्त्राय फट्।**

ऊपर के न्यास कर चुकने पर, ताल-त्रय करके विघ्नों का निवारण कर **छोटिका मुद्रा** द्वारा अपने सिर के ऊपर चारों ओर तथा एक बार ऊपर और एक बार नीचे चुटकी बजाकर दशों दिशाओं का दिग्-बन्धन करे। इसके बाद नीचे लिखा **ध्यान** पढ़े—

**गमी गमस्त्वं गगनादि-शून्यं, चिद्-रूप-रूपं तिमिरान्त - कारम् ।**
**पश्यामि ते सर्व-जन-प्रधानं, नमामि हंसं परमार्थ-रूपम् ।।**

अब 'अजपा-जप' का समर्पण भिन्न-भिन्न चक्रों में स्थित देवताओं को नीचे लिखे क्रम के अनुसार करे—

१. रक्त-वर्णं गणेशं च, मूलाधारे चतुर्दले।
वादि - वेद - समायुक्ते, षट्-शतं समर्पयामि।।
२. स्वाधिष्ठाने विद्रुमाभे, ब्रह्माणं वादि-षट्-दले।
सावित्र्या च समायुक्ते, षट्-सहस्रमर्पयामि।।
३. विद्युल्लसत् - प्रभाभे मण्डले बादि-दशाक्षरे।
लक्ष्मी - नारायणं च षट् - सहस्रं समर्पयामि।।
४. विपुल - सत् - प्रभाभं मण्डलं द्वादश - पत्रके।
उमा - महेश्वरौ वन्दे, षट् - संहस्रं समर्पयामि।।
५. विशुद्धे धूम्र - वर्णं च, स्वर-पत्रे स्वरान्विते।
प्राण - शक्त्यात्मकं वन्दे, सहस्रं समर्पयामि।।
६. आज्ञायां विद्युदाभायां, श्रुतौ हं - क्षं योजयामि।
परमात्म-परा-शक्तौ, सहस्रं समर्पयामि।।
७. कर्पूर - द्युति - संराजत्, सहस्र - दल - पङ्कजे।
नीलात्मकं गुरुं ध्याये, सहस्रं च समर्पये।।

इस प्रकार 'अजपा-जप' का समर्पण कर, स्तुति-पूर्वक देवता की आज्ञा लेकर नीचे लिखे श्लोक से प्रार्थना करे—

त्रैलोक्य-चैतन्य-मयि ! त्रि-शक्ते ! श्रीविश्व-मातर्भवदाज्ञयैव।
प्रातः समुत्थाय तव प्रियार्थं, संसार-यात्रामनुवर्त्तयिष्ये।।

इस प्रकार देवता की आज्ञा लेकर हृदय-कमल से 'कुण्डलिनी' शक्ति को लाकर, मूलाधार-चक्र में स्थापित करे। फिर अपनी आत्मा को नीचे लिखे श्लोकों की भावना से भावित करे—

प्रकाश-मानां प्रथमे प्रयाणे, प्रति-प्रयाणेऽप्यमृतायमानाम् ।
अन्तः-पदव्यामनुसञ्चरन्तीम्, आनन्द-रूपामबलां प्रपद्ये।।
अहं देवो न चान्योऽस्मि, ब्रह्मैवाहं न शोक-भाक्।
सच्चिदानन्द - रूपोऽहमात्मानमिति भावये।।

इसके बाद गुरु, देवता और आत्मा की ऐक्य-भावना कर नीचे लिखे मन्त्र से भूमि देवी की प्रार्थना करे—

**ॐ समुद्र - मेखले देवि ! पर्वत - स्तन - मण्डले !।**
**विष्णु - पत्नि ! नमस्तुभ्यं, पाद - स्पर्शं क्षमस्व मे।।**
**धारणं पोषणं त्वत्तो, भूतानां देवि ! सर्वदा।**
**तेन सत्येन मां पाहि, पाशान् मोचय धारिणि !।।**

इस प्रकार **भूमि देवी** की प्रार्थना कर, शैय्या से नीचे, जिस ओर के नासा-पुट से **'श्वास'** तेज निकलता हो, उसी ओर का पैर उतारे और उसे आगे बढ़ाकर शयन-स्थान से बाहर निकले।

## शौच-क्रिया

घर के बाहर मैदान में दूर जाकर, घर से नैर्ऋत्य-कोण में एकान्त स्थान में मल का त्याग करे। जिस स्थान में मल त्याग करना चाहे, वहाँ कुछ तृण रख दे। फिर कान पर जनेऊ चढ़ाकर, उत्तर की ओर मुख कर, बैठकर सुख-पूर्वक मल त्याग करे। मल-त्याग करने के पहले निम्न श्लोक पढ़कर भूतों का अपसर्पण कर ले–

**गच्छन्तु ऋषयो देवा, पिशाच-यक्ष-राक्षसाः।**
**पितृ-भूत-गणाः सर्वे, करिष्ये मल-मोचनम्।।**

मल-विसर्जन कर चुकने के बाद, जल से मूत्रेन्द्रिय को शुद्ध करे। फिर मिट्टी लेकर मूत्रेन्द्रिय में एक बार, तीन बार मल-द्वार में लगाकर जल द्वारा उन्हें फिर शुद्ध करे। इस प्रकार मल-विसर्जन कर शुद्ध होकर जलाशय के पास आकर शेष शौच-क्रिया करे। यथा—दश बार मिट्टी लगाकर बाँयाँ हाथ और सात बार दायाँ हाथ मिट्टी लगाकर धोए। फिर तीन बार पैरों में मिट्टी लगाकर उन्हें धोए।

शौच-क्रिया से निवृत्त होकर दन्त-धावन की क्रिया करे। इसके लिए आम, चम्पा, जामुन, अपामार्ग-जैसे विहित वृक्ष आदि की दातून अनिषिद्ध दिनों में अट्ठारह, बारह या दो अंगुल की करे। दातून निम्न-लिखित वाक्य द्वारा वृक्ष से प्रार्थना करके प्राप्त करे–

**आयुर्बलं यशोवर्चः, प्रजा-पशु-धनानि च।**
**श्रियं प्रज्ञां च मेधां च, तं नो देहि वनस्पते!।।**

निम्न-लिखित मन्त्र पढ़कर दातून तोड़े—

**ॐ ह्रीं तडित् स्वाहा।**

इसके बाद नीचे लिखे मन्त्र को पढ़कर दाँतों का शोधन दातून द्वारा करे–**ॐ क्लीं काम-देवाय सर्व-जन-प्रियाय नमः।**

दाँतों को दातून से शुद्ध कर चुकने पर दातून को फाड़ कर **'ऐं'** बीज पढ़कर उसके द्वारा जीभ का मल दूर करे। फिर दातून के दोनों खण्डों को जल से धोकर उन्हें अपने आगे शुद्ध भूमि पर फेंक दे। फिर **मूल-मन्त्र** पढ़कर जल से कुल्ले कर मुख का शोधन करे। फिर आचमन कर वहाँ से उठकर बचे हुए जल को किसी देव-स्थान कें पास गिराकर देवता को प्रणाम करे।

## स्नान

अब देवता की आज्ञा लेकर स्नानार्थ जलाशय को जाय। मार्ग में शुद्ध भूमि देखकर वहाँ की मिट्टी **'फट्'** मन्त्र पढ़कर खोद ले।

जलाशय के तट पर पहुँच कर उसका दर्शन कर उसको प्रणाम करे। उसके तट पर बैठकर **'फट्'** मन्त्र से उसके किनारे को धोए। उस स्थान पर स्नानीय वस्तुओं को रखकर, हाथ-पैर धोकर, आचमन करे। फिर जल छोड़कर **'फट्'** मन्त्र से उक्त मिट्टी का शोधन करे। फिर **मूल-मन्त्र** पढ़ता हुआ उस मिट्टी का अपनी देह में लेपन करे। फिर अनामिका और तर्जनी में **कुश की बनी पैंती** धारण करे और अपने को देवी-रूप मानकर फिर जलाशय में प्रवेश कर नाभि-पर्यन्त जल में जाकर, स्नान कर, देह का मल दूर करे। फिर आचमन कर निम्न-लिखित सङ्कल्प पढ़े—

**ॐ तत्सत् अद्यैतस्य ब्रह्मणोऽह्नि, द्वितीय-प्रहरार्धे, श्रीश्वेत-वाराह-कल्पे, जम्बू-द्वीपे, भरत-खण्डे, आर्यावर्तैक-देशान्तर्गते, अमुक क्षेत्रे, कलि-युगे कलि-प्रथम-चरणे, अमुक-नाम-संवत्सरे अमुक-मासे, अमुक-पक्षे, अमुक-तिथौ, अमुक-वासरे, अमुक-गोत्रोत्पन्नो, श्रीअमुक-नाथ** अथवा (अमुक-शर्माऽहं) **इष्ट-देवता** (नाम उच्चारण करके) **प्रीतये अमुक-तीर्थ-स्नानमहं करिष्ये।**

सङ्कल्प कर चुकने पर **सहस्त्रार** में **गुरुदेव** को नमस्कार करे। इसके बाद अपने **मूल-मन्त्र** के **ऋष्यादि, कर** और **षडङ्गादि** का **न्यास** करे। फिर अपने **हृदय-कमल** में **इष्ट-देवता** का ध्यान करे। फिर '**ह्रीं**' बीज से जल को हिलोरे और तब नीचे लिखे मन्त्रों से **अंकुश-मुद्रा** द्वारा '**क्रों**' बीज पढ़कर **सूर्य-मण्डल** से उस जल में **तीर्थों का आवाहन** करे। यथा–

**ॐ ब्रह्माण्डोदर-तीर्थानि, करैः स्पृष्टानि ते रवे !**
**तेन सत्येन मे देव !, तीर्थं देहि दिवाकर ! ।।**
**ॐ गङ्गे च यमुने चैव, गोदावरि सरस्वति !**
**नर्मदे सिन्धु कावेरि !, जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ।।**
**आवाहयामि त्वां देवि !, स्नानार्थमिह सुन्दरि !**
**एहि गङ्गे ! नमस्तुभ्यं, सर्व-तीर्थ-समन्विते !।।**

इस प्रकार तीर्थों का आवाहन कर अपने सामने के हिलोरे हुए जल को '**धेनु-मुद्रा**' दिखाकर '**वं**' बीज पढ़कर उसे अमृत-मय करे। फिर '**मत्स्य-मुद्रा**' बनाकर उसे ढँके। फिर '**अवगुण्ठन-मुद्रा**' बनाकर '**हुं**' बीज से उसके चारों ओर घुमाकर उसका '**अवगुण्ठन**' करे। फिर उसके ऊपर '**चक्र-मुद्रा**' बनाकर '**फट्-कार**' कर उसकी रक्षा करे। फिर उसके ऊपर दश बार चुटकी बजाकर दशों दिशाओं का बन्धन करे। फिर **मूल-मन्त्र** का तीन बार जप करे। इसके बाद नीचे लिखे श्लोक को पढ़कर '**तीर्थ-शक्ति**' का ध्यान करे–

**ॐ सर्वानन्द - मयीमशेष - दुरित - ध्वंसां मृगाङ्क-प्रभाम्।**
**त्र्यक्षीं चोर्ध्व - कर - द्वयेन दधतीं पाशं सृणिं च क्रमात्।।**
**दोर्भ्यां चामृत-पूर्ण-हेम-कलशं मुक्ताक्ष-मालां वरम्।**
**गङ्गा-सिन्धु-सरिद्-द्वयादि-सहितां श्रीतीर्थ-शक्तिं भजे।।**

इस प्रकार '**तीर्थ-शक्ति**' का ध्यान कर नीचे लिखे मन्त्रों से '**तीर्थ-शक्ति**' का आवाहन करे–

**ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः सर्वानन्द-मये तीर्थ-शक्ति! एह्येहि स्वाहा।**

**ॐ तीर्थ-शक्ते ! नमः। नमो भगवति! अम्बे अम्बालिके अम्बिके महा-मालिनि ! एह्येहि भगवति! अशेष-तीर्थालवाले! ह्रीं श्रीं शिव-जटाधिरूढे! गङ्गे ! गङ्गाम्बिके! स्वाहा।**

उक्त मन्त्र को आठ बार पढ़कर जल में **'तीर्थ-शक्ति'** का आवाहन करे। फिर उस जल में बाँएँ हाथ से **चौकोर मण्डल,** उसके भीतर **त्रिकोण** व **चक्र-मण्डल** बनाए। फिर **पीठ-शक्तियों** का तर्पण करे। इसके बाद उस **मण्डल** में अपने **हृदय-कमल** से **'इष्ट-देवता'** का आवाहन करे–आवाहन की पाँचों मुद्राएँ तथा चारों हाथों के चारों आयुधों की मुद्राएँ बनाकर माता को दिखाए।

कामना-भेद से **कृष्ण, रक्त, हरिद्र** या **नील**-वर्णवाले भगवती के स्वरूप का ध्यान करे। इसके बाद **अङ्ग-देवताओं** तथा **आवरण-देवताओं** के सहित उस **मण्डल** के जल से **भगवती** का पूजन करे। फिर **भगवती** के चरण-कमलों से गिरते हुए जल से आचमन कर **'तत्त्व-मुद्रा'** द्वारा अपने सिर का नीचे लिखे मन्त्र से सात बार **अभिसिञ्चन** करे—

**मूलं महा - काल - सहितां श्रीमद् - दक्षिण - कालिकां अभिषिञ्चामि।**

इसके बाद अपने हाथ की अँगुलियों से अपने शरीर के **सातों छिद्रों** को बन्द कर **'मूल-मन्त्र'** पढ़ता हुआ जल में तीन बार डुबकी लगाए। फिर उसी तरह दोनों भुजाओं का और हृदय का अभिषिञ्चन करे। फिर आचमन कर तर्पण-क्रिया करे। यथा—

**मूलं महा-काल-सहिते श्रीमद्-दक्षिण-कालिके मातः! तृप्यताम्**—यह मन्त्र पढ़कर तीन या दस जलाञ्जलियाँ **भगवती** को प्रदान करे। फिर **सूर्य देवता** को उनके मन्त्र से तीन जलाञ्जलियाँ प्रदान करे। फिर–**ॐ ब्रह्मादीन् देवान् सन्तर्पयामि नमः**–यह मन्त्र पढ़कर **ब्रह्मा** आदि देवताओं को तीन-तीन जलाञ्जलियाँ प्रदान करे। फिर– **ॐ सनकादीन् मुनींस्तर्पयामि नमः**-यह मन्त्र पढ़कर **सनकादि** मुनियों को **तीन-तीन** और **ॐ कव्यवाडनलादीन् दिव्य-पितॄन् तर्पयामि नमः**–यह मन्त्र पढ़कर **'कव्यवाडनल'** आदि दिव्य पितरों को तीन-तीन जलाञ्जलियाँ प्रदान करे।

इसके बाद प्राणायाम, 'मूल-मन्त्र' के ऋष्यादि का न्यास कर 'संहार-मुद्रा' द्वारा देवताओं को अपने हृदय-कमल में पुनः स्थापित करे एवं तीर्थों को उसी प्रकार सूर्य-मण्डल में स्थापित करे। फिर जिस तीर्थ में स्नान किया है, उसको नमस्कार कर नीचे लिखे मन्त्र से असुरादि को जल प्रदान करे–**असुरा भूत-वेतालाः, कूष्माण्डा भूत-राक्षसाः! ते सर्वे तृप्तिमायान्तु, मया दत्तेन वारिणा।**

इस प्रकार स्नान कर जल से बाहर निकल आए तथा सूखी धोती तथा अँगौछा धारण करे।

शुद्ध स्थान देखकर वहाँ आसन बिछाकर उस पर बैठे तथा फिर आसन का शोधन कर मन्त्र से शिखा-बन्धन करें और तब माथे तथा अन्य अङ्ग में भस्म लगाकर माथे में सिन्दूर की बिन्दी लगाए। इसके बाद **'वैदिक'** एवं **'तान्त्रिक सन्ध्या-वन्दन'** करे।

## तान्त्रिक सन्ध्या-वन्दन

पूर्व की ओर मुख कर, हाथ-पैर धोकर आचमन करे। फिर नीचे लिखे हुए श्लोक को पढ़े—

**ॐ सूर्यः सोमो यमो कालो, महा-भूतानि पञ्च च।**
**एते शुभाशुभस्येह, कर्मणो नव साक्षिणः।।**

नीचे लिखे ४ मन्त्रों से चार बार आचमन करे–**ॐ आत्म-तत्त्वाय स्वाहा, ॐ विद्या-तत्त्वाय स्वाहा, ॐ शिव-तत्त्वाय स्वाहा, ॐ सर्व-तत्त्वाय स्वाहा।** आचमन करने के बाद सङ्कल्प पढ़े—

**ॐ अद्यैतस्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय - प्रहरार्धे श्रीश्वेत - वाराह-कल्पे जम्बू - द्वीपे भरत - खण्डे आर्यावर्तैक - देशान्तर्गते पुण्य-क्षेत्रे अष्टाविंशति - कलि-युगे कलि - प्रथम - चरणे** अमुक-**संवत्सरे** अमुक - **मासे,** अमुक - **पक्षे,** अमुक - **तिथौ,** अमुक-**वासरे,** अमुक - **गोत्रोत्पन्नो** अमुक - **शर्माऽहं महा - काल - सहित - श्रीदक्षिण - कालिका - प्रीत्यर्थे प्रातः -सन्ध्योपासनं करिष्ये।**

नीचे लिखे मन्त्र से **'शिखा-बन्धन'** करे—

**ॐ मणि-धरिणि वज्रिणि सर्व-वशङ्करि महा-प्रतिसरे! रक्ष-रक्ष हुं फट् स्वाहा।**

इस प्रकार शिखा-बन्धन कर, हाथ धोकर, आचमन करे। इसके बाद **'मूल-मन्त्र'** से या **'प्रणव'** (ॐ) से प्राणायाम करे। फिर **'मूल-मन्त्र'** के विनियोग का **ऋष्यादि न्यास, कर** और **षडङ्ग** न्यास करे। फिर इष्ट-देवता का अपने हृदय में ध्यान करे। इसके बाद अपने सामने रखे हुए जल-पात्र में **सूर्य-मण्डल** से **तीर्थों** का आवाहन करे। यथा—

**'ॐ ब्रह्माण्डोदर-तीर्थानि', 'ॐ गङ्गे च यमुने'** आदि मन्त्रों को पूरा-पूरा पढ़कर, **'क्रों'** बीज का उच्चारण कर **'अंकुश-मुद्रा'** से उस जल में **तीर्थों का आवाहन करे**। फिर जल-पात्र के ऊपर **'वं'** बीज पढ़ता हुआ **'धेनु-मुद्रा'** दिखाकर उसे अमृत-मय करे। फिर उस पर **'मत्स्य-मुद्रा'** बनाकर उसे आच्छादित करे, **'हुं'** बीज पढ़कर **'अवगुण्ठन-मुद्रा'** उसके चारो ओर घुमा कर उस पर पर्दा डाले, **'चक्र-मुद्रा'** दिखा कर **'फट्'** मन्त्र पढ़कर फट्-कार कर उसकी रक्षा करे और उसके ऊपर दस बार चुटकी बजाकर **दशों दिशाओं का बन्धन** करे। इसके बाद जल-पात्र के ऊपर तीन बार **'मूल-मन्त्र'** का जप करे। इसके बाद **'तत्त्व-मुद्रा'** द्वारा **कुश-खण्ड** लेकर **'अं'** से लेकर **'क्षं'** तक **मातृका-वर्ण** पढ़ता हुआ सात बार अपने मस्तक का अभिसिञ्चन करे। अथवा **'मूल-मन्त्र'** पढ़कर तीन ही बार अभिसिञ्चन करे।

अब जल-पात्र से अपने बाँएँ हाथ की सम्पुटाकार गदोरी में जल-भरे और उस पर सम्पुटाकार दाहिने हाथ को स्थापित कर **'हं यं वं लं रं'** इन **बीज-मन्त्रों** को तीन बार पढ़कर हाथ के जल को अभिमन्त्रित करे। फिर उस हाथ के टपकते हुए जल से दाहिने हाथ की **'तत्त्व-मुद्रा'** द्वारा अपने सिर का सात बार **अभिसिञ्चन** करे।

इसके बाद बाँएँ हाथ की हथेली का जल दाहिने हाथ की हथेली में ले ले। फिर बाँएँ नथुने से **'इड़ा नाड़ी'** द्वारा उस जल

को भीतर खींचने की भावना करे और **'वं'** बीज पढ़कर अपने भीतर के सारे पापों को उस जल द्वारा धोए जाने की भावना करे। फिर पापों के मिश्रण से उस जल के काले रङ्ग के हो जाने की भावना कर दाहिनी नासा से **'पिङ्गला नाड़ी'** द्वारा उस जल को बाहर निकालने की भावना कर अपने दाहिने हाथ की हथेली में लाकर अपने सामने कल्पित वज्र-शिला पर उस जल को **'फट्'** मन्त्र पढ़कर पटक दे । फिर हाथ धोकर पुनः आचमन करे ।

अब **'सूर्य-मण्डल'** में **'इष्ट गायत्री देवी'** का ध्यान करे । पहले नीचे लिखे हुए मन्त्र से **'सूर्य देवता'** को अर्घ्य दे–

**ॐ ह्रीं हंसः मार्त्तण्ड-भैरवाय प्रकाश - शक्ति - सहिताय श्रीसूर्याय इदमर्घ्यं स्वाहा।** (तीन बार अर्घ्य दे)। इसके बाद **'महा-काल शिव'** और **'दक्षिण-कालिका'** का ध्यान करे। यथा—

## श्री महा-काल का ध्यान

**श्मशानस्थो महा-रुद्रो, महा-कालो दिगम्बरः ।**
**कपालं कर्तृकां वामे, शूलं खट्वाङ्गं दक्षिणे ।।**
**भुजङ्ग-भूषिताङ्गोऽपि, भस्मास्थि-मणि-मण्डितः ।**
**ज्वलत्-पावक-मध्यस्थो, भस्म-शैया-व्यवस्थितः ।।**
**विपरीत-रतां तत्र, कालिकां हृदयोपरि ।**
**पेयं खाद्यं च चोष्यं च, तौ च कृत्वा परस्परम् ।।**

## श्री दक्षिणा काली का ध्यान

**कराल-वदनां घोरां, मुक्त-केशीं चतुर्भुजाम् ।**
**कालिकां दक्षिणां दिव्यां, मुण्ड-माला-विभूषिताम् ।।**
**सद्यश्छिन्न-शिरः खड्ग-वामाधोर्ध्व-कराम्बुजाम् ।**
**अभयं वरदं चैव, दक्षिणाधोर्ध्व-पाणिकाम् ।**
**महा-मेघ-प्रभां श्यामां, तथा चैव दिगम्बराम् ।**
**कण्ठावसक्त-मुण्डाली - गलद्-रुधिर-चर्चिताम् ।**
**कर्णावतंस-तानीत-शव - युग्म-भयानकाम् ।**
**घोर-दंष्ट्रां करालास्यां, पीनोन्नत-पयोधराम् ।।**

शवानां कर-सङ्घातैः, कृत-काञ्चीं हसन्मुखीम् ।
सृक्क-द्वय-गलद् - रक्त-धारा-विस्फुरिताननाम् ।।
घोर-रावां महा-रौद्रीं, श्मशानालय-वासिनीम् ।
बालार्क-मण्डलाकार - लोचन-त्रितयान्विताम् ।
दन्तुरां दक्षिण-व्यापि, मुक्तालम्बि-कचोच्चयाम् ।
शव-रूप-महा - देव-हृदयोपरि-संस्थिताम् ।।
शिवाभिर्घोर - रावाभिश्चतुर्दिक्षु समन्विताम् ।
महा-कालेन च समं, विपरीत-रतातुराम् ।।
सुख-प्रसन्न-वदनां, स्मेरानन-सरोरुहाम् ।
एवं सञ्चिन्तयेत् कालीं, सर्व-काम-समृद्धिदाम् ।।

इस प्रकार 'महा-काल' और 'दक्षिणा कालिका' का 'सूर्य-मण्डल' में ध्यान करे। फिर जल लेकर नीचे लिखे हुए 'गायत्री मन्त्र' को पढ़कर उन्हें अर्घ्य प्रदान करे–

ॐ कालिकायै विद्महे श्मशान-वासिन्यै धीमहि तन्नो घोरे प्रचोदयात्। उद्यदादित्य-मण्डल-वर्त्तिन्यै शिव-चैतन्यमय्यै-महा-काल-सहित-श्रीमद्-दक्षिणा-कालिकायै इदमर्घ्यं स्वाहा। (तीन बार अर्घ्य प्रदान करे)

मध्याह्न-काल में 'उद्यदादित्य-मण्डल-वर्त्तिन्यै' के स्थान में 'मध्याह्नादित्य-मण्डल-वर्तिन्यै' और सायं-काल में 'सायाह्नादित्य-मण्डल-वर्तिन्यै'—ऐसे वाक्यांशों को जोड़कर मन्त्र पढ़ता हुआ अर्घ्य प्रदान करे।

अब जल लेकर नीचे लिखा हुआ 'इष्ट-गायत्री' का विनियोग पढ़े–ॐ अस्य श्रीगायत्री मन्त्रस्य श्रीकृष्ण ऋषिः, गायत्री छन्दः, शिव शक्ति - स्वरूपा - गायत्री - देवता धर्मार्थ - काम-मोक्षार्थे जपे विनियोगः।

जल छोड़कर ऋषि आदि का न्यास करे—

ॐ श्रीकृष्ण-ऋषये नमः शिरसि, ॐ गायत्री-छन्दसे नमः मुखे, ॐ शिव-शक्ति-स्वरूपा-गायत्री-देवतायै नमः हृदये, धर्मार्थ-काम-मोक्षार्थे जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

अब कर-न्यास करे–ॐ क्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ क्रीं तर्जनीभ्यां नमः, ॐ क्रूं मध्यमाभ्यां नमः, ॐ क्रैं अनामिकाभ्यां नमः, ॐ क्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ क्रः कर-तल-कर-पृष्ठाभ्यां नमः।

अब षडङ्ग-न्यास करे–ॐ क्रां हृदयाय नमः, ॐ क्रीं शिरसे स्वाहा, ॐ क्रूं शिखायै वषट्, ॐ क्रैं कवचाय हुँ, ॐ क्रौं नेत्र-त्रयाय वौषट्, ॐ क्रः अस्त्राय फट्।

इस प्रकार 'षडङ्ग-न्यास' करने के बाद 'भगवती श्री दक्षिणा कालिका देवी' का ध्यान करे। यथा–

ध्यान : 'गुरु-क्रम' से ध्यान करे—

सद्यश्छिन्न-शिरः कृपाणमभयं हस्तैर्वरं विभ्रतीम्।
घोरास्यां शिरसां स्त्रजा सुरुचिरामुन्मुक्त-केशावलिम्।।
सृक्कासृक्-प्रवहां श्मशान-निलयां श्रुत्योः शवालंकृतिम्।
श्यामाङ्गीं कृत-मेखलां शव-करैर्देवीं भजे कालिकाम्।।

ध्यान करने के बाद भगवती को अर्घ्य प्रदान करे। अर्घ्य के 'ताम्र-पात्र' में जल, दूर्वा, अक्षत, रक्त-चन्दन, कुंकुम, जपा-कुसुम पुष्प छोड़कर नीचे लिखे 'गायत्री मन्त्र' से तीन बार अर्घ्य प्रदान करे–

"ॐ कालिकायै विद्महे श्मशान-वासिन्यै धीमहि तन्नो घोरे प्रचोदयात्, देवि भगवति! इदमर्घ्यं स्वाहा।"

इसके बाद 'भगवती कालिका' के 'गायत्री मन्त्र' का १०८, २८ या १० बार जप करे। जप कर चुकने पर जप का फल, 'ॐ गुह्याति-गुह्य०', आदि मन्त्र से भगवती को तेज-रूप में समझ कर भगवती के दाहिने हाथ में समर्पित करे।

इसके बाद अपनी वेद-शाखा के अनुसार देवादि का तर्पण करके तान्त्रिक प्रक्रिया के अनुसार तर्पण करे। यथा—

जल-पात्र में अपने 'इष्ट-देवता' के 'यन्त्र-राज' की भावना करे। फिर उसमें 'मूल प्रकृति' से लेकर 'ज्ञानात्म' तक के पीठों का तर्पण कर चुकने पर 'भगवती कालिका' के मुख्य 'नव शक्ति-

पीठों का कमल के दलों में तर्पण करे। यथा—

१. इं इच्छां तर्पयामि, २. ज्ञां ज्ञानां तर्पयामि, ३. क्रिं क्रियां तर्पयामि, ४. कां कामिनीं तर्पयामि, ५. कां काम-दायिनीं तर्पयामि, ६. रं रतिं तर्पयामि, ७. रं रति-प्रियां तर्पयामि, ८. आं आनन्दां तर्पयामि, ९. मं मनोन्मनीं तर्पयामि।

फिर अन्तिम पीठ का **'हसौः सदा-शिव-महा-प्रेत-पद्मासनाय नमः'**—इस मन्त्र से उक्त **अष्ट-दल-कमल** की कर्णिका पर तर्पण करे।

प्रत्येक **'तर्पयामि'** के अन्त में **'स्वाहा'** शब्द जोड़कर एक-एक बार जल प्रदान करे—

इस प्रकार **'पीठ-शक्तियों'** का तर्पण करके उनके ऊपर यथा-स्थान **'इष्ट-देवता'** के **'यन्त्र-राज'** की भावना कर **तर्पण** करे। पहले **ऋष्यादि, कर** और **षडङ्ग-न्यास** करके अपने आपको **भगवती** के रूप में ध्यान करे। इसके बाद जिन **देवताओं का तर्पण** करना है, उनका आवाहन कर आवाहनादि मुद्राएँ एवं आयुधों की मुद्राएँ दिखाकर जल द्वारा **'इष्ट-देवता'** का पूजन कर **'गणपति'** आदि का उनके मन्त्रों द्वारा चतुरस्र के बाहर तर्पण कर— नीचे लिखे मन्त्रों द्वारा **देवताओं का तर्पण** करे—

**ॐ ब्रह्म-भैरवं-तर्पयामि, ॐ विष्णु-भैरवं तर्पयामि, ॐ रुद्र-भैरवं तर्पयामि, हसक्षमलवरयूं आनन्द-भैरवं तर्पयामि, सहक्षमलवरयीं आनन्द-भैरवीं तर्पयामि।**

इसके बाद **'गुरु-पंक्ति'** का तर्पण करे। यथा—

**१. ॐ श्रीमहा-देव्यम्बानन्दनाथं तर्पयामि, २. ॐ श्रीमहादेवानन्दनाथं तर्पयामि, ३. ॐ श्रीत्रिपुराम्बानन्दनाथं तर्पयामि, ४. ॐ श्रीत्रिपुर-भैरवानन्दनाथं तर्पयामि** इति दिव्यौघाः।

**१. ॐ श्रीब्रह्मानन्दनाथं तर्पयामि, २. ॐ श्रीकुमारानन्दनाथं तर्पयामि, ३. ॐ श्रीपूर्णदेवानन्दनाथं तर्पयामि, ४. ॐ श्रीबद्रीनाथानन्दनाथं तर्पयामि, ५. ॐ श्रीचलाचलानन्दनाथं तर्पयामि, ६. ॐ श्रीचला-चित्तानन्दनाथं तर्पयामि, ७. ॐ श्रीकुमारानन्दनाथं तर्पयामि, ८.ॐ श्रीक्रोधानन्दनाथं तर्पयामि, ९. ॐ श्रीवरदानन्दनाथं**

तर्पयामि, १०. ॐ श्रीस्मर-दीपानन्दनाथं तर्पयामि, ११. ॐ श्रीमायाम्बानन्दनाथं तर्पयामि, १२. ॐ श्रीमायावत्यम्बानन्दनाथं तर्पयामि। इति सिद्धौघा:

१. ॐ श्रीविमलानन्दनाथं तर्पयामि, २. ॐ श्रीकुशलानन्दनाथं तर्पयामि, ३. ॐ श्रीभीमसेनानन्दनाथं तर्पयामि, ४. ॐ श्रीसुधाकरानन्दनाथं तर्पयामि, ५. ॐ श्रीमीनानन्दनाथं तर्पयामि, ६. ॐ श्रीगोरक्षकानन्दनाथं तर्पयामि, ७. ॐ श्रीभोजदेवानन्दनाथं तर्पयामि, ८. ॐ श्रीप्रजापत्यानन्दनाथं तर्पयामि, ९.ॐ श्रीमूलदेवानन्दनाथं तर्पयामि, १०. ॐ श्रीरन्तिदेवानन्दनाथं तर्पयामि, ११. ॐ श्रीविघ्नदेवानन्दनाथं तर्पयामि, १२. ॐ श्रीहुताशनानन्दनाथं तर्पयामि, १३. ॐ श्रीसमयानन्दनाथं तर्पयामि, १४. ॐ श्रीसन्तोषानन्दनाथं तर्पयामि। इति मानवौघा:

१. ॐ श्रीअमुकानन्दनाथं गुरुं तर्पयामि, २. ॐ श्रीअमुकानन्दनाथं परम-गुरुं तर्पयामि, ३. ॐ श्रीअमुकानन्दनाथं परात्पर गुरुं तर्पयामि, ४. ॐ श्रीअमुकानन्दनाथं परमेष्ठि-गुरुं तर्पयामि। इति गुरु-चतुष्टय:

**गुरु-चतुष्टय :** के बाद परलोक-गत **'पितरों'** के **'गुरु-दत्त'** नामों के साथ **'आनन्दनाथ'** जोड़कर प्रत्येक **'पितृ-देव'** का तर्पण करे।

तदनन्तर **'परिवार-देवताओं'** के सहित **'श्रीदक्षिणा-कालिका'** का ध्यान करके उनका तर्पण करे। यथा–

**'मूलं श्रीमद्-दक्षिणा-कालिका-मातः! तृप्यन्ताम्'** (सात बार जल-दान करे)।

**'मूलं महा-काल शिव! तृप्यन्ताम्'** (तीन बार जल प्रदान करे)।

**'परिवार-देवताओं'** तथा **'अङ्ग-देवताओं'** का तर्पण करे। यथा—

**ॐ क्रां हृदय-देवि ! तृप्यन्ताम्, ॐ क्रीं शिरो-देवि ! तृप्यन्ताम्, ॐ क्रूं शिखा-देवि ! तृप्यन्ताम्, ॐ क्रैं कवच-देवि !**

तृप्यन्ताम्, ॐ क्रौं नेत्र-देवि ! तृप्यन्ताम्, ॐ क्रः अस्त्र-देवि ! तृप्यन्ताम्।

अब इसी प्रकार 'परिवार-देवताओं' का तर्पण करे। यथा–

ॐ कालीं तर्पयामि। ॐ कपालिनीं तर्पयामि। ॐ कुल्लां तर्पयामि। ॐ कुरु-कुल्लां तर्पयामि। ॐ विरोधिनीं तर्पयामि। ॐ विप्रचित्तां तर्पयामि। ॐ उग्रां तर्पयामि। ॐ उग्र-प्रभां तर्पयामि। ॐ दीप्तां तर्पयामि। ॐ नीलां तर्पयामि। ॐ घनां तर्पयामि। ॐ बलाकां तर्पयामि। ॐ मात्रां तर्पयामि। ॐ मुद्रां तर्पयामि। ॐ मितां तर्पयामि।

अब 'अष्ट-माताओं' का तर्पण इसी प्रकार करे– ॐ आं ब्राह्मीं तर्पयामि। ॐ ईं नारायणीं तर्पयामि। ॐ ऊं माहेश्वरीं तर्पयामि। ॐ ॠं चामुण्डां तर्पयामि। ॐ लृं कौमारीं तर्पयामि। ॐ ऐं अपराजितां तर्पयामि। ॐ औं वाराहीं तर्पयामि। ॐ अः नारसिंहीं तर्पयामि।

इसके बाद 'अष्ट-भैरवों' का तर्पण करे–ॐ अं असिताङ्ग-भैरवं तर्पयामि। ॐ इं रुरु-भैरवं तर्पयामि। ॐ उं चण्ड-भैरवं तर्पयामि। ॐ ऋं क्रोध-भैरवं तर्पयामि। ॐ लं उन्मत्त-भैरवं तर्पयामि। ॐ एं कपाली-भैरवं तर्पयामि। ॐ ओं भीषण-भैरवं तर्पयामि। ॐ अं संहार-भैरवं तर्पयामि।

इसी प्रकार इन्द्रादि 'दश-दि्क-पालों' का तर्पण करे– ॐ लं इन्द्रं तर्पयामि। ॐ रं अग्नि तर्पयामि। ॐ यं यमं तर्पयामि। ॐ क्षं निर्ऋतिं तर्पयामि। ॐ वं वरुणं तर्पयामि। ॐ यं वायुं तर्पयामि। ॐ शं कुबेरं तर्पयामि। ॐ हं ईशानं तर्पयामि। ॐ ह्रीं अनन्तं तर्पयामि। ॐ आं ब्रह्माणं तर्पयामि।

अब 'दिक्-पालों के आयुधों' का तर्पण करे–ॐ वं वज्रं तर्पयामि। ॐ शं शक्तिं तर्पयामि। ॐ दं दण्डं तर्पयामि। ॐ खं खड्गं तर्पयामि। ॐ पां पाशं तर्पयामि। ॐ अं अंकुशं तर्पयामि। ॐ गं गदां तर्पयामि। ॐ त्रिं त्रिशूलं तर्पयामि। ॐ चं चक्रं तर्पयामि। ॐ पं पद्मं तर्पयामि।

अन्त में श्रीमद्-दक्षिण-कालिका के अस्त्रों का तर्पण करे–

**ॐ खं खड्गं तर्पयामि। ॐ मुं मुण्डं तर्पयामि। ॐ अं अभयं तर्पयामि। ॐ वं वरं तर्पयामि।**

यदि **'परिवार-देवताओं'** और **'अङ्ग-देवताओं'** का अलग-अलग तर्पण करने में असमर्थ हो, तो उन सबको **भगवती** के साथ ही निम्न मन्त्र द्वारा सात जलाञ्जलियाँ देकर तर्पण कर सकते हैं—

**मूलं साङ्गां सपरिवारां सायुधां सवाहनां श्रीमहा-काल-शिव-सहितां श्रीमद्-दक्षिण-कालिकां तर्पयामि।**

**सन्ध्या-पूजन** करने में असमर्थ होने पर केवल **'मूल-मन्त्र'** या **इष्ट-देवता** के **'गायत्री-मन्त्र'** का ही यथा-शक्ति जप कर लेना चाहिए। **'गायत्री-जप'** के बाद **'सूर्य-देवता'** को **'अर्घ्य'** देने के लिए पहले की तरह **अर्घ्य-पात्र** को पूर्ण कर उसे उठाए और निम्न मन्त्र से जल गिराता हुआ तीन बार **अर्घ्य** प्रदान करे—

**ॐ ह्रीं हंसः मार्तण्ड—भैरवाय प्रकाश-शक्ति-सहिताय सूर्याय इदमर्घ्यं स्वाहा।**

इसके बाद **'इष्ट-देवता'** को अर्घ्य प्रदान करे। **'सूर्य-मण्डल'** में ध्यान द्वारा **'इष्ट-देवता'** की भावना करे। फिर पहले की भाँति **'अर्घ्य-पात्र'** में जल आदि भरकर, उसे उठाकर निम्न मन्त्र से **'इष्ट-देवता'** को तीन बार जल देते हुए अर्घ्य प्रदान करे—

**मूलं उद्यदादित्य-मण्डल-वर्तिन्यै ब्रह्म-चैतन्य-मय्यै महाकाल-शिव-सहिता-श्रीमद्-दक्षिण-कालिकायै इदमर्घ्यं स्वाहा।**

उक्त मन्त्र **'प्रातः—काल'** की सन्ध्या में अर्घ्य देने के लिए है। **'मध्याह्न-काल'** की सन्ध्या में **'उद्यदादित्य'** के स्थान में **'मध्याह्न'** और **'सन्ध्या-काल'** की सन्ध्या में **'सायाह्न'** शब्द जोड़कर अर्घ्य-मन्त्र पढ़ना चाहिए।

**'अर्घ्य'** देने के बाद **'मूल-मन्त्र'** अथवा इष्ट-देवता के **'गायत्री-मन्त्र'** का १०८ बार या यथा-शक्ति जप कर जप का फल **'गुह्याति-गुह्य०'** मन्त्र द्वारा **देवता के दाहिने हाथ** में अर्पित कर दे।

अन्त में **'देवता'** को नमस्कार कर **तीन बार आचमन** करे।

फिर प्राणायाम कर **'ऋष्यादि-न्यास, कर-न्यास'** और **'षडङ्ग-न्यास'** करे। तब **'इष्ट-देवता'** का ध्यान कर **'संहार-मुद्रा'** द्वारा अपने हृदय में उनका **विसर्जन** करे। इसी प्रकार तीर्थों को **'सूर्य-मण्डल'** में **विसर्जित** कर उन्हें **नमस्कार** करे।

**विशेष सूचना**—जहाँ-जहाँ **'मूलं'** शब्द लिखा है, वहाँ अपने **'इष्ट-देवता'** के **मूल-मन्त्र** का उच्चारण करे। **'मुद्राओं'** और **'उपचारों'** के सम्बन्ध में कृपया **'मुद्राएँ एवं उपचार'** नामक पुस्तक एवं **आसन, जप-माला** आदि के विशेष ज्ञान हेतु **'साधना-रहस्य'** नामक पुस्तक को ध्यान से पढ़ना चाहिए। ये दोनों प्रामाणिक एवं शोधात्मक पुस्तकें **'चण्डी-धाम'**, अलोपी देवी मार्ग, प्रयागराज (उ०प्र०) २११००६ से प्राप्त की जा सकती हैं।

***

# निशा-कालीन नित्य-पूजा

## द्वार-पूजा

स्नान आदि कर चुकने पर जल से भरा पात्र हाथ में लेकर हृदय में **'इष्ट-देवता'** का ध्यान करता हुआ **'पूजा-गृह'** के दक्षिण द्वार पर जाए। वहाँ बैठकर **'ॐ ह्रीं स्वाहा'** मन्त्र से **आचमन** करे। फिर निम्न मन्त्र पढ़कर अपने आपको **पापों से रहित** करे–

**ॐ देवि! यत् प्राकृतं चित्तं, पापाक्रान्तमभून् मनः।**
**तन्निस्सारय चित्तान्मे, पापं हुं फट् फट् ते नमः।।**

इसके बाद द्वार के आगे **'सामान्यार्घ्य-पात्र'** की स्थापना करे। पहले भूमि पर जल द्वारा **'त्रिकोण-वृत्त-चतुरस्र'** मण्डल बनाए। फिर **'आधार-शक्ति-मण्डलाय नमः'** मन्त्र से उसकी पूजा कर **'नमः'** से **'आधार'** को धोकर उस **'मण्डल'** पर स्थापित करे। तब **'ॐ रं दश-कलात्मने धर्म-प्रदाय वह्नि-मण्डलाय नमः'** मन्त्र से **आधार** का पूजन पुष्प और चन्दन द्वारा करे । फिर **'ॐ क्रः अस्त्राय फट्'** मन्त्र से **'सामान्यार्घ्य-पात्र'** को धोकर उसे उक्त **'आधार'** पर स्थापित करे। तब **'ॐ अं द्वादश-कलात्मने अर्थ-प्रदाय सूर्य-मण्डलाय नमः'** मन्त्र से उसी प्रकार **'पात्र'** का पूजन करे। फिर **'मूल-मन्त्र'** का उच्चारण करता हुआ उस **'पात्र'** में जल भरे। फिर **'ॐ उं षोडश-कलात्मने काम-प्रदाय सोम-मण्डलाय नमः'** मन्त्र से उसी प्रकार **पात्रस्थ जल** का पूजन करे।

तब निम्न मन्त्र को पढ़ता हुआ, **'अङ्कुश-मुद्रा'** से **सूर्य-मण्डल** से पात्र के जल में **तीर्थों का आवाहन** करे—

**ॐ गङ्गे च यमुने चैव, गोदावरि सरस्वति !**
**नर्मदे सिन्धु कावेरि, जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ।।**

फिर **'ॐ'** का उच्चारण कर पात्र के जल में चन्दन और पुष्प आदि छोड़े। फिर **'वं'** बीज-मन्त्र का उच्चारण कर पात्र के जल को **'धेनु-मुद्रा'** दिखाकर उसे **अमृत-मय** करे।

इस प्रकार **'सामान्यार्घ्य-पात्र'** की स्थापना कर, उसके जल को **'फट्'** मन्त्र का उच्चारण करते हुए **पूजा-गृह के द्वार** पर छिड़के। अब चन्दन और पुष्प द्वारा **'द्वार-देवताओं'** का पूजन करे—

द्वार के ऊपर मध्य में–**'गं गणपतये नमः'**, ऊपरी दाएँ कोने में-**'मं महा-लक्ष्म्यै नमः'**, बाँएँ कोने में-**'सं सरस्वत्यै नमः'**, दाहिनी शाखा में **'महा-लक्ष्मी'** के नीचे –**'वं विघ्नेशाय नमः'**, बाँईं शाखा में **'सरस्वती'** के नीचे **'क्षं क्षेत्रपालाय नमः'**, दाहिनी शाखा में **'विघ्नेश'** के नीचे– **'गं गङ्गायै नमः'**, बाँईं शाखा में **'क्षेत्रपाल'** के नीचे **'यं यमुनायै नमः'**, दाहिनी शाखा में **'गङ्गा'** के नीचे **'धां धात्र्यै नमः'**, बाँईं शाखा में **'यमुना'** के नीचे–**'विं विधात्र्यै नमः'**, देहली के दाहिने कोने में **'शं शङ्ख-निधये नमः'**, बाँएँ कोने में **'पं पद्म-निधये नमः'** और मध्य में –**'दें देहल्यै नमः'**।

इसके बाद **उत्तर दिशा** के द्वार पर **'ॐ क्रः अस्त्राय फट्'** मन्त्र से जल छिड़के। इस **द्वार के देवताओं** की पूजा भावना द्वारा करे।—देहली में **'दें देहल्यै नमः'**, दाहिनी शाखा में –**'ॐ चामुण्डायै नमः'**, बाँईं शाखा में **'ॐ महा-लक्ष्म्यै नमः'**। उसी प्रकार **पूर्व-द्वार** पर पूर्ववत् जल छिड़के और देहली की पूजा कर उसकी दाहिनी शाखा में **'ॐ वैष्णव्यै नमः'**, बाँईं शाखा में **'ॐ माहेश्वर्यै नमः'** से पूजन करे। **पश्चिम द्वार** पर पूर्व-वत् जल छिड़ककर और **देहली** का पूजन कर उसकी दाहिनी शाखा में **'ॐ वाराह्यै नमः'**, बाँईं शाखा में **'ॐ इन्द्राण्यै नमः'** से पूजा करे।

## पूजा-गृह-प्रवेश और विघ्नोत्सारण

उक्त प्रकार **'पूजा-गृह'** की चारों दिशाओं के द्वारों का पूजन कर निम्न मन्त्र से **'पूजन-गृह'** में प्रवेश करने की अनुमति **'द्वार-पाल-देवताओं'** से प्राप्त करे–

**ॐ द्वार-पाल-देव-देव्यो, द्वारं रक्षन्तु यत्नतः।**
**निवार्य विघ्न-सङ्घातं, देह्याज्ञां मे प्रवेशार्थम्।।**

आज्ञा मिल गई है–ऐसी भावना कर अपनी देह के बाँएँ भाग को सिकोड़ते हुए, दाहिने पैर को बढ़ाकर, **देहली** को लाँघ कर

'**पूजा-गृह**' में प्रवेश करे। भीतर पहुँच कर हाथ में **सरसों** और **तिल** लेकर निम्न मन्त्र द्वारा उसके विघ्नों को दूर करे—

**ॐ अपक्रामन्तु भूतानि, पिशाचाः प्रेत-गुह्यकाः।**
**ये चात्र निवसन्त्यन्ये, देवताः भुवि संस्थिताः।।**
**ॐ ह्रीं सर्व-विघ्नानुत्सारय हुं फट् स्वाहा।**

उक्त मन्त्र को पढ़ता हुआ हाथ में लिए हुए **सरसों** और **तिलों** को '**पूजा-गृह**' में बिखेर कर विघ्नों को दूर करे। फिर '**फट्**' मन्त्र से भूमि पर **बाँई एड़ी** से तीन बार ठोकर देकर '**भूमि-गत**' विघ्नों को, अपने सामने ऊपर की ओर तीन बार **ताली** बजाते हुए '**फट्**' कार कर '**अन्तरिक्ष-गत**' विघ्नों को तथा एक क्षणं तक चारों ओर **एक-टक** देखकर '**पूजा-स्थान**' के विघ्नों को दूर करे।

अब ईशान-कोण में '**ह्रौं दीप-नाथाय नमः**', नैर्ऋत्य-कोण में '**ॐ वास्तु-पुरुषाय नमः**', अग्नि-कोण में '**ॐ धात्र्यै नमः**', वायु-कोण में '**ॐ विधात्र्यै नमः**', देहली में '**ॐ देहल्यै नमः**'– इन मन्त्रों द्वारा उन-उन **देवताओं** का **चन्दन** और **पुष्प** से पूजन करे।

इसके बाद निम्न मन्त्र से हाथ जोड़कर, **भैरव** से पूजा करने की आज्ञा माँगे–

**ॐ तीक्ष्ण-दंष्ट्र ! महा-काय, कल्पान्त-दहनोपम !**
**भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातुमर्हसि ।।**

इस प्रकार अनुमति लेकर '**पूजा-स्थान**' के शोधन की क्रिया करे।

## भूमि और आसन-शोधन

हाथ में जल लेकर '**ॐ रक्ष रक्ष हुँ फट् स्वाहा**' मन्त्र पढ़ता हुआ '**पूजा-स्थान**' पर जल छिड़के। फिर '**ॐ क्रः अस्त्राय फट्**' मन्त्र द्वारा '**पूजा-स्थान**' का जल से प्रोक्षण करे और इसी मन्त्र द्वारा उस स्थान का '**कुश**' से ताड़न कर '**ॐ क्रैं कवचाय हुँ**' मन्त्र का उच्चारण कर '**पूजा-स्थान**' को ध्यान से देखे। तब उस स्थान पर हाथ रख कर निम्न मन्त्र पढ़े—

ॐ पवित्र-वज्र-भूमे ! हुँ फट् स्वाहा।

फिर 'ॐ आः सुरेखे वज्र-रेखे! हुँ फट् स्वाहा' मन्त्र पढ़ता हुआ पूजा-स्थान में एक 'त्रिकोण' बनाकर उसमें 'आधार-शक्तियों' का पूजन करे। यथा–

ॐ ह्रीं आधार-शक्तये नमः। ॐ कूं कूर्माय नमः। ॐ अं अनन्ताय नमः। ॐ वं वाराहाय नमः। ॐ लं पृथिव्यै नमः।

इस प्रकार 'पूजा-स्थान' का शोधन कर उस पर कम्बल आदि का 'आसन' बिछाए। 'आसन' के चारों कोनों में पूजन करे। यथा–आग्नेय-कोण में : 'गं गणपतये नमः'। नैर्ऋत्य-कोण में: 'सं सरस्वत्यै नमः'। वायव्य कोण में : 'दुं दुर्गायै नमः'। ईशान-कोण में : 'क्षं क्षेत्र-पालाय नमः'।

अब आसन पर हाथ रखकर निम्न 'विनियोग' आदि करे–

विनियोग : ॐ पृथ्वीति आसन-मन्त्रस्य श्रीमेरु-पृष्ठ ऋषिः। सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता। वीराद्यासनोपवेशने विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास : श्रीमेरु-पृष्ठ-ऋषये नमः शिरसि। सुतलं छन्दसे नमः मुखे। कूर्म-देवतायै नमः हृदये, वीराद्यासनोपवेशने विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

अब हाथ जोड़कर निम्न मन्त्र पढ़े—

ॐ पृथ्वि ! त्वया धृता लोका, देवि! त्वं विष्णुना धृता।

त्वं च धारय मां देवि ! पवित्रं कुरु चासनम्।।

## श्री गुरु आदि का स्मरण

अब पूर्व की ओर मुख करके आसन पर बैठे और–'ॐ आत्म-तत्त्वाय स्वाहा, ॐ विद्या-तत्त्वाय स्वाहा, ॐ शिव-तत्त्वाय स्वाहा, ॐ सर्व-तत्त्वाय स्वाहा' इन मन्त्रों द्वारा चार बार आचमन कर अपने बाँएँ कन्धे की ओर हाथ जोड़कर गुरुओं को 'ॐ गुं गुरुभ्यो नमः' से, दाहने कन्धे की ओर श्री गणेश को 'ॐ गं गण-पतये नमः' से और इन दोनों के मध्य, अपने सामने, इष्ट-देवता को–'ॐ क्रीं श्रीमद्-दक्षिण-कालिकायै नमः' से नमस्कार करे ।

## सामान्यार्घ्य-पात्र और पूजोपकरणों का स्थापन

अपनी बाँईं ओर पूर्व-वत् **'सामान्यार्घ्य-पात्र'** की स्थापना करे। उसका कुछ जल **'प्रोक्षणी-पात्र'** में छोड़े। उस जल को पुष्पादि पूजा-सामग्री पर और अपने ऊपर छिड़के । तब सामग्री को अपने दाहिने ओर स्थापित करे। अपनी पीठ के पीछे हाथ आदि धोने के लिए जल से पूर्ण एक पात्र की स्थापना करे। तब अपने सामने जिस स्थान पर **'यन्त्र-राज'** की स्थापना करनी है, उस स्थान पर एक **'चौकी'** या अन्य कोई ऊँचा आसन रखे। उसके आगे **'घृत'** और **'तेल'** के **'दीपक-पात्र'** स्थापित कर दीपों को जला दे। फिर अपनी बाँईं ओर **'कुल-द्रव्य'** तथा नैवेद्यार्थ अन्न के बने पदार्थ विविध पात्रों में रखकर उन्हें शुद्ध वस्त्र से ढँक दे।

इसके बाद निम्न मन्त्रों को पढ़ता हुआ **'सामान्यार्घ्य'** का जल पुष्पों पर छिड़क कर उन्हें शुद्ध करे–

**ॐ पुष्प-केतु राजार्हते शताय सम्यक् संवर्द्धाय शताभिषेके हुं फट् स्वाहा। ॐ पुष्पे पुष्पे महा-पुष्पे सु-पुष्पे पुष्प-सम्भवे पुष्प-चयावकीर्णे हुं फट् स्वाहा।**

अब **चन्दन, अक्षत** आदि अन्य पूजा-सामग्री पर हाथ रखकर **'हाँ हुं फट्'** मन्त्र द्वारा उन सबको अभिमन्त्रित करे। फिर सारी सामग्री को **'नाराच-मुद्रा'** दिखा कर और उन्हें **'दिव्य दृष्टि'** (एक-टक दृष्टि) से देखकर उन सबको शुद्ध करे। तब **'सिंहासन'** के आगे जलते हुए **दीपों की लौ** को **अग्नि-बीज 'रं'** का उच्चारण करते हुए स्पर्श करे। फिर **'ॐ हुं फट् स्वाहा'** मन्त्र का उच्चारण कर अपने **शरीर, वाणी** और **चित्त** का **शोधन** करे। तदनन्तर अपने हृदय पर हाथ रखकर **'ॐ रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा'** मन्त्र द्वारा अपनी रक्षा करे। तब **चन्दन** लगे हुए कुछ **पुष्प** लेकर दोनों हाथों से उनका मर्दन कर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए उन्हें **बाँएँ हाथ** में लेकर सूँघे और **ईशान-कोण** की ओर फेंक दे—

**हौं ! ते सर्वे विलयं यान्तु, ये मां हिंसन्ति हिंसकाः ।**
**मृत्यु-रोग-भय-क्लेशाः, पतन्तु रिपु-मस्तके ।।**

## दिग्-बन्धन

अब मूल-मन्त्र का उच्चारण कर, तीन बार 'फट्'कार करे अर्थात् बाँईं हथेली पर, दाईं तर्जनी-मध्यमा से ताल देकर अपने चारों ओर आठों दिशाओं में एवं ऊपर और नीचे दाँएँ अँगूठे-मध्यमा से क्रमशः दस बार चुटकी बजा कर दसों दिशाओं का बन्धन करे। यह 'दिग्-बन्धन' निम्न मन्त्रों को पढ़ते और निर्दिष्ट दिशाओं में चुटकी बजाते हुए करना चाहिए—

पूर्व दिशा में : लं इन्द्राय हेम-वर्णाय सुराधिपतये साङ्गाय स-परिवाराय सायुधाय स-वाहनाय नमः।

आग्नेय कोण में : रं अग्नये रक्त-वर्णाय तेजोऽधिपतये साङ्गाय स-परिवाराय सायुधाय स-वाहनाय नमः।

दक्षिण दिशा में : यं यमाय तमाल-नीलाय प्रेताधिपतये साङ्गाय स-परिवाराय सायुधाय स-वाहनाय नमः।

नैर्ऋत्य कोण में : क्षं नैर्ऋताय गलिताञ्जन-वर्णाय रक्षोऽधिपतये साङ्गाय स-परिवाराय सायुधाय स-वाहनाय नमः।

पश्चिम दिशा में : वं वरुणाय शुक्ल-वर्णाय जलाधिपतये साङ्गाय स-परिवाराय सायुधाय स-वाहनाय नमः।

वायव्य कोण में : यं वायवे धूम्र-वर्णाय मरुत्-पतये साङ्गाय स-परिवाराय सायुधाय स-वाहनाय नमः।

उत्तर दिशा में : शं कुबेराय सौम्य-भास्वर-रूपाय यक्षाधिपतये साङ्गाय स-परिवाराय सायुधाय स-वाहनाय नमः।

ईशान कोण में : हं ईशानाय कर्पूर-गौराय विद्याधिपतये साङ्गाय स-परिवाराय सायुधाय स-वाहनाय नमः।

आकाश में (ऊपर की ओर) : अं ब्रह्मणे सकल-वाङ्-मुख-पतये साङ्गाय स-परिवाराय सायुधाय स-वाहनाय नमः।

पाताल में (नीचे की ओर) : ह्रीं अनन्ताय रजताद्रि - धवलाय सहस्र - मण्डल - रत्नाकर - निकरोद्भासित - दिगन्तराय नागाधिपतये साङ्गाय स - परिवाराय सायुधाय स - वाहनाय नमः।

## कुल्लुकादि मन्त्रों का चिन्तन

'दिग्-बन्धन' करने के बाद 'कुल्लुकादि' मन्त्रों का चिन्तन करे। यथा–

(१) **'कुल्लुका': 'क्रीं हूं स्त्रीं हीं फट्'** का जप १२ बार शिर में करे। (२) **'सेतु': 'ॐ'** का जप १२ बार हृदय में करे। (३) **'महा-सेतु': 'क्रीं'** का जप १२-१२ बार **विशुद्धि-चक्र** एवं **सहस्रार** में करे। (४) **'निर्वाण' : 'ॐ अं मूलं ऐं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः, कं खं गं घं ङं, चं छं जं झं ञं, टं ठं डं ढं णं, तं थं दं धं नं, पं फं बं भं मं, यं रं लं वं, शं षं सं हं ळं क्षं ॐ'** का **नाभि** में चिन्तन करे। (५) **'काम-प्रद मन्त्र': 'क्लीं'** का भी चिन्तन **नाभि** में करे। (६) **'रक्षा-मन्त्र': ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्रीं रां रीं रूं रैं रौं रः रमलवरयूं राकिनि! मां रक्ष रक्ष, मम सर्व-धातून् रक्ष रक्ष, सर्व-सत्त्व-वशङ्करि देवि! आगच्छागच्छ, इमां पूजां गृह्ण गृह्ण। ऐं घोरे देवि, घोरे देवि ! ह्रीं सः, परम-घोरे घोर-स्वरूपे! एह्येहि। नमश्चामुण्डे! डरलकसहैं, श्रीदक्षिणे कालिके देवि वरदे विद्ये !'** इस मन्त्र का **शिर** में चिन्तन करे।

अब **'क्रीं'** बीज का तीन बार उच्चारण कर तीन **आचमन** करे। फिर **'ॐ काल्यै नमः'** का उच्चारण कर ऊपरी ओष्ठ का और **'ॐ कपालिन्यै नमः'** से निचले ओठ का स्पर्श करे। **'ॐ कुल्लायै नमः'** से हाथ को धो डाले। तब निम्न मन्त्रों का उच्चारण करते हुए निर्दिष्ट अङ्गों का स्पर्श करे–

**'ॐ कुरु-कुल्लायै नमः'**– मुख-छिद्र। **'ॐ विरोधिन्यै नमः'**–दायाँ नासा-छिद्र। **ॐ विप्र-चित्तायै नमः**–बाँयाँ नासा-छिद्र। **ॐ उग्रायै नमः**–दायाँ नेत्र। **ॐ उग्र-प्रभायै नमः**–बाँयाँ नेत्र। **ॐ दीप्तायै नमः**–दायाँ कर्ण-छिद्र । **ॐ नीलायै नमः**- बाँयाँ कर्ण-छिद्र। **ॐ घनायै नमः**–नाभि। **ॐ वलाकायै नमः**–वक्ष (छाती)। **ॐ मात्रायै नमः**–शिर। **ॐ मुद्रायै नमः**–दायाँ हाथ । **ॐ मितायै नमः**–बाँयाँ हाथ।

इसके बाद पुनः **दसों दिशाओं** में चुटकियाँ बजाते हुए **'ह्रूं ह्रूं ह्रीं अस्त्राय फट्'** का उच्चारण कर **दिग्-बन्धन** करे। तदनन्तर हाथ में **जल-अक्षत-पुष्प** लेकर **'सङ्कल्प'** करे—

**ॐ तत् सत् ! अद्य ब्रह्मणोऽह्नि ....... श्रीमहा-काल-शिव-सहित-श्रीमद्-दक्षिण-कालिका-प्रीतये-भूत-शुद्ध्यादि-मानसिक-जप-पूजनमहं करिष्ये।**

## भूत-शुद्धि एवं मानसिक जपादि

अपने शिर के भीतर **'मातृका-वर्ण-अङ्कित सहस्त्रार'** का ध्यान करे। वहाँ **'दीप-नाथ'** की प्रार्थना करे। यथा—

**ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वं मेदात्मक खड्गीशाय वर्णेशानन्दनाथाय अति-रक्त-वर्णाय रक्त-द्वादश-शक्ति-युक्ताय अस्मिन् क्षेत्रे इमां पूजां गृहण-गृहण स्वाहा।**

फिर **'श्री भैरव'** से पूजा करने की आज्ञा माँगे—

**ॐ तीक्ष्ण-दंष्ट्र, महा-काय, कल्पान्त-दहनोपम !**
**भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातुमर्हसि ।।**

इसके बाद **'सहस्त्रार'** में **गुरुदेव** का ध्यान कर उनका पूजन करे। फिर हाथ जोड़कर उन्हें नमस्कार करे।

अब साधक **मूलाधार** में मन को लगाकर दाहिने हाथ के अँगूठे से **दाहिने नासा-पुट** को दबाए। फिर **सोलह** बार **'प्रणव'** **(ॐ)** को जपता हुआ **वाम-नासा-पुट** से वायु को भीतर खींचे। तब **अनामिका** और **कनिष्ठा** से **वाम-नासा-पुट** को भी बन्द कर दे और वायु को भीतर भरे रहकर **चौंसठ** बार **'ॐ'** का जप करे। फिर **दाहिने नासा-पुट** को खोल दे और **बत्तीस** बार **'ॐ'** का जप करता हुआ वायु को बाहर निकाल दे। यह पहला **'प्राणायाम'** हुआ। इसके विपरीत पुनः करे। यह दूसरा **'प्राणायाम'** हुअ। पहले की भाँति पुनः करे। यह तीसरा **'प्राणायाम'** हुआ। इस प्रकार तीन बार करने से एक **'प्राणायाम'** होता है।

यदि मूल-मन्त्र से **'प्राणायाम'** करना हो, तो मन्त्र के एक बार के जप से **'पूरक'**, चार बार के जप से **'कुम्भक'** और दो

बार के जप से **'रेचक'** करे। इसी क्रम से उलट-पुलट कर पुनः दो बार करे। इस प्रकार **'मूल-मन्त्र'** से तीन बार करने से एक **'प्राणायाम'** होगा।

अब पूर्वोक्त सिंहासन पर एक पुष्प रखकर उस पर **'यन्त्र-राज'** को स्थापित करे। उसके बाद **'भूत-शुद्धि'** करे। यथा—

## भूत-शुद्धि

**'हुँ'** बीज का उच्चारण कर **'मूलाधार'** में सोई हुई **'कुण्डलिनी-शक्ति'** को जगाए। फिर **'हंसः'** मन्त्र को पढ़कर जीवात्मा को वहाँ ले जाकर **'कुण्डलिनी-शक्ति'** से उसका संयोग करे। तब **'सोऽहं'** मन्त्र का उच्चारण कर उन दोनों को **'परमात्मा'** में लय करे। इसके बाद हाथ जोड़कर निम्न-लिखित विनियोग पढ़े—**ॐ अस्य श्रीपञ्च- महा - भूत - मन्त्रस्य अत्रि - भरद्वाज-ब्रह्मेन्द्रेश्वराः ऋषयः। गायत्री - त्रिष्टुप् - अनुष्टुप् - वृहती - पंक्तयः छन्दांसि। समीरणाग्नि - जल - पृथिव्याकाशो देवता। शोषण - दाहन-प्लावन- पिण्डीकरण - स्थापनार्थे जपे विनियोगः।**

अब ऋष्यादि न्यास करे। यथा—**अत्रि-भरद्वाज-ब्रह्मेन्द्रेश्वर-ऋषिभ्यो नमः शिरसि। गायत्री-त्रिष्टुप्-अनुष्टुप्-वृहती-पंक्ति-छन्दोभ्यो नमः मुखे। समीरणाग्नि-जल-पृथिव्याकाश-देवताभ्यो नमः हृदि। शोषण-दाहन-प्लावन-पिण्डीकरण-स्थापनार्थे जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।**

अब **'कर-न्यास'** करे। यथा—

**ॐ लं पृथिव्यात्मने अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ वं अपात्मने तर्जनीभ्यां स्वाहा। ॐ रं अग्न्यात्मने मध्यमाभ्यां वषट्। ॐ यं वाय्वात्मने अनामिकाभ्यां हुँ। ॐ हं आकाशात्मने कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। ॐ लं वं रं यं हं पृथिव्यप्-तेजो-वाय्वाकाशात्मने कर-तल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्।**

इसी प्रकार **'हृदयादि-न्यास'** करे। न्यास कर चुकने पर अपनी गोद में दोनों हथेलियों को ऊर्ध्व-मुख स्थापित करे। फिर **'हंसः'**

मन्त्र का उच्चारण कर कली के आकार-वाले 'जीवात्मा' को 'मूलाधार' में स्थित 'कुण्डलिनी-शक्ति' के पास ले जाय। उसके साथ 'सुषम्ना नाड़ी' के मार्ग से 'छहो' चक्रों को भेदता हुआ शिर में स्थित 'सहस्र-दल-कमल' की कर्णिका में स्थित 'परमात्मा' में उन दोनों को संयुक्त करे। फिर उस 'सहस्रार' में १. पृथिवी, २. अप्, ३. तेज, ४. वायु, ५. आकाश, ६. गन्ध, ७. रस, ८. रूप, ९. स्पर्श, १०. शब्द, ११. नासिका, १२. जिह्वा, १३. चक्षु, १४. त्वक्, १५. श्रोत्र, १६. वाक्, १७. पाणि, १८. पाद, १९.पायु, २०. उपस्थ, २१.प्रकृति, २२. मन, २३. बुद्धि और २४. अहङ्कार—इन चौबीस तत्त्वों को लय करने की भावना करे।

(१) इसके बाद पैर से लेकर गाँठी तक 'पृथिवी-मण्डल' के चतुरस्र में 'वज्र-लाञ्छित' ब्रह्मा देवता का पीत-वर्ण 'लं' बीज से युक्त ध्यान करे।

(२) अब जानु से लेकर नाभि-पर्यन्त 'जल-मण्डल' के अर्द्ध-चन्द्राकार में शुक्ल वर्ण, पार्श्व में 'पद्म-लाञ्छित' विष्णु देवता का, 'वं' बीज-युक्त ध्यान करे।

(३) तब नाभि से लेकर हृदय तक 'अग्नि-मण्डल' के त्रिकोणाकार में 'स्वस्तिक से लाञ्छित' रक्त-वर्ण रुद्र देवता का, 'रं' बीज-युक्त ध्यान करे।

(४) अब हृदय से लेकर कण्ठ तक 'वायु-मण्डल' के 'षट्-कोणाकार' में 'षट्-बिन्दु' से 'लाञ्छित' कृष्ण-वर्ण ईश्वर देवता का 'यं' बीज-युक्त ध्यान करे।

(५) कण्ठ से लेकर भौंह तक 'आकाश-मण्डल' के नील ध्वजा से लाञ्छित, धूम्र-वर्ण 'वृत्ताकार' में सदा-शिव देवता का, 'हं' बीज-युक्त ध्यान करे।

उक्त प्रकार पञ्च-भूतों का, उनके देवताओं और बीजों आदि का ध्यान करता हुआ और एक भूत का दूसरे में लय करता हुआ ध्यानस्थ हो जाय। फिर अपनी बाँई कोख में काले रङ्ग के 'पाप-पुरुष' का ध्यान करे। यथा—

ब्रह्म-हत्या-शिर-स्कन्ध - स्वर्ण-स्तेय-भुज-द्वयम् ।
सुरा-पान-हृद्-युक्तं, गुरु-तल्प-कटि-द्वयम् ।।
तत्-संसर्गि पद-द्वन्द्वमङ्ग-प्रत्यङ्ग-पातकम् ।
उप-पातक-रोमाणं, रक्त-श्मश्रु-विलोचनम् ।।
खड्ग-चर्म-धरं, पापमंगुष्ठ-परिमाणकम् ।
अधो-मुखं कृष्ण-वर्णं, वाम-कुक्षौ विचिन्तये ।।

इस प्रकार **'पाप-पुरुष'** के स्वरूप का ध्यान कर **धूम्र-वर्ण** के **'यं'** वायु-बीज का १६ बार जप करता हुआ बाँईं नासा से वायु खींचता हुआ **'पाप-पुरुष'**-सहित पाप-युक्त देह का शोषण करे। फिर **रक्त-वर्ण** के **'रं'** बीज का चौंसठ बार जप करता हुआ **'पाप-पुरुष'** सहित पाप-देह को कुम्भक द्वारा जला दे। फिर **धूम्र-वर्ण** के **'यं'** वायु-बीज का बत्तीस बार जप करता हुआ दाहिनी नासा से **'पाप-पुरुष'** आदि की राख को बाहर उड़ाकर दाहिने नासा-मार्ग से निकाल दे।

अब **शुक्ल वर्ण** के चन्द्र-बीज **'ठं'** का वाम नासा में १६ बार जप करता हुआ, अपने ललाट में **चन्द्रमा** का आवाहन करे। फिर **'वं'** वरुण-बीज का चौंसठ बार जप करता हुआ **मातृका वर्णों** से अङ्कित उक्त **चन्द्र-मण्डल** से अमृत की वर्षा करा कर उससे भस्मीभूत शरीर की राख को अमृत से तर करे। फिर **पीत-वर्ण** के **'लं'** पृथिवी-बीज का चौंसठ बार जप करता हुआ उस राख के बने हुए शरीर के अवयवों को कुम्भक द्वारा सुदृढ़ करे। फिर **'हं'** आकाश-बीज का बत्तीस बार जप करता हुआ वायु को दाहिनी नासा से निकाल दे और यह समझे कि उसकी देह तेज-पूर्ण होकर पुनः अस्तित्व में आ गई है और वह देवता की आराधना करने के योग्य हो गई है।

इसी देह में सर्व-शक्तिमान् **परमात्मा** जीवात्मा के रूप में विद्यमान रहता है।

अब ब्रह्म-रन्ध्र से लेकर भौहों तक **'ॐ ह्रौं सदा-शिवाय व्योमाधि-पतये शान्ति-कलात्मने नमः'** मन्त्र पढ़कर **'आकाश'** के

अधिपति **'सदा-शिव'** के व्याप्त होने की भावना करे। फिर भौहों से लेकर हृदय तक **'ॐ ह्रौं ईश्वराय वाय्वधिपतये पीता-कलात्मने नमः'** मन्त्र पढ़कर **'वायु'** के अधिपति **'ईश्वर'** के व्याप्त होने की भावना करे। फिर हृदय से लेकर नाभि तक **'ॐ ह्रौं रुद्राय अग्न्यधिपतये तीक्ष्णा-कलात्मने नमः'** मन्त्र पढ़कर **'अग्नि'** के अधिपति **'रुद्र'** के व्याप्त होने की भावना करे। फिर नाभि से लेकर जानु तक **'ॐ 'क्लीं विष्णवे अपाधिपतये जरा-कलात्मने नमः'** मन्त्र पढ़कर **'जल'** के अधिपति **'विष्णु'** के व्याप्त होने की भावना करे। फिर जानु से लेकर पाद तक **'ॐ ह्रां ब्रह्मणे पृथिव्यधिपतये पुष्टि-कलात्मने नमः'** मन्त्र पढ़कर **'पृथिवी'** के अधिपति **'ब्रह्मा'** के व्यापक होने की भावना करे। फिर **परमात्मा** को **प्रकृति** में, **प्रकृति** को **महत्-तत्त्व** में, **महत्-तत्त्व** को **अहङ्कार** में, **अहङ्कार** को **आकाश** में, **आकाश** को **वायु** में, **वायु** को **अग्नि** में, **अग्नि** को **जल** में, **जल** को **पृथ्वी** में व्याप्त होने की भावना करे। **पृथिवी** से **वनस्पति**, **वनस्पति** से **अन्न** और **अन्न** से **पुरुष** की भावना करे।

प्रत्येक **तत्त्व** को यथा-क्रम उसके स्थान में स्थापित कर चुकने के बाद पूर्व-वत् **विलोम-क्रम** से **प्राणायाम** के द्वारा **'परमात्मा'** के पास से **'ब्रह्म-रन्ध्र'** के स्थान से **'हंसः'** बीज जपता हुआ **कलिकाकार-'जीवात्मा'** को **'कुण्डलिनी-शक्ति'** के साथ हृदय में लाकर उसे वहाँ स्थापित करे। फिर पूर्व-वत् **'हुँ'** बीज जपता हुआ **'कुण्डलिनी-शक्ति'** को वहाँ से ले जाकर **'मूलाधार-चक्र'** में स्थापित करे।

इस प्रकार **'भूत-शुद्धि'** की प्रक्रिया से अपने शरीर को निष्पाप करके उसे देवता के पूजन करने के योग्य बनाए और अपने को **'देवी'** के रूप में भावित करे।

## प्राण-प्रतिष्ठा

**विनियोग—ॐ अस्य श्रीप्राण-प्रतिष्ठा-मन्त्रस्य ब्रह्मा-विष्णु-महेश्वरा ऋषयः। ऋग्-यजुः-सामाथर्वाणि छन्दांसि। प्राणाख्या-परा-प्राण-शक्तिः देवता। आं बीजं। ह्रीं शक्तिः। क्रों कीलकं।**

मम प्राणाख्या परा-प्राण-शक्तिर्देवता-प्रसन्नता-सिद्ध्यर्थे श्रीमद् - दक्षिणा-कालिका-मन्त्राङ्गत्वेन न्यासे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास—ब्रह्मा-विष्णु-महेश्वर-ऋषिभ्यो नमः शिरसि, ऋग्-यजु-सामाथर्वा छन्दोभ्यो नमः मुखे, प्राणाख्या-परा-प्राण-शक्ति-देवतायै नमः हृदये। आं बीजाय नमो गुह्ये। ह्रीं शक्त्यै नमः पादयोः। क्रो कीलकाय नमः नाभौ। मम प्राणाख्या-परा-प्राण-शक्तिर्देवता-प्रसन्नता-सिद्ध्यथे श्रीमद्-दक्षिण-कालिका-मन्त्राङ्ग त्वेन न्यासे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

कर-न्यास—अं, ङं कं खं घं गं आं पृथव्यप्-तेजो-वाय्वाकाशात्मने अंगुष्ठाभ्यां नमः। इं, ञं चं छं झं जं ईं शब्द-स्पर्श-रूप-रस-गन्धात्मने तर्जनीभ्यां नमः। उं, णं टं ठं ढं डं ऊं श्रोत्र-त्वक्-चक्षुर्जिह्वा-घ्राणात्मने मध्यमाभ्यां नमः। एं, नं तं थं धं दं ऐं वाक्-पाणि-पाद-पायूपस्थात्मने अनामिकाभ्यां नमः। ओं, मं पं फं भं बं औं वचनादान-गमन-विसर्गानन्दात्मने कनिष्ठिकाभ्यां नमः। अं, हं यं रं लं वं शं षं सं क्षं ळं अः मनो-बुद्ध्यहङ्कार-चित्त-विज्ञानात्मने करतल-कर-पृष्ठाभ्यां नमः।

षडङ्ग-न्यास—अं, ङं कं खं घं गं आं पृथिव्यप्-तेजो-वाय्वाकाशात्मने हृदयाय नमः। इं, ञं चं छं झं जं ईं शब्द - स्पर्श-रूप-रस-गन्धात्मने शिरसे स्वाहा। उं, णं टं ठं ढं डं ऊं श्रोत्र-त्वक्-चक्षुर्जिह्वा-घ्राणात्मने शिखायै वषट्। एं, नं तं थं धं दं ऐं वाक्-पाणि-पाद-पायूपस्थात्मने कवचाय हुँ। ओं, मं पं फं भं बं औं वचनादान-गमन-विसर्गानन्दात्मने नेत्र-त्रयाय वौषट्। अं, हं यं रं लं वं शं षं सं क्षं ळं अः मनो-बुद्ध्यहङ्कार-चित्त-विज्ञानात्मने अस्त्राय फट् ।

ध्यान—

ॐ रक्ताम्भोधिस्थ - पोतोल्लसदरुण - सरोजाधि - रूढा कराब्जैः,
पाशं कोदण्डमिक्षूद्भवमलि - गुणमप्यंकुशं पञ्च-वाणान्।
विभ्राणा सृक्कपालं त्रिनयन - लसितापीन - वक्षोरुहाढ्या।
देवी बालार्क - वर्णा भवतु सुख - करी प्राण - शक्तिः परा नः।।

इस प्रकार 'प्राण-शक्ति' का ध्यान कर मानसोपचारों से 'प्राण-शक्ति' का पूजन करे। फिर छाती पर हाथ रखकर निम्न मन्त्र पढ़कर 'प्राण-शक्ति' की प्रतिष्ठा करे–

**'ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं हौं हंसः सोऽहं मम प्राणाः इह प्राणाः।'**

**'ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं हौं हंसः सोऽहं मम जीव इह स्थितः।'**

**'ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं हौं हंसः सोऽहं मम सर्वेन्द्रियाणि इह स्थितानि।'**

**'ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं हौं हंसः सोऽहं मम वाङ्-मनस्त्वक्-चक्षुः-जिह्वा-घ्राण-प्राण-पदानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।'**

इस प्रकार 'प्राण-प्रतिष्ठा' कर चुकने के बाद 'प्राणों के 'गर्भाधान' आदि षोडश संस्कार करने के स्थान में नीचे लिखे मन्त्र का सोलह बार जप करे और यह समझे कि इस जप द्वारा गर्भाधान आदि संस्कार सम्पन्न हो गए—**'ॐ क्षं शं हंसः ह्रीं ॐ'** अथवा केवल **'ॐ'** का ही जप करे।

## मूल-मन्त्र का विनियोगादि

इसके बाद **'श्री दक्षिणा कालिका'** के **मूल-मन्त्र** का विनियोगादि करे। यथा—

**विनियोग—ॐ अस्य श्रीदक्षिण-कालिका-मन्त्रस्य भैरव ऋषिः। उष्णिक् छन्दः। श्रीदक्षिण-कालिका देवता। ह्रीं बीजं। हूँ शक्तिः। क्रीं कीलकं। मम सर्वाभीष्ट-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।**

**ऋष्यादि-न्यास—भैरव-ऋषये नमः शिरसि। उष्णिक्-छन्दसे नमः मुखे। श्रीदक्षिण-कालिका-देवतायै नमः हृदि। ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये। हूँ शक्तये नमः पादयोः। क्रीं कीलकाय नमः नाभौ। मम सर्वाभीष्ट-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।**

**कर-न्यास—ॐ क्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ क्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ क्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ क्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ**

**क्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ क्रः करतल-कर-पृष्ठाभ्यां नमः।**

**षडङ्ग-न्यास**—**ॐ क्रां हृदयाय नमः** (तर्जनी-मध्यमा-अनामिका से)। **ॐ क्रीं शिरसे स्वाहा** (तर्जनी, मध्यमा से)। **ॐ क्रूं शिखायै वषट्** (बद्ध-मुष्टि अधो-मुख अंगुष्ठ से)। **ॐ क्रैं कवचाय हुँ** (दोनों हाथों की अधो-मुख हथेलियों से छाती के ऊपर)। **ॐ क्रौं नेत्र-त्रयाय वौषट्** (तर्जनी-मध्यमा-अनामिका से तीनों नेत्रों को छुए)। **ॐ क्रः अस्त्राय फट्** (तर्जनी, मध्यमा से तीन बार ताल देकर)।

**षडङ्ग-न्यास** कर चुकने पर अपने शिर के चारों ओर चुटकी बजा कर **दिग्-बन्धन** कर पुनः पहले की भाँति **'ऋष्यादि न्यास'** कर **मूल-मन्त्र** के तीन **खण्डों से** कर-न्यास तथा षडङ्ग-न्यास करे। यथा—

**कर-न्यास—क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः। दक्षिण-कालिके तर्जनीभ्यां नमः। क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा मध्यमाभ्यां नमः। क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं अनामिकाभ्यां नमः। दक्षिण-कालिके कनिष्ठिकाभ्यां नमः। क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः।**

**षडङ्ग-न्यास—क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं हृदयाय नमः। दक्षिण-कालिके शिरसे स्वाहा। क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा शिखायै वषट्। क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं कवचाय हुँ। दक्षिण-कालिके नेत्र-त्रयाय वौषट्। क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा अस्त्राय फट्।**

* **वर्ण-न्यास—अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं नमः (हृदय में)। एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं नमः (दाहिनी भुजा में)। ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं नमः बाँई भुजा में। णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं नमः (दक्षिण पाद में)। मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं नमः (वाम पाद में)।** वर्णों का यह न्यास **'तत्त्व-मुद्रा'** से करे।

**व्यापक-न्यास—'मूल-मन्त्र'** का मन में उच्चारण करता हुआ

पैर से शिर तक अपने दोनों हाथ ले जाय। फिर 'मूल-मन्त्र' का मन में उच्चारण करता हुआ, शिर से पैर तक अपने दोनों हाथ ले आए। इस प्रकार 'मूल-मन्त्र' का व्यापक न्यास करके यह भावना करे कि उसका शरीर 'मन्त्र' के वर्णों से व्याप्त है।

## अन्तर्मातृका-न्यास

अब 'अन्तर्मातृका' न्यास करे। पहले प्राणायाम करे। स्वरों से 'पूरक'—'अं' से लेकर 'अः' तक, 'कं' से लेकर 'मं' तक के वर्णों से 'कुम्भक' और 'यं' से लेकर 'क्षं' तक के वर्णों से 'रेचक' करे।

विनियोग—ॐ अस्य अन्तर्मातृका-न्यास-मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः। गायत्री छन्दः। श्रीअन्तर्मातृका-सरस्वती देवता। व्यञ्जनाः बीजानि। स्वराः शक्तयः। अव्यक्तं कीलकं। दक्षिण-कालिकाऽङ्गत्वेन अन्तर्मातृका-न्यासे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास—ॐ ब्रह्मणे ऋषये नमः शिरसि। ॐ गायत्री-छन्दसे नमः मुखे। ॐ अन्तर्मातृका-सरस्वती-देवतायै नमः हृदये। ॐ व्यञ्जन-बीजेभ्यो नमः गुह्ये। ॐ स्वराः शक्तिभ्यो नमः पादयोः। ॐ अव्यक्त-कीलकाय नमः नाभौ। ॐ दक्षिण-कालिकायाः पूजाङ्गत्वेन अन्तर्मातृका-न्यासे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

कर-न्यास—ॐ अं कं खं गं घं ङं आं अंगुष्ठाभ्यां नमः। इं चं छं जं झं ञं ईं तर्जनीभ्यां नमः। उं टं ठं डं ढं णं ऊं मध्यमाभ्यां नमः। एं तं थं दं धं नं ऐं अनामिकाभ्यां नमः। ओं पं फं बं भं मं औं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। अं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं अः करतल-कर-पृष्ठाभ्यां नमः।

षडङ्ग-न्यास—अं कं खं गं घं ङं आं हृदयाय नमः। इं चं छं जं झं ञं ईं शिरसे स्वाहा। उं टं ठं डं ढं णं ऊं शिखायै वषट्। एं तं थं दं धं नं ऐं कवचाय हुं। ओं पं फं बं भं औं नेत्र-त्रयाय वौषट्। अं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं अः अस्त्राय फट्।

ध्यान—

आधारे लिङ्ग-नाभौ प्रकटित-हृदये ताल-मूले ललाटे ।
द्वे पत्रे षोडशारे द्वि-दश-दश-दले द्वादशार्धे चतुष्के ।।
वासान्ते बाल-मध्ये डफ-कठ-सहिते कण्ठ-देशे स्वराणाम् ।
हं-क्षं तत्वार्थ-युक्तं सकल-दल-गतं वर्ण-रूपं नमामि ।।

इस प्रकार **'न्यास'** एवं **'ध्यान'** करके **'अन्तर्मातृका सरस्वती देवता'** का मानसोपचारों से पूजन करे। फिर रीढ़ की पोल में यथा-स्थान स्थित **'षट्-चक्रों'** में मातृका-वर्णों का न्यास **'तत्त्व-मुद्रा'** से करे। यथा—

१. **'कण्ठ'** के पीछे स्थित **षोडश**-दलवाले **'विशुद्ध चक्र'** में निम्न वर्णों का वामावर्त्त से न्यास करे। **(धूम्र-वर्ण १६ दलो में)–ॐ अं नमः, ॐ आं नमः, ॐ इं नमः, ॐ ईं नमः, ॐ उं नमः, ॐ ऊं नमः, ॐ ऋं नमः, ॐ ॠं नमः, ॐ लृं नमः, ॐ लॄं नमः, ॐ एं नमः, ॐ ऐं नमः, ॐ ओं नमः, ॐ औं नमः, ॐ अं नमः, ॐ अः नमः।**

२. **'हृदय-स्थान'** के पीछे की ओर स्थित **बारह** दलवाले **'अनाहत चक्र'** के प्रत्येक दल में निम्न वर्णों का न्यास करे (**रक्त-वर्ण** १२ दलो में)–**ॐ कं नमः, ॐ खं नमः, ॐ गं नमः, ॐ घं नमः, ॐ ङं नमः। ॐ चं नमः, ॐ छं नमः ॐ जं नमः, ॐ झं नमः, ॐ ञं नमः ॐ टं नमः, ॐ ठं नमः।**

३. **'नाभि-स्थान'** के पीछे की ओर स्थित **दश**-दलवाले **'मणिपूर चक्र'** के प्रत्येक दल में निम्न वर्णों का न्यास करे–(**मेघ-वर्ण** १० दले में)—**ॐ डं नमः ॐ ढं नमः ॐ णं नमः। ॐ तं नमः, ॐ थं नमः, ॐ दं नमः, ॐ धं नमः, ॐ नं नमः, ॐ पं नमः, ॐ फं नमः।**

४. **'लिङ्ग-मूल'** के पीछे की ओर स्थित **छः**-दलवाले **'स्वाधिष्ठान चक्र'** के प्रत्येक दल में निम्न वर्णों का न्यास करे (**विद्युत् वर्ण** ६ दलो में)—**ॐ बं नमः, ॐ भं नमः, ॐ मं नमः। ॐ यं नमः ॐ रं नम, ॐ लं नमः।**

५. 'मल-द्वार' के पीछे की ओर स्थित चार-दलवाले 'मूलाधार चक्र' के प्रत्येक दल में निम्न वर्णों का न्यास करे (सुवर्ण-वर्ण ४ दलों में)—ॐ वं नमः, ॐ शं नमः, ॐ षं नमः, ॐ सं नमः।

६. 'तालु-मूल' के पीछे की ओर स्थित दो-दलवाले 'आज्ञा चक्र' के प्रत्येक दल में निम्न वर्णों का न्यास करे-(श्वेत-वर्ण २ दलो में)—ॐ हं नमः, ॐ क्षं नमः।

यथा-विधि 'अन्तर्मातृका-न्यास' कर चुकने पर 'बहिर्मातृका-न्यास' करे। 'बहिर्मातृका-न्यास' के अन्तर्गत 'सृष्टि, स्थिति' और 'संहार-क्रमं' के न्यास हैं, जो इस प्रकार है—

## बहिः-सृष्टि-मातृका-न्यास

उक्त न्यास का 'विनियोग' करने के पहले पूर्व-वत् मातृका-वर्णों से प्राणायाम करे। फिर हाथ जोड़कर 'विनियोग' पढ़े। यथा—

**विनियोग—ॐ अस्य बहिः-सृष्टि-मातृका-न्यासस्य ब्रह्मा ऋषिः। गायत्री छन्दः। बहिः-सृष्टि-मातृका-सरस्वती देवता। व्यञ्जनाः बीजानि। स्वराः शक्तयः। अव्यक्तं कीलकं। श्रीमद्-दक्षिण-कालिकायाः पूजाङ्गत्वेन बहिः - सृष्टि - मातृका - न्यासे विनियोगः।**

इस प्रकार हाथ जोड़कर 'विनियोग' पढ़कर 'अन्तर्मातृका-न्यास' की भाँति 'ऋष्यादि न्यास, कर-न्यास' और 'षडङ्ग न्यास' करके नीचे लिखा हुआ 'बहिः-सृष्टि-मातृका-सरस्वती देवता' का ध्यान पढ़े—

**अर्द्धोन्मुक्त-शशाङ्क-कोटि-सदृशीमापीन-तुङ्ग-स्तनीम् ।**
**चन्द्रार्द्धाङ्कित-शेखरां मधु-दलैरालोल-नेत्र-त्रयाम् ।।**
**विभ्राणामनिशं वरं जप-वटीं शूलं कपालं करैः ।**
**आद्यां यौवन-गर्वितां लिपि-तनुं वागीश्वरीमाश्रये ।।**

इस प्रकार ध्यान कर 'बहिः-सृष्टि-मातृका-सरस्वती देवता' का मानसोपचारों से पूजन कर शरीर के बाहर के विभिन्न अङ्गों में मातृका-वर्णों का यथा-क्रम न्यास करे। यथा—

**'ॐ अं नमः'** ललाट में, अनामा-मध्यमा से। **'ॐ आं नमः'** मुख-मण्डल में, तर्जनी-मध्यमा-अनामा से। **'ॐ इं नमः'** दाहिनी आँख में, अंगुष्ठ-अनामा से। **'ॐ ईं नमः'** बाँईं आँख में, अंगुष्ठ-अनामा से। **'ॐ उं नमः'** दाहिने कान में, अँगूठे से। **'ॐ ऊं नमः'** बाँएँ कान में, अँगूठे से। **'ॐ ऋं नमः'** बाँईं नासा में, कनिष्ठा-अँगूठे से। **'ॐ लृं नमः'** दाहिने गाल में, मध्यमा से। **ॐ लॄं नमः बाँएँ** गाल में, मध्यमा से।**'ॐ एं नमः'** ऊपर के ओठ में, मध्यमा से। **'ॐ ऐं नमः'** नीचे के ओठ में, मध्यमा से। **'ॐ ओं नमः'** ऊपर के दाँत की पंक्ति में, अनामा से। **'ॐ औं नमः'** नीचे के दाँतो की पंक्ति में, अनामा से। **'ॐ अं नमः'** शिर में, मध्यमा से। **'ॐ अः नमः'** मुख में (जीभ में), कनिष्ठिका-अनामा-मध्यमा से। **'ॐ कं नमः'** दाहिने बाहु की जड़ में, अनामा-मध्यमा से। **'ॐ खं नमः'** दाहिने बाहु के कूर्पर (कोहिनी) में, अनामा-मध्यमा से। **'ॐ गं नमः'** दाहिने बाहु के मणि-बन्ध (कलाई) में, अनामा-मध्यमा से। **'ॐ घं नमः'** दाहिने बाहु की अँगुलियों की जड़ में, अनामा-मध्यमा से। **'ॐ ङं नमः'** दाहिने बाहु की अँगुलियों के अग्र भाग में, अनामा-मध्यमा से। **'ॐ चं नमः'** बाँएँ बाहु की जड़ में, अनामा-मध्यमा से। **'ॐ छं नमः'** बाँएँ कूर्पर में, अनामा-मध्यमा से। **'ॐ जं नमः'** वाम-मणि-बन्ध में, अनामा-मध्यमा से। **'ॐ झं नमः'** बाँएँ बाहु की अँगुलियों की जड़ में, अनामा-मध्यमा से। **'ॐ ञं नमः'** बाँएँ बाहु की अँगुली के अग्र भाग में, अनामा-मध्यमा से। **'ॐ टं नमः'** दाहिने पैर की जड़ में, अनामा-मध्यमा से। **'ॐ ठं नमः'** दाहिने पैर की गाँठ में, अनामा-मध्यमा से। **'ॐ डं नमः'** दाहिने पैर के टखने में, अनामा-मध्यमा से। **'ॐ ढं नमः'** दाहिने पैर की अँगुलियों की जड़ में, अनामा-मध्यमा से। **'ॐ णं नमः'** दाहिने पैर की अँगुलियों के अग्र भाग में, अनामा-मध्यमा से। **'ॐ तं नमः'** बाँएँ पैर की जड़ में, अनामा-मध्यमा से। **'ॐ थं नमः'** बाँएँ पैर की गाँठ में, अनामा-मध्यमा से। **'ॐ दं नमः'** बाँएँ पैर

के टखने में, अनामा-मध्यमा से। **'ॐ धं नमः'** बाएँ पैर की अँगुलियों की जड़ में, अनामा-मध्यमा से। **'ॐ नं नमः'** बाएँ पैर की अँगुलियों के अग्र भाग में, अनामा-मध्यमा से। **'ॐ पं नमः'** दाहिनी कोख में, कनिष्ठा-अनामा से। **'ॐ फं नमः'** बाँईं कोख में, कनिष्ठा-अनामा से। **'ॐ बं नमः'** से पीठ में, कनिष्ठा-अनामा-मध्यमा से। **'ॐ भं नमः'** नाभि में, कनिष्ठा-अनामा-मध्यमा अङ्गुष्ठ से। **'ॐ मं नमः'** पेट में, पाँचों अँगुलियों से। **'ॐ यं त्वगात्मने नमः'** हृदय में, हथेली से। **'ॐ रं असृगात्मने नमः'** दाहिने कन्धे में, हथेली से। **'ॐ लं मांसात्मने नमः'** बाँएँ कन्धे में, हथेली से। **'ॐ वं मेदात्मने नमः'** गर्दन की गाँठ में, पीठ की ओर हथेली से। **'ॐ शं अस्थ्यात्मने नमः'** हृदय से लेकर दाहिने बाहु की अँगुलियों के अग्र भाग, तक हथेली से। **'ॐ षं नमः'** हृदय से लेकर बाँएँ बाहु की अँगुलियों के अग्र भाग तक हथेली से। **'ॐ सं शुक्रात्मने नमः'** हृदय से लेकर दाहिने पैर की अँगुलियों के अग्र भाग तक, हथेली से। **'ॐ हं जीवात्मने नमः'** हृदय से लेकर बाँएँ पैर की अँगुलियों के अग्र भाग तक, हथेली से। **'ॐ ळं परमात्मने नमः'** हृदय से लेकर नाभि तक, हथेली से। **'ॐ क्षं ज्ञानात्मने नमः'** हृदय से लेकर मुख तक, हथेली से।

## बहिः-स्थिति-मातृका-न्यास

**'सृष्टि-मातृका-न्यास'** कर चुकने पर **'बहिः-स्थिति-मातृका-न्यास'** करे। पूर्व-वत् मातृका वर्णों से **'प्राणायाम'** करे। फिर हाथ जोड़कर उसका विनियोग पढ़े। यथा–

**विनियोग–ॐ अस्य बहिः-स्थिति-मातृका-न्यासस्य विष्णु ऋषिः। गायत्री छन्दः। बहिः-स्थिति-मातृका-सरस्वती देवता। व्यञ्जनाः बीजानि। स्वराः शक्तयः। अव्यक्तं कीलकं। श्रीमद्-दक्षिण-कालिकायाः पूजाङ्गत्वेन बहिः-स्थिति-मातृका-न्यासे विनियोगः।**

उक्त विनियोग का ऋष्यादि-न्यास कर **'अन्तर्मातृका-न्यास'** में

दिए हुए **'कर-न्यास'** और **'षडङ्ग-न्यास'** करके नीचे लिखे हुए ध्यान को पढ़े—

**ध्यान—**

**पक्षीन्द्रासन-संस्थितां भगवतीं श्यामां पिशङ्गावृताम् ,**
**शङ्खं चक्र-गदाब्ज-पाश-सृणिभिर्मालां दधानां पराम् ।**
**विद्याऽभीति-वर-प्रदां त्रिनयनामापीन-तुङ्ग-स्तनीम् ,**
**देवीं विष्णु-मयीं समस्त-जननीं ध्यायामि तामम्बिकाम् ।।**

इस प्रकार **'स्थिति-मातृका-सरस्वती'** का ध्यान कर उनका मानसोपचारों से पूजन करे। फिर **'स्थिति-क्रम'** से मातृका-वर्णों का अपनी देह के विभिन्न अङ्गों में न्यास करे। यथा—

**ॐ डं नमः** (दाहिने पैर के टखने में) अनामिका-मध्यमा से)
**ॐ ढं नमः** (दाहिने पैर की अँगुलियों की जड़ में) ,, ,,
**ॐ णं नमः** (दाहिने पैर की अँगुलियों की अग्र भाग में) ,, ,,
**ॐ तं नमः** (बाँएँ पैर की जड़ में) ,, ,,
**ॐ थं नमः** (बाँएँ पैर की गाँठ में) ,, ,,
**ॐ दं नमः** (बाँएँ पैर के टखने में) ,, ,,
**ॐ धं नमः** (बाँएँ पैर की अँगुलियों के जड़ में) ,, ,,
**ॐ नं नमः** (बाँएँ पैर की अँगुलियों के अग्र भाग में) ,, ,,
**ॐ पं नमः** (दाहिनी कोख में) कनिष्ठा-अनामा से
**ॐ फं नमः** (बाँईं कोख में) ,, ,,
**ॐ बं नमः** (पीठ में) कनिष्ठा-अनामिका-मध्यमा से
**ॐ भं नमः** (नाभि में) अङ्गुष्ठ-कनिष्ठा-अनामिका-मध्यमा से
**ॐ मं नमः** (पेट में) पाँचों अँगुलियों से।
**ॐ यं त्वगात्मने नमः** (हृदय में) हथेली से
**ॐ रं असृगात्मने नमः**( दाहिने कन्धे में) हथेली से
**ॐ लं मांसात्मने नमः** (बाँएँ कन्धे में ) ,, ,,
**ॐ वं मेदात्मने नमः** (गर्दन की गाँठ में, पीठ की ओर ककुद में ,, ,,
**ॐ शं अस्थ्यात्मने नमः** (हृदय से लेकर दाहिने हाथ की अँगुलियों के अग्र भाग में) ,, ,,
**ॐ षं मज्जात्मने नमः** (हृदय से लेकर बाँएँ बाहु की अँगुलियों के अग्र भाग में) ,, ,,

| | |
|---|---|
| ॐ सं शुक्रात्मने नमः (हृदय से लेकर दाहिने पैर की अँगुलियों के अग्र भाग में) | ,, ,, |
| ॐ हं जीवात्मने नमः (हृदय से लेकर बाँएँ पैर की अँगुलियों के अग्र भाग तक) | ,, ,, |
| ॐ ळं परमात्मने नमः (हृदय से लेकर नाभि तक) | ,, ,, |
| ॐ क्षं ज्ञानात्मने नमः (हृदय से लेकर मुख तक) | ,, ,, |
| ॐ अं नमः (ललाट में) अनामिका-मध्यमा से | ,, ,, |
| ॐ आं नमः (मुख-मण्डल में) तर्जनी-मध्यमा-अनामा से | ,, ,, |
| ॐ इं नमः (दाहिने नेत्र में) अंगुष्ठ-अनामा से | ,, ,, |
| ॐ ईं नमः (बाँएँ नेत्र में) | ,, ,, |
| ॐ उं नमः (दाँएँ कान में) | अंगुष्ठ से |
| ॐ ऊं नमः (बाँएँ कान में) | ,, ,, |
| ॐ ऋं नमः (दाँएँ नाक-छिद्र में) | कनिष्ठा से |
| ॐ ॠं नमः (बाँएँ नाक-छिद्र में) | ,, ,, |
| ॐ लृं नमः (दाँएँ गाल में ) | मध्यमा से |
| ॐ लॄं नमः (बाँएँ गाल में) | ,, ,, |
| ॐ एं नमः (ऊपर के ओठ में) | ,, ,, |
| ॐ ऐं नमः (नीचे के ओठ में) | ,, ,, |
| ॐ ओं नमः (ऊपर की दन्त-पंक्ति में) | अनामा से |
| ॐ औं नमः (नीचे की दन्त-पंक्ति में) | ,, ,, |
| ॐ अं नमः (शिर में) | मध्यमा से |
| ॐ अः नमः (जीभ में) | अनामा-मध्यमा से |
| ॐ कं नमः (दाईं बाहु के मूल में) | मध्यमा से |
| ॐ खं नमः (दाहिनी कोहनी में) | ,, ,, |
| ॐ गं नमः (दाएँ कलाईं में) | अनामा-मध्यमा से |
| ॐ घं नमः (दाएँ हाथ की अँगुलियों की जड़ में) | ,, ,, |
| ॐ ङं नमः (दाएँ हाथ की अँगुलियों के अग्र भाग में) | ,, ,, |
| ॐ चं नमः (बाँएँ हाथ की जड़ में) | ,, ,, |
| ॐ छं नमः (बाँएँ हाथ की कोहनी में) | ,, ,, |
| ॐ जं नमः (बाँएँ हाथ की कलाईं में) | ,, ,, |
| ॐ झं नमः (बाँएँ हाथ की अँगुलियों की जड़ में) | ,, ,, |
| ॐ ञं नमः (बाँएँ हाथ की अँगुलियों के अग्र-भाग में) | ,, ,, |

ॐ टं नमः (दाँएँ पैर की जड़ में) अनामा-मध्यमा से
ॐ ठं नमः (दाँएँ पैर की गाँठ में) " "

## बहिः-संहार-मातृका-न्यास

पूर्व-वत् मातृका वर्णों से 'प्राणायाम' करके हाथ जोड़कर 'संहार-मातृका' का विनियोग पढ़े। यथा–

विनियोग–ॐ अस्य श्रीसंहार-मातृका-न्यासस्य कालाग्नि-रुद्र ऋषिः। गायत्री छन्दः। संहार-मातृका-सरस्वती देवता। मादयः कान्तानि बीजानि। विलोम-स्वराः शक्तयः। क्षादयो यान्तानि कीलकं। श्रीमद्-दक्षिण-कालिकायाः पूजाङ्गत्वेन आधिभौतिक-आध्यात्मिक-पाप-क्षयार्थे जपे न्यासे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास–कालाग्नि-रुद्र-ऋषये नमः शिरसि। गायत्री-छन्दसे नमः मुखे। संहार-मातृका-सरस्वती-देवतायै नमः हृदये। मं भं बं फं पं, नं धं दं थं तं। णं ढं डं ठं टं। ञं झं जं छं चं। ङं घं गं खं कं व्यञ्जनेभ्यो। बीजेभ्यो नमः गुह्ये अः अं औं ओं ऐं एं लॄं लृं ॠं ऋं ऊं उं ईं इं आं अं स्वरेभ्यो शक्तिभ्यो नमः पादयोः। क्षं लं हं सं षं शं वं लं रं यं कीलकाय नमः नाभौ। श्रीमद्-दक्षिण-कालिकायाः पूजाङ्गत्वेन बहिः-संहार-मातृकान्यासे आधिभौतिक-आध्यात्मिक-पाप-क्षयार्थे जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

षडङ्ग-न्यास–ॐ अः क्षं ळं हं सं षं शं वं लं रं यं अं अस्त्राय फट्। ॐ औं मं भं बं फं पं ओं नेत्र-त्रयाय वौषट्। ॐ ऐं नं धं दं थं तं एं कवचाय हुँ। ॐ ऊं णं ढं डं ठं टं उं शिखायै वषट्। ॐ ईं ञं झं जं छं चं इं शिरसे स्वाहा। ॐ आं ङं घं गं खं कं अं हृदयाय नमः।

कर-न्यास–ॐ अः क्षं ळं हं सं षं शं वं लं रं यं अं करतल-कर-पृष्ठाभ्यां नमः। ॐ औं मं भं बं फं पं ओं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ऐं नं धं दं थं तं एं कवचाय हुँ। ॐ ऊं णं ढं डं ठं टं उं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ईं ञं झं जं छं चं

इं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ आं ङं घं गं खं कं अं अंगुष्ठाभ्यां नमः।

ध्यान —

धूम्राङ्गीं मुक्त-केशीं शशि-मलिन-मुखीं घोर-रूपां त्रिनेत्राम् ।
व्यस्तैर्हस्तैर्दधानां व्यजन-कर-धृतां दीप्तमग्निं तृणाढ्याम् ।।
हा-हा-काराट्टहासामभय वर-करां ज्वालयन्तीं दिशांश्च ।
भक्तेभ्यः प्रेम-बद्धां दिशतु प्रति-दिनं भारतीं तां नमामि ।।

इस प्रकार 'संहार-मातृका-सरस्वती' का ध्यान कर उनका मानसोपचारों से पूजन कर आगे लिखे क्रम से भिन्न-भिन्न अङ्गों में मातृका वर्णों का न्यास करे—

ॐ क्षं ज्ञानात्मने नमः ललाटें (अनामा-मध्यमा से)
ॐ ळं परमात्मने नमः मुख-वृत्ते (तर्जनी-मध्यमा-अनामा से)
ॐ हं जीवात्मने नमः दक्ष-नेत्रे (अंगुष्ठ-अनामा से)
ॐ सं शुक्रात्मने नमः वाम-नेत्रे (अंगुष्ठ-अनामा से)
ॐ षं मज्जात्मने नमः दक्ष-कर्णे (अँगूठे से)
ॐ शं अस्थ्यात्मने नमः वाम-कर्णे (अँगूठे से)
ॐ वं मेदात्मने नमः दक्ष-नासायाम् (कनिष्ठा और अँगूठे से)
ॐ लं मांसात्मने नमः वाम-नासायाम् (कनिष्ठा और अँगूठे से)
ॐ रं असृगात्मने नमः दक्ष-गण्डे (मध्यमा से)
ॐ यं त्वगात्मने नमः वाम-गण्डे (मध्यमा से)
ॐ मं नमः ऊर्ध्व-ओष्ठे (मध्यमा से)
ॐ भं नमः अधो-ओष्ठे (मध्यमा से)
ॐ बं नमः ऊर्ध्व-दन्त-पंक्तौ (अनामा से)
ॐ फं नमः अधो दन्त-पंक्तौ (मध्यमा से)
ॐ पं नमः शिरसि (मध्यमा से)
ॐ नं नमः मुखे जिह्वायां (कनिष्ठिका-अनामा-मध्यमा से)
ॐ धं नमः दक्ष-बाहु-मूले (अनामा-मध्यमा से)
ॐ दं नमः दक्ष-कूर्परे (अनामा-मध्यमा से)
ॐ थं नमः दक्ष-मणि-बन्धे (अनामा-मध्यमा से)
ॐ तं नमः दक्ष-हस्त-अंगुलि-मूले (अनामा-मध्यमा से)

ॐ णं नमः दक्ष-कराग्रे (अनामा-मध्यमा से)
ॐ ढं नमः वाम-बाहु-मूले (अनामा-मध्यमा से)
ॐ डं नमः वाम-कूपरि (अनामा-मध्यमा से)
ॐ ठं नमः वाम-मणि-बन्धे (अनामा-मध्यमा से)
ॐ टं नमः वाम-कर-अँगुलि-मूले (अनामा-मध्यमा से)
ॐ ञं नमः वाम-कराग्रे (अनामा-मध्यमा से)
ॐ झं नमः दक्ष-उरु-मूले (अनामा-मध्यमा से )
ॐ जं नमः दक्ष-जानुनि (अनामा-मध्यमा से)
ॐ छं नमः दक्ष-गुल्फे (अनामा-मध्यमा से)
ॐ चं नमः दक्ष-पाद-अँङ्गुलि-मूले (अनामा-मध्यमा से)
ॐ ङं नमः दक्ष-पादाग्रे (अनामा-मध्यमा से)
ॐ घं नमः वामोरु-मूले (अनामा-मध्यमा से)
ॐ गं नमः वाम-जानुनि (अनामा-मध्यमा से)
ॐ खं नमः वाम-गुल्फे (अनामा-मध्यमा से)
ॐ कं नमः वाम-पाद-अंगुलि-मूले (अनामा-मध्यमा से)
ॐ अः नमः वाम-पादाग्रे (अनामा-मध्यमा से)
ॐ अं नमः दक्ष-पार्श्वे (कनिष्ठिका-अनामा से)
ॐ औं नमः वाम-पार्श्वे (कनिष्ठिका-अनामा से)
ॐ ओं नमः पृष्ठे (कनिष्ठिका-अनामा-मध्यमा से)
ॐ ऐं नमः नाभौ (कनिष्ठिका-अनामा-मध्यमा से)
ॐ एं नमः जठरे (पाँचों अँगुलियों से)
ॐ लॄं नमः हृदये (हथेली से)
ॐ लृं नमः दक्षांशे (हथेली से)
ॐ ॠं नमः वामांशे (हथेली से)
ॐ ऋं नमः ककुदि (हथेली से)
ॐ ऊं नमः हृदयात् दक्ष-कराग्रान्ते (हथेली से)
ॐ उं नमः हृदयात् वाम कराग्रान्ते (हथेली से)
ॐ ईं नमः हृदयात् दक्ष-पादांगुल्यग्रे (हथेली से)
ॐ इं नमः हृदयात् दक्ष-पादांगुल्यग्रे (हथेली से)

ॐ आं नमः हृदयात् नाभ्यन्तं (हथेली से)

ॐ अं नमः हृदयात् मुखान्तं (हथेली से)

इस प्रकार **'संहार-मातृका-न्यास'** कर चुकने पर **'सृष्टि-मातृका'** और **'स्थिति-मातृका'** के न्यास पुनः करे। इस क्रम से जो साधक **'मातृका-न्यास'** करते हैं, वे मोक्ष की कामना से करते हैं, परन्तु गृहस्थ साधक पहले **'संहार'**, फिर **'सृष्टि'**, इसके बाद **'स्थिति-मातृका'** का न्यास करते हैं। ब्रह्मचारी साधक पहले **'स्थिति-मातृका'**, फिर **'संहार-मातृका'** और तब **'सृष्टि-मातृका'** का न्यास करते हैं।

## शक्ति-मातृका-न्यास

पूर्व-वत् **'मातृका-वर्णों'** से **'प्राणायाम'** कर हाथ जोड़कर विनियोग पढ़े। यथा—

**विनियोग-ॐ अस्य श्रीशक्ति-मातृका-न्यासस्य शक्ति ऋषिः। गायत्री छन्दः। आदि-शक्ति-मातृका-शक्ति-मयी भुवनेश्वरी देवता। हं बीजं। ईं शक्तिः। रं कीलकं। श्रीमद्-दक्षिण-कालिकायाः पूजाङ्गत्वेन श्रीशक्ति-मातृका-न्यासे विनियोगः।**

**ऋष्यादि-न्यास—शक्ति-ऋषये नमः शिरसि। गायत्री-छन्दसे नमः मुखे। आदि-शक्ति-मातृका-शक्ति-मयी-भुवनेश्वरी-देवतायै नमः हृदये। हं बीजाय नमः गुह्ये। ईं शक्तये नमः पादयोः। रं कीलकाय नमः नाभौ। श्रीमद्-दक्षिण-कालिकायाः पूजाङ्गत्वेन शक्ति-मातृका-सरस्वती-न्यासे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।**

**कर-न्यास—**

**ॐ अं कं खं गं घं ङं आं ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः।**

**ॐ इं चं छं जं झं ञं ईं ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः।**

**ॐ उं टं ठं डं ढं णं ऊं ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः।**

**ॐ एं तं थं दं धं नं ऐं ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः।**

**ॐ ओं पं फं बं भं मं औं ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः।**

**ॐ अं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं अः ह्रः करतल-कर-पृष्ठाभ्यां नमः।**

हृदयादि-न्यास—

ॐ अं कं खं गं घं ङं आं ह्रां हृदयाय नमः।

ॐ इं चं छं जं झं ञं ईं ह्रीं शिरसे स्वाहा।

ॐ उं टं ठं डं ढं णं ऊं ह्रूं शिखायै वषट्।

ॐ एं तं थं दं धं नं ऐं ह्रैं कवचाय हुँ।

ॐ ओं पं फं बं भं मं औं ह्रौं नेत्र-त्रयाय वौषट्।

ॐ अं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं अः ह्रः अस्त्राय फट्।

ध्यान—

उद्यत्-कोटि-दिवाकर-प्रति-भटां तुङ्गोरु-पीन-स्तनी ।
बद्धेन्दु-किरीट-सुहार - रसना - मञ्जीर-संशोभिता ।।
विभ्राणा कर-पङ्कजैर्जप-वटीं पाशांकुशौ पुस्तकम् ।
दृश्याद्वो जगदीश्वरी त्रिनयना पद्मे निषण्णा सुखम् ।।

इस प्रकार ध्यान कर और उनका मानसोपचारों से पूजन कर 'शक्ति-मातृका' के बीजों का क्रम से शरीर के अङ्गों में न्यास करे। यथा—

ॐ अं ह्रीं नमः ललाटे (अनामा-मध्यमा से)

ॐ आं ह्रीं नमः मुख-वृत्ते (तर्जनी-अनामा और मध्यमा से)

ॐ इं ह्रीं नमः दक्ष-नेत्रे (अंगुष्ठ-अनामा से)

ॐ ईं ह्रीं नमः वाम-नेत्रे (अंगुष्ठ-अनामा से)

ॐ उं ह्रीं नमः दक्ष-कर्णे (अंगुष्ठ से)

ॐ ऊं ह्रीं नमः वाम कर्णे (अंगुष्ठ से)

ॐ ऋं ह्रीं नमः दक्ष-नासायां (अंगुष्ठ-कनिष्ठा से)

ॐ ॠं ह्रीं नमः वाम-नासायां (अंगुष्ठ-कनिष्ठा से)

ॐ ऌं ह्रीं नमः दक्ष-गण्डे (मध्यमा से)

ॐ ॡं ह्रीं नमः वाम-गण्डे (मध्यमा से)

ॐ एं ह्रीं नमः ऊर्ध्व -ओष्ठे (मध्यमा से)

ॐ ऐं ह्रीं नमः अधो-ओष्ठे ( मध्यमा से)

ॐ ओं ह्रीं नमः ऊर्ध्व-दन्त-पंक्तौ (अनामा से)

ॐ औं ह्रीं नमः अधो-दन्त-पंक्तौ (अनामा से)
ॐ अं ह्रीं नमः शिरसि (मध्यमा से)
ॐ अः ह्रीं नमः मुखे जिह्वायां (कनिष्ठिका-अनामा-मध्यमा से)
ॐ कं ह्रीं नमः दक्ष-बाहु-मूले (अनामा-मध्यमा से)
ॐ खं ह्रीं नमः दक्ष-कूर्परे (अनामा-मध्यमा से)
ॐ गं ह्रीं नमः दक्ष-मणि-बन्धे (अनामा-मध्यमा से)
ॐ घं ह्रीं नमः दक्ष-करांगुलि-मूले (अनामा-मध्यमा से)
ॐ ङं ह्रीं नमः दक्ष-करांगुलि-अग्रे (अनामा-मध्यमा से)
ॐ चं ह्रीं नमः वाम-बाहु-मूले (अनामा-मध्यमा से)
ॐ छं ह्रीं नमः वाम-कूर्परे (अनामा-मध्यमा से)
ॐ जं ह्रीं नमः वाम-मणि-बन्धे (अनामा-मध्यमा से)
ॐ झं ह्रीं नमः वाम-करांगुलि-मूले (अनामा-मध्यमा से)
ॐ ञं ह्रीं नमः वाम-करांगुलि-अग्रे (अनामा-मध्यमा से)
ॐ टं ह्रीं नमः दक्ष-उरु-मूले (अनामा-मध्यमा से)
ॐ ठं ह्रीं नमः दक्ष-जानुनि (अनामा-मध्यमा से)
ॐ डं ह्रीं नमः दक्ष-गुल्फे (अनामा-मध्यमा से)
ॐ ढं ह्रीं नमः दक्ष-पाद-अंगुलि-मूले (अनामा-मध्यमा से)
ॐ णं ह्रीं नमः दक्ष-पाद-अंगुलि-अग्रे (अनामा-मध्यमा से)
ॐ तं ह्रीं नमः वाम-उरु-मूले (अनामा-मध्यमा से)
ॐ थं ह्रीं नमः वाम-जानुनि (अनामा-मध्यमा से)
ॐ दं ह्रीं नमः वाम-गुल्फे (अनामा-मध्यमा से)
ॐ धं ह्रीं नमः वाम-पाद-अंगुलि-मूले (अनामा-मध्यमा से)
ॐ नं ह्रीं नमः वाम-पाद-अंगुलि अग्रे (अनामा-मध्यमा से)
ॐ पं ह्रीं नमः दक्ष-पार्श्वे (कनिष्ठिका-अनामा से)
ॐ फं ह्रीं नमः वाम-पार्श्वे (कनिष्ठिका-अनामा से)
ॐ बं ह्रीं नमः पृष्ठे (कनिष्ठिका-अनामा-मध्यमा से)
ॐ भं ह्रीं नमः नाभौ (कनिष्ठिका-अनामा-मध्यमा-अंगुष्ठ से)
ॐ मं ह्रीं नमः जठरे (पाँचों अँगुलियों से)
ॐ यं ह्रीं त्वगात्मने नमः हृदये (हथेली से)

ॐ रं ह्रीं असृगात्मने नमः दक्षांशे (हथेली से)
ॐ लं ह्रीं मांसात्मने नमः वामांशे (हथेली से)
ॐ वं ह्रीं मेदात्मने नमः ककुदि (हथेली से)
ॐ शं ह्रीं अस्थ्यात्मने नमः हृदयात् दक्ष-करांगुलि-अन्ते (हथेली से)
ॐ षं ह्रीं मज्जात्मने नमः हृदयात् वाम-करांगुलि-अन्ते (हथेली से)
ॐ सं ह्रीं शुक्रात्मने नमः हृदयात् दक्ष-पाद-अंगुलि-अन्ते (हथेली से)
ॐ हं ह्रीं जीवात्मने नमः हृदयात् वाम-पाद-अंगुलि-अन्ते (हथेली से)
ॐ ळं ह्रीं परमात्मने नमः हृदयात् नाभ्यन्तं (हथेली से)
ॐ क्षं ह्रीं ज्ञानात्मने नमः हृदयात् मुखान्तं (हथेली से)

## कला-मातृका-न्यास

पूर्व-वत् 'मातृका-वर्णों' से 'प्राणायाम' कर हाथ जोड़कर विनियोग पढ़े। यथा—

**विनियोग—ॐ अस्य श्रीकला-मातृका-न्यासस्य प्रजापतिः ऋषिः। गायत्री छन्दः। कला सरस्वती देवता। हलो बीजानि। स्वराः शक्तयः। अव्यक्तं कीलकं। श्रीमद्-दक्षिण-कालिकायाः पूजाङ्गत्वेन कला-मातृका-न्यासे विनियोगः।**

**ऋष्यादि-न्यास—प्रजापति-ऋषये नमः शिरसि। गायत्री-छन्दसे नमः मुखे। कला-सरस्वती-देवतायै नमः हृदये। हलो-बीजेभ्यो नमः गुह्ये। स्वराः-शक्तिभ्यो नमः पादयोः। अव्यक्त-कीलकाय नमः नाभौ। श्रीमद्-दक्षिण-कालिकायाः पूजाङ्गत्वेन कला-मातृका-न्यासे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।**

**कर-न्यास—ॐ अं आं अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ इं ईं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ उं ऊं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ एं ऐं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ओं औं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ अं अः करतल-कर-पृष्ठाभ्यां नमः।**

**हृदयादि-न्यास—ॐ अं आं हृदयाय नमः। ॐ इं ईं शिरसे स्वाहा। ॐ उं ऊं शिखायै वषट्। ॐ एं ऐं कवचाय हुँ। ॐ ओं औं नेत्र-त्रयाय वौषट्। ॐ अं अः अस्त्राय फट्।**

ध्यान—

ॐ हस्तैः पद्मं रथाङ्गं गुणमथ हरिणं पुस्तकं वर्ण-मालाम् ।
टङ्कं शुभ्रं कपालं वरममृत-लसद्धेम-कुम्भं वहन्तीम् ।।
मुक्ता-विद्युत्-पयोद-स्फटिक-नव-जपा-बन्धुरैः पञ्च-वक्त्रैः।
त्र्यक्षैर्वक्षोज-नम्रां सकल-शशि-निभां शारदां तां नमामि।।

उक्त प्रकार ध्यान कर, मानसोपचारों से पूजन कर निम्न प्रकार से 'सदा-शिव ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र एवं ईश्वर' की १६+१०+१०+१०+५ कलाओं का क्रमशः न्यास करे—

१. ध्यान—

ॐ सदा - शिवेन सञ्जाता, नादादेताः सितत्विषः।
अक्ष-स्रक्-पुस्तक-कराः, कपालढ्य-कराम्बुजाः।।

ॐ अं निवृत्ति-कलायै नमः ललाटे (अनामा-मध्यमा से)
ॐ आं प्रतिष्ठा-कलायै नमः मुख-वृत्ते (तर्जनी-अनामा-मध्यमा से)
ॐ इं विद्या-कलायै नमः दक्ष-नेत्रे (अंगुष्ठ-अनामा से)
ॐ ईं शान्ति-कलायै नमः वाम-नेत्रे (अंगुष्ठ-अनामा से)
ॐ उं इन्धिका-कलायै नमः दक्ष-कर्णे (अंगुष्ठ-अनामा से)
ॐ ऊं दीपिका-कलायै नमः वाम कर्णे (अंगुष्ठ-अनामा से)
ॐ ऋं रेचिका-कलायै नमः दक्ष-नासायाम् (अंगुष्ठ-कनिष्ठा से)
ॐ ॠं मोचिका-कलायै नमः वाम-नासायाम् (अंगुष्ठ-कनिष्ठा से)
ॐ लं परा-कलायै नमः दक्ष-गण्डे (मध्यमा से)
ॐ लॄं सूक्ष्मामृता-कलायै नमः वाम-गण्डे (मध्यमा से)
ॐ एं ज्ञाना-कलायै नमः ऊर्ध्वोष्ठे (मध्यमा से)
ॐ ऐं ज्ञानामृता-कलायै नमः अधो-ओष्ठे (मध्यमा से)
ॐ ओं आप्यायनी-कलायै नमः ऊर्ध्व-दन्त-पंक्तौ (अनामा से)
ॐ औं व्यापिनी-कलायै नमः अधो-दन्त-पंक्तौ (अनामा से)
ॐ अं व्योम-रूपा-कलायै नमः शिरसि (मध्यमा से)

ॐ अः अनन्ता-कलायै नमः मुखे जिह्वायां (कनिष्ठा-अनामा-मध्यमा से) उक्त १६ कलाएँ 'सदा-शिव' की हैं।

२. ध्यान—

ॐ अकाराद् ब्रह्मणोत्पन्नास्तप्त-चामीकर-प्रभाः ।
करम्बुज-धृताक्ष-स्त्रक्-पङ्कजाभय-कुण्डिकाः ।।

ॐ कं सृष्टि-कलायै नमः दक्ष-बाहु-मूले (अनामा-मध्यमा से)
ॐ खं ऋद्धि-कलायै नमः दक्ष-कूपरि (अनामा-मध्यमा से)
ॐ गं स्मृति-कलायै नमः दक्ष-मणि-बन्धे (अनामा-मध्यमा से )
ॐ घं मेधा-कलायै नमः दक्ष-करांगुलि-मूले (अनामा-मध्यमा से)
ॐ ङं कान्ति-कलायै नमः दक्ष-करांगुल्यग्रे (अनामा-मध्यमा से)
ॐ चं लक्ष्मी-कलायै नमः वाम-बाहु-मूले (अनामा-मध्यमा से)
ॐ छं द्युति-कलायै नमः वाम-कूपरि (अनामा-मध्यमा से)
ॐ जं स्थिरा-कलायै नमः वाम-मणि-बन्धौ (अनामा-मध्यमा से)
ॐ झं स्थिति-कलायै नमः वाम-करांगुलि-मूले (अनामा-मध्यमा से)
ॐ ञं सिद्धि-कलायै नमः वाम-करांगुलि-अग्रे (अनामा-मध्यमा से)

उक्त १०कलाएँ 'ब्रह्मा' की हैं—

३. ध्यान—

ॐ उकाराद् विष्णुनोत्पन्नाः, तमाल - दल - सन्निभाः।
अभीति - वर - चक्रेष्ट - बाहवः परि-कीर्त्तिताः।।

ॐ टं जरा-कलायै नमः दक्ष-उरु-मूले (अनामा-मध्यमा से)
ॐ ठं पालिनी-कलायै नमः दक्ष-जानुनि(अनामा-मध्यमा से)
ॐ डं शान्ति-कलायै नमः दक्ष-गुल्फे (अनामा-मध्यमा से)
ॐ ढं ऐश्वर्य-कलायै नमः दक्ष-पादांगुलि-मूले (अनामा-मध्यमा से)
ॐ णं रति-कलायै नमः दक्ष-पादांगुलि-अग्रे (अनामा-मध्यमा से)
ॐ तं कामिका-कलायै नमः वाम-उरु-मूले (अनामा-मध्यमा से)
ॐ थं वरदा-कलायै नमः वाम-जानुनि (अनामा-मध्यमा से)
ॐ दं ह्लादिनी-कलायै नमः वाम-गुल्फे (अनामा-मध्यमा से)
ॐ धं प्रीति-कलायै नमः वाम-पाद-अंगुलि-मूले (अनामा-मध्यमा से)
ॐ नं दीर्घ-कलायै नमः वाम-पाद-अंगुलि-अग्रे (अनामा-मध्यमा से)

उक्त १० कलाएँ 'विष्णु' की हैं।

४. ध्यान—

ॐ एताः प-य-वर्ग-कलाः, रुद्रेण मकारोत्यिताः।
उद्-वहन्त्यऽभयं शूलं, कपालं बाहुभिर्वरम् ।।

ॐ पं तीक्ष्णा-कलायै नमः दक्ष-पार्श्वे (कनिष्ठिका-अनामा से)
ॐ फं रौद्री-कलायै नमः वाम-पार्श्वे (कनिष्ठिका-अनामा से)
ॐ बं भया-कलायै नमः पृष्ठे (कनिष्ठिका-अनामिका-अंगुष्ठ से)
ॐ भं निद्रा-कलायै नमः नाभौ (अनामा-मध्यमा-अंगुष्ठ से)
ॐ मं तन्द्री-कलायै नमः उदरे (पाँचो अँगुलियों से)
ॐ यं त्वगात्मने क्षुधा-कलायै नमः हृदये (हथेली से)
ॐ रं असृगात्मने क्रोधिनी-कलायै नमः दक्षांशे ( हथेली से)
ॐ लं मांसात्मने क्रिया-कलायै नमः वामांशे (हथेली से)
ॐ वं मेदात्मने उत्कारी-कलायै नमः ककुदि (हथेली से)
ॐ शं अस्थ्यात्मने मृत्यु-कलायै नमः हृदयात् दक्ष-करांगुलि-अन्ते (हथेली से)

उक्त १० कलाएँ 'रुद्र' की हैं।

५. ध्यान—

ॐ ईश्वरेणोदिता बिन्दोर्जपाकुसुम-सन्निभाः ।
अभयं हरिणं टङ्कं, दधाना बाहुभिर्वरम् ।।

ॐ षं मज्जात्मने पीता-कलायै नमः हृदयात् वाम-करांगुलि-अन्ते (हथेली से)

ॐ सं शुक्रात्मने श्वेता-कलायै नमः हृदयात् दक्ष-पादां-गुलि-अन्ते (हथेली से)

ॐ हं जीवात्मने अरुणा-कलायै नमः हृदयात् वाम-पादांगुलि-अन्ते (हथेली से)

ॐ लं परमात्मने सिता-कलायै नमः हृदयात् नाभ्यन्ते (हथेली से)

ॐ क्षं ज्ञानात्मने अनन्ता-कलायै नमः हृदयात् मुख-पर्यन्तं (हथेली से)

उक्त ५ कलाएँ 'ईश्वर' की हैं।

## श्रीकण्ठादि-मातृका-न्यास

प्राणायाम—ॐ ह्रीं हौं नमः शिवाय (इस मन्त्र से प्राणायामं करे)।

विनियोग—ॐअस्य श्रीकण्ठ-पूर्णोदर्यादि-न्यासस्य दक्षिणा-मूर्त्ति ऋषिः। गायत्री छन्दः। अर्द्ध-नारीश्वरो देवता। हसौं बीजं। नमः शक्तिः। शिव-शक्ती कीलकं। श्रीमद्-दक्षिण-कालिकायाः पूजाङ्गत्वेन श्रीकण्ठ - पूर्णोदर्यादि - मातृका-न्यासे-ज्ञान-सिद्ध्यर्थे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास—दक्षिणामूर्त्ति-ऋषये नमः शिरसि। गायत्री-छन्दसे नमः मुखे। अर्द्ध-नारीश्वर-देवातायै नमः हृदये। हसौं बीजाय नमः गुह्ये। नमः शक्तये नमः पादयोः। शिव-शक्ती-कीलकाय नमः नाभौ। श्रीमद्-दक्षिण-कालिकायाः पूजाङ्गत्वेन श्रीकण्ठ-पूर्णोदर्यादि-मातृकान्यासे-ज्ञान-सिद्ध्यर्थे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

कर-न्यास— हसां अं कं खं गं घं ङं आं अंगुष्ठाभ्यां नमः। हसीं इं चं छं जं झं ञं ईं तर्जनीभ्यां नमः। हसूं उं टं ठं डं ढं णं ऊं मध्यमाभ्यां नमः। हसैं एं तं थं दं धं नं ऐं अनामिकाभ्यां नमः। हसौं ओं पं फं बं मं औं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। हसः अं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं अः करतल-कर-पृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादि-न्यास— हसां अं कं खं गं घं ङं आं हृदयाय नमः। हसीं इं चं छं जं झं ञं ईं शिरसे स्वाहा। हसूं उं टं ठं डं ढं णं ऊं शिखायै वषट्। हसैं एं तं थं दं धं नं ऐं कवचाय हुम्। हसौं ओं पं फं बं भं मं औं नेत्र-त्रयाय वौषट्। हसः अं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं अः अस्त्राय फट्।

ध्यान—

ॐ बन्धूक-काञ्चन-निभं रुचिराक्ष-मालाम्,
पाशांकुशौ च वरदं निज-बाहु-दण्डैः ।
विभ्राणामिन्दु - शकलाभरणं त्रिनेत्रम्,
अर्द्धाम्बिकेशमनिशं वपुराश्रयामि ।।

इस प्रकार ध्यान कर शरीर के भिन्न-भिन्न अङ्गों में क्रम से श्रीकण्ठ-पूर्णोदर्यादि का 'मातृका-न्यास' करे। यथा—

हसौं अं श्रीकण्ठ-पूर्णोदरीभ्यां नमः ललाटे (अनामा-मध्यमा से)

हसौं आं अनन्तेश-विरजाभ्यां नमः मुख-वृत्ते (तर्जनी-अनामा-मध्यमा से)

हसौं इं सूक्ष्मेश-शाल्मलीभ्यां नमः दक्ष-नेत्रे (अंगुष्ठ-अनामा से)

हसौं ईं त्रिमूर्त्तेश-लोलाक्षीभ्यां नमः वाम-नेत्रे (अंगुष्ठ-अनामा से)

हसौं उं अमरेश-वर्त्तुलाक्षीभ्यां नमः दक्ष-कर्णे (अंगुष्ठ से)

हसौं ऊं अर्घीश-दीर्घ-घोणाभ्यां नमः वाम-कर्णे (अंगुष्ठ से)

हसौं ऋं भार-भूतेश-सुदीर्घ-मुखीभ्यां नमः दक्ष-नासायां (अंगुष्ठ-कनिष्ठा से)

हसौं ॠं अतिथीश-गोमुखीभ्यां नमः वाम नासायां (अंगुष्ठ-कनिष्ठा से)

हसौं ऌं स्थाणुक-दीर्घ-जिह्वाभ्यां नमः दक्ष-गण्डे (मध्यमा से)

हसौं ॡं हरेश-कुण्डोदरीभ्यां नमः वाम-गण्डे (मध्यमा से)

हसौं एं क्षिण्टीश-ऊर्ध्व-केशीभ्यां नमः ऊर्ध्व-ओष्ठे (मध्यमा से)

हसौं ऐं भौतिकेश-विकृत-मुखीभ्यां नमः अधो-ओष्ठे (मध्यमा से)

हसौं ओं सद्योजातेश-ज्वाला-मुखीभ्यां नमः ऊर्ध्व-दन्त-पंक्तौ (अनामा से)

हसौं औं अनुग्रहेश्वर-उल्कामुखीभ्यां नमः अधो-दन्त-पंक्तौ (अनामा से)

हसौं अं अक्रूरेश-श्रीमुखीभ्यां नमः शिरसि (मध्यमा से)

हसौं अः महा-सेनेश-विद्या-मुखीभ्यां नमः मुखे जिह्वायां (कनिष्ठा-अनामा-मध्यमा से)

हसौं कं क्रोधेश-महा-कालीभ्यां नमः दक्ष-बाहु-मूले (अनामा-मध्यमा से)

हसौं खं चण्डेश-सरस्वतीभ्यां नमः दक्ष-कूर्परे (अनामा-मध्यमा से)

हसौं गं पञ्चान्तकेश-गौरीभ्यां नमः दक्ष-मणि-बन्धौ (अनामा-मध्यमा से)

**हसौं घं शिवोत्तमेश-त्रैलोक्य-विद्याभ्यां नमः** दक्ष-करांगुलि-मूले (अनामा-मध्यमा से)

**हसौं ङं एक-रुद्रेश-मन्त्र-शक्तिभ्यां नमः** दक्ष-करांगुलि-अग्रे (अनामा-मध्यमा से)

**हसौं चं कूर्मेश-आत्म-शक्तिभ्यां नमः** वाम-बाहु-मूले (अनामा-मध्यमा से)

**हसौं छं एक-नेत्रेश-भूत-मातृभ्यां नमः** वाम-कूपरि (अनामा-मध्यमा से)

**हसौं जं चतुराननेश-लम्बोदरीभ्यां नमः** वाम-मणि-बन्धे (अनामा-मध्यमा से)

**हसौं झं अजेश-द्राविणीभ्यां नमः** वाम-करांगुलि-मूले (अनामा-मध्यमा से)

**हसौं ञं सर्वेश-नागरीभ्यां नमः** वाम-करांगुलि-अग्रे (अनामा-मध्यमा से)

**हसौं टं सोमेश-खेचरीभ्यां नमः** दक्ष-उरु-मूले (अनामा-मध्यमासे)

**हसौं ठं लाङ्गलेश-मञ्जरीभ्यां नमः** दक्ष-जानुनि (अनामा-मध्यमा से)

**हसौं डं दारुकेश-रूपिणीभ्यां नमः** दक्ष-गुल्फे (अनामा-मध्यमा से)

**हसौं ढं अर्द्ध-नारीश-वीरिणीभ्यां नमः** दक्ष-पाद-अंगुलि-मूले (अनामा-मध्यमा से)

**हसौं णं उमा-कान्तेश-काकोदरीभ्यां नमः** दक्ष-पाद-अंगुलि-अग्रे (अनामा-मध्यमा से)

**हसौं तं आषाढेश-पूतनाभ्यां नमः** वाम-उरु-मूले (अनामा-मध्यमा से)

**हसौं थं दण्डीश-भद्रकालीभ्यां नमः** वाम-जानुनि (अनामा-मध्यमा से)

**हसौं दं अत्रीश-योगिनीभ्यां नमः** वाम-गुल्फे (अनामा-मध्यमा से)

**हसौं धं मीनेश-शङ्खिनीभ्यां नमः** वाम-पाद-अंगुलि-मूले (अनामा-मध्यमा से)

**हसौं नं मेषेश-गर्जिनीभ्यां नमः** वाम-पाद-अंगुलि-अग्रे (अनामा-मध्यमा से)

**हसौं पं लोहितेश-काल-रात्रिभ्यां नमः** वाम-पार्श्वे (अनामा-मध्यमा से)

**हसौं फं शिखी-कुर्दिन्याभ्यां नमः** वाम-पार्श्वे (कनिष्ठा-अनामा से)

**हसौं बं छगलाण्डेश-कपर्दिशनीभ्यां नमः** पृष्ठे (कनिष्ठा-अनामा-मध्यमा से)

**हसौं भं द्विरण्डीश-वज्रिणीभ्यां नमः** नाभौ (कनिष्ठा-अनामा-मध्यमा-अंगुष्ठ से)

**हसौं मं महा-कालेश-जयाभ्यां नमः** जठरे (पाँचों अँगुलियों से)

**हसौं यं त्वगात्म-कपालीश-सुमुखीभ्यां नमः** हृदये (हथेली से)

**हसौं रं असृगात्म-भुजङ्गेश-रेवतीभ्यां नमः** दक्षांशे (हथेली से)

**हसौं लं मांसात्म-पिनाकीश-माधवीभ्यां नमः** वामांशे (हथेली से)

**हसौं वं मेदसात्म-खड्गेश-वारुणीभ्यां नमः** ककुदि (हथेली से)

**हसौं शं अस्थ्यात्म-बेकेश-वायवीभ्यां नमः** हृदयात् दक्ष-करांगुलि-अन्ते (हथेली से)

**हसौं षं मज्जात्म-श्वेतेश-रक्षो-विदारिणीभ्यां नमः** हृदयात् वाम-करांगुलि-अन्ते (हथेली से)

**हसौं सं शुक्रात्म-भृग्वीश-सहजाभ्यां नमः** हृदयात् दक्ष-पाद-अंगुलि अन्ते (हथेली से)

**हसौं हं जीवात्म-नकुलेश-लक्ष्मीभ्यां नमः** हृदयात् वाम-पाद-अंगुलि-अन्ते (हथेली से)

**हसौं ळं परमात्म-शिवेश-व्यापिनीभ्यां नमः** हृदयात् नाभ्यन्तं (हथेली से)

**हसौं क्षं ज्ञानात्म-सम्वर्त्तकेश-महा-मायाभ्यां नमः** हृदयात् मुख-पर्यन्ते (हथेली से)

## षोढा-न्यास

**'षोढा-न्यास'** साधकों में बहुत प्रसिद्ध और लोक-प्रिय है। यहाँ पाँच प्रकार के **'षोढा-न्यास'** प्रस्तुत हैं। गुरुदेव की अनुमति से जिसे चाहें, उसे प्रयोग में ला सकते हैं।

### १. गुह्य-षोढा-न्यास

**ॐ नमः** मूर्ध्नि। **हूं नमः** मूलाधारे। **एं नमः** स्वाधिष्ठाने।

## १. षोढा-न्यास

**क्रीं नमः** नाभौ। **एं नमः** हृदि। **क्रीं नमः** कण्ठे। **ह्सौं नमः** भ्रू-मध्ये। **हूं-हूं नमः** दक्ष-बाहौ। **श्रीं नमः** वाम-बाहौ। **ह्रीं नमः** दक्ष-जानुनि। **क्रीं नमः** वाम-जानुनि। **क्रीं नमः** पृष्ठे।

## २. अङ्ग-षोढा-न्यास (वीर-तन्त्रे)

१. **'मातृका-न्यास'** के स्थानों में **'मातृका-वर्णों'** का न्यास करे। २. **'प्रणव'**-पुटित **'मातृका-वर्णों'** का यथा-स्थान न्यास करे। ३. **'मातृका'-पुटित 'प्रणव'** का यथा-स्थान न्यास करे। **यथा— अं ॐ अं नमः** ललाटे, **आं ॐ आं नमः** 'मुख-वृत्ते' इत्यादि। **४. ह्रीं ॐ ह्रीं नमः** से मातृका-न्यास के स्थानों में न्यास करे। इन्हीं स्थानों में **५. ह्रीं क्लीं ह्रीं नमः** से, **६. सौः ॐ सौः नमः** से, ८. **'ॐ सौः ॐ नमः'** से मातृका-न्यास के स्थानों में न्यास करे। ९. **'ह्रां ह्रां ॠं ॠं लृं'** को मूल-मन्त्र से पुटित कर। **१०. ह्रां ह्रां ॠं ॠं लं'** से मूल-मन्त्र को पुटित करे। ११. मूल-मन्त्र को अनुलोम और विलोम क्रमों से। अन्त में १२. मूल-मन्त्र का १०८ बार जप करता हुआ **'व्यापक न्यास'** करे।

## ३. षोढा-न्यास (तीसरा प्रकार)

१.**'मातृका-न्यास'** के स्थानों में केवल **'मातृका-वर्णों'** का न्यास करे।

**२. श्रीं अं श्रीं अं श्रीं नमः** (ललाटे)। **श्रीं आं श्रीं आं श्रीं आं नमः** (मुख-वृत्ते) इत्यादि क्रम से **'मातृका-वर्णों'** का न्यास करे।

**३. क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं अं नमः** (ललाटे) इत्यादि के क्रम से **'मातृका-न्यास' के स्थानों** में न्यास करे।

**४. ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं नमः** (ललाटे) इत्यादि के क्रम से सब अङ्गों में न्यास करे।

**५. मूलं ह्रां ह्रां ॠं ॠं क्लीं** मूलं **ह्रां ह्रां ॠं ॠं क्लूं** मूलं **ह्रां ह्रां ॠं ॠं लृं नमः** (ललाटे) इत्यादि के क्रम से सब अङ्गों में न्यास करे।

६. क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा स्वाहा ह्रीं ह्रीं हूं हूं क्रीं क्रीं क्रीं लिकाणे-क्षिद ह्रीं ह्रीं हूं हूं क्रीं क्रीं क्रीं नमः (ललाटे) इत्यादि के क्रम से सब अङ्गों में न्यास करे।

७. १०८ बार मूल-मन्त्र का जप करता हुआ उससे **'व्यापक न्यास'** करे।

### ४. षोढा-न्यास (चौथा प्रकार)

१. केवल मातृका-वर्णों का न्यास के स्थानों में न्यास करे।

२. श्रीं अं श्रीं अं श्रीं अं नमः (ललाटे) इत्यादि के क्रम से सब अङ्गों में न्यास करे।

३. क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमः (ललाटे) इत्यादि के क्रम से सब अङ्गों में न्यास करे।

४. ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं नमः (ललाटे) इत्यादि के क्रम से सब अङ्गों में न्यास करे।

५. **मुख-वृत्त—समारूढ-लज्जा-द्वन्द्वं नमो-द्वयं शशाङ्कं सकला-रूढं कामं शक्रं पदे स्थितं मूलं सम्पुटितं कृत्वा तत्पुटं च मनुं तथा।**

६. **मूल-मन्त्र को अनुलोम-विलोम-क्रम से स्थापित कर 'मातृका-स्थानों'** में न्यास करे।

७. १०८ बार **मूल-मन्त्र** का जप करता हुआ उससे **'व्यापक न्यास'** करे।

### ५. षोढा-न्यास (रुद्र-यामले)

१. अं क्रीं क्रीं क्रीं अं क्रीं क्रीं क्रीं अं क्रीं क्रीं क्रीं नमः (ललाटे) इत्यादि के क्रम से सब स्थानों में न्यास करे।

२. अं हूं हूं अं हूं हूँ अं हूं हूं नमः (ललाटे) इत्यादि के क्रम से सब स्थानों में न्यास करे।

३. अं ह्रीं ह्रीं अं ह्रीं ह्रीं अं ह्रीं ह्रीं नमः (ललाटे) इत्यादि के क्रम से सब अङ्गों में न्यास करे।

४. अं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं अं नमः (ललाटे)

इत्यादि के क्रम से सब अङ्गों में न्यास करे।

५. **अं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा नमः** (ललाटे) इत्यादि के क्रम से सब अङ्गों में न्यास करे।

६. **मूल-मन्त्र** को **अनुलोम-विलोम-क्रम** से स्थापित कर मातृका-स्थानों में उसका न्यास करे।

७. १०८ बार **मूल-मन्त्र** का जप करता हुआ उससे व्यापक न्यास करे।

## तत्त्व-न्यास

**'षोढा-न्यास'** कर चुकने पर साधक अपनी देह के भिन्न-भिन्न अङ्गों में तत्त्वों का न्यास करे। यथा–

१. **क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं आत्म-तत्त्वाय नमः**—पैरों से लेकर नाभि तक के अङ्गों में दोनों हाथों की **'तत्त्व-मुद्रा'** से **'आत्म-तत्त्व'** का न्यास करे।

२. **दक्षिणे कालिके विद्या-तत्त्वाय नमः**–नाभि से लेकर हृदय तक के अङ्गों में पूर्व-वत् **'विद्या-तत्त्व'** का न्यास करे।

३. **क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा शिव-तत्त्वाय नमः**—हृदय से लेकर शिर तक के अङ्गों में पूर्व-वत् **'शिव-तत्त्व'** का न्यास करे। इसके बाद साधक **'बीज-न्यास'** करे। यथा—

## बीज-न्यास

**क्रीं नमः** ब्रह्म-रन्ध्र में। **क्रीं नमः** भौहों के बीच में। **क्रीं नमः** ललाट में। **हूं नमः** नाभि में। **हूं नमः** गुह्य में। **ह्रीं नमः** मुख में। **ह्रीं नमः** सब अङ्गों में। इसके बाद **मूल-मन्त्रों** के वर्णों का न्यास करे। यथा—

## वर्ण-न्यास

**क्रीं नमः** शिर में। **क्रीं नमः** दोनों नेत्रों में। **क्रीं नमः** ललाट में, **हूं नमः** भौहों के बीच में। **हूं नमः** दोनों कानों में। **ह्रीं नमः** दोनों गालों में। **ह्रीं नमः** मुँह में। **दं नमः** दाँत की पंक्तियों में। **क्षिं नमः** जीभ में। **णें नमः** दोनों कन्धों में। **कां नमः** कण्ठ में।

लिं नमः दोनों भुजाओं में। कें नमः हृदय में। क्रीं नमः दोनों कोखों में। क्रीं नमः पीठ में। क्रीं नमः नाभि में। हूं नमः लिङ्ग में। हूं नमः कमर में। ह्रीं नमः गुह्य में। ह्रीं नमः दोनों हथेलियों में। स्वां नमः दोनों पैरों में। हां नमः देह के सब अङ्गों में।

'वर्ण-न्यास' कर चुकने पर साधक मूल-मन्त्र पढ़ता हुआ पाँच, सात या नौ बार शरीर में दोनों हाथों से व्यापक न्यास करे।

## पीठ-न्यास

अब साधक 'पीठ-न्यास' करे। यथा—

मूलाधार-चक्र में 'मं मण्डूकाय नमः'। स्वाधिष्ठान चक्र में 'कं कालाग्नि-रुद्राय नमः'। नाभि-चक्र में 'मूं मूल-प्रकृत्यै नमः'।

हृदय-चक्र में ह्रीं आधार-शक्त्यै नमः, प्रं प्रकृत्यै नमः, कूं कूर्माय नमः, अं अनन्ताय नमः, पृं पृथिव्यै नमः, सुं सुधाम्बुधये नमः, मं मणि-द्वीपाय नमः, चिं चिन्ता-मणि-गृहाय नमः, श्मं श्मशानाय नमः, पां पारिजाताय नमः। पारिजात की जड़ पर—रं रत्न-वेदिकायै नमः, मं मणि-पीठाय नमः। मणि पीठ के पूर्व में—मुं मुनिभ्यो नमः। दक्षिण में—दें देवेभ्यो नमः। पश्चिम में—शिं शिवाभ्यो नमः। उत्तर में—शं शव-मुण्डेभ्यो नमः।

हृदय के बाहर के अङ्गों में—

धं धर्माय नमः (दाएँ कन्धे में), ज्ञां ज्ञानाय नमः (बाँएँ कन्धे में), वैं वैराग्याय नमः (बाँईं जाँघ में), ऐं ऐश्वर्याय नमः (दाईं जाँघ में), अं अधर्माय नमः (मुख में), अं अज्ञानाय नमः बाँईं कोख में। अं अवैराग्याय नमः (नाभि में), अं अनैश्वर्याय नमः (दाईं कोख में)।

हृदय में स्थित 'मणि-पीठ' पर—

आं आनन्द-कन्दाय नमः, सर्व-तत्त्वात्मने पं पद्माय नमः, अं द्वादश-कलात्मने अर्क-मण्डलाय नमः, उं षोडश-कलात्मने सोम-मण्डलाय नमः, रं दश-कलात्मने वह्नि-मण्डलाय नमः, सं सत्त्वाय नमः, रं रजसे नमः, तं तमसे नमः, आं आत्मने नमः, अं

**अन्तरात्मने नमः, पं परमात्मने नमः, ह्रीं ज्ञानात्मने नमः।**

पूर्व दिशा के क्रम से **'पद्म'** के आठ दलों में आठ शक्तियों का और कर्णिका के मध्य में नवीं शक्ति का न्यास करे। यथा—

**१. इं इच्छायै नमः** (ॐ जयायै नमः)। **२. ज्ञां ज्ञानायै नमः,** (ॐ विजयायै नमः)। **३. क्रिं क्रियायै नमः** (ॐ अजितायै नमः)। **४. कां कामिन्यै नमः** (ॐ अपराजितायै नमः)। **५. कां काम-दायिन्यै नमः** (ॐ नित्यायै नमः)। **६. रं रत्यै नमः** (ॐ विलासिन्यै नमः)। **७. रं रति-प्रियायै नमः** (ॐ दोग्ध्र्यै नमः)। **८. आं आनन्दायै नमः** (ॐ अघोरायै नमः)। **९. मं मनोन्मन्यै नमः** (ॐ मङ्गलायै नमः)।

पुनः **'पद्म'** की कर्णिका में पीठों के ऊपर—

**१. ऐं परायै नमः, २. ऐं अपरायै नमः ३. ऐं परापरायै नमः ४. ह्सौः सदा-शिव-महा-प्रेत-पद्मासनाय नमः।**

उक्त **'पीठ-न्यास'** के द्वारा अपनी देह को **'पीठ'** समझकर **'काम-कला'** के रूप में अपनी आत्मा की भावना करे। यथा–

**मुखंबिन्दु-वदाकारं, तदधः कुच-युग्मकम् ।**
**सर्व-विद्यामृतापूर्णं, सर्व-वाग्-विभव-प्रदम् ।।**
**सर्वार्थ-साधकं देवं, सर्व-रञ्जन-कारकम् ।**
**सर्वाह्लादन-सम्पूर्णं, सर्व-रञ्जन-कारकम् ।।**
**सर्वाशा-साधकं देवं, सर्व-वश्य-प्रवर्तनम् ।**
**एतत् काम-कला-ध्यानं, संगोप्यं साधकोत्तमैः ।।**

**'इष्ट-देवता'** का ध्यान कर **'मूलाधार'** में, **'सहस्रार'** में और **'आज्ञा-चक्र'** में काम-बीज **'क्लीं'** का ध्यान करे। फिर अपने **'मूल-मन्त्र'** के पहले अक्षर से लेकर अन्तिम अक्षर तक को देवता के शिर से लेकर पाद-पर्यन्त रूप में ध्यान करे। **'मूलाधार चक्र'** से लेकर षट्-चक्रों में से प्रत्येक चक्र में अपने **मूल-मन्त्र** के एक-एक बीज का क्रम से ध्यान करे। जो बीज शेष रहें, उन सबका ध्यान **'सहस्रार'** में करे। फिर **'झिल्लिरा-मन्त्र'** का १० बार जप करे। यथा—**हं श्रीं क्लीं एं ओं श्रीं श्रीं हूं हूं स्त्रीं ह्रीं स्वाहा।**

अब **'भूत-लिपि मन्त्र'** का सात बार जप करे। यथा—

**अ इ उ ऋ लृ ए ऐ ओ औ ह य व र ल ङ क ख घ ग ञ च छ झ ज ण ट ठ ढ ड न त थ ध द म प फ भ ब श य त (मूलं) स ष श ब भ फ प म द ध थ त न ड ढ ठ ट ण ज झ छ च ञ ग घ ख क ङ ल र व य ह ओ औ ऐ ए लृ ऋ उ इ अ।**

फिर **'ह्रीं श्रीं क्लीं वं वं वं मूलं'**—इस मन्त्र का जप करे। तब **डां डाकिन्यै नमः** (विशुद्ध चक्र में), **रां राकिन्यै नमः** (अनाहत चक्र में), **लां लाकिन्यै नमः** (मणिपूर चक्र में), **शां शाकिन्यै नमः**, (मूलाधार चक्र में), **हां हाकिन्यै नमः** (आज्ञा-चक्र में), **कां काकिन्यै नमः** (स्वाधिष्ठान-चक्र में) मन्त्रों को पढ़ता हुआ उक्त योगिनियों का यथा-स्थान ध्यान करे।

## सूतक-मन्त्र

यदि आवश्यकता हो, तो **'सूतक मन्त्र'** का जप करे। यथा—

**'ॐ मूलं ॐ'** का जप कर **'क्रीं क्रीं क्रीं ॐ ॐ ॐ क्रीं क्रीं क्रीं'** इस मन्त्र का एक बार जप कर मुख-शुद्धि करे। फिर **'क्रों'** का दश बार जप करे।

## चौर-मन्त्र-न्यास

देह के द्वारों को खोलने के लिए नीचे लिखे मन्त्रों का यथा-स्थान दस-दस बार जप करते हुए न्यास करे—

**'ह्रीं ह्रीं नमः'** दोनों कानों में, **'ह्रीं ह्रीं नमः'** दोनों आँखों में, **'हुं हुं नमः'** दोनों नथुनों में। **'स्त्रीं नमः'** मुख में, **'क्लीं नमः'** नाभि में, **'हसौः नमः'** लिङ्ग के अग्र भाग में, **'ग्लूं नमः'** गुदा में, **'हुं नमः'** दोनों भौं के बीच में, **'हुं नमः'** ब्रह्म-रन्ध्र में अर्थात् चोटी के स्थान में।

## प्राण-योग, दीपनी, जीव-तत्त्वादि मन्त्र

अब अपनी आत्मा, परमात्मा और मन को **'सहस्रार'** में देवी

के रूप में भावना करे। तदनन्तर **'ॐ मूलं ॐ'** इस **'प्राण-योग-मन्त्र'** का दश बार जप करे। फिर **'ह्रीं मूलं ह्रीं'** इस **'दीपनी मन्त्र'** का सात बार जप करे। तब **'ईं मूलं ईं'** इस **'जीव-तत्त्व'** मन्त्र का तीन जप करे। फिर **'अं कं चं टं तं पं यं शं (मूलं) शं यं पं तं टं चं कं अं'** इस **'प्रमदा मन्त्र'** का तीन बार जप करे।

## इष्ट-देवता का ध्यानादि

श्री गुरुदेव के बताए हुए **ध्यान-मन्त्र** के अनुसार हृदय के **'अष्ट-दल-कमल'** पर **इष्ट-देवता** का ध्यान करे। फिर उनका मानसोपचारों से यथा-विधि पूजन करे। तब **प्रणव** और **मूल-मन्त्र** का यथा-शक्ति जप करे। फिर **'प्रणव'** और **'महा-सेतु, कुल्लुका'** आदि मन्त्रों का उनके-उनके स्थान में यथा-संख्या जप करे। अन्त में **'भूत-लिपि'** से पुटित **मूल-मन्त्र** का जप करे।

इस प्रकार जप कर चुकने पर उनका जप-फल तेज-रूप में देवता के दाहिने हाथ में समर्पित कर दे। यथा—

**ॐ गुह्यातिगुह्य-गोप्त्री त्वं, गृहाणास्मत्-कृतं जपम्,**
**सिद्धिर्भवतु मे देवि ! त्वत्-प्रसादान् महेश्वरि !**

***

# बाह्य पूजा

## पूजा-यन्त्र का निर्माण

अब साधक **'बाह्य-पूजा'** के लिए प्रस्तुत हो। वह सबसे पहले यथा-विहित धातु आदि के पत्र में इष्ट-देवता के **'पूजा-यन्त्र'** की यथा-विहित लेखनी और द्रव्य से सुन्दर रचना करे।

ताँबा, कपाल-खण्ड, श्मशान की लकड़ी की पटरी, पत्थर, स्फटिक, अष्ट-धातु, सोना, चाँदी, लोहा आदि के सुन्दर सुडौल आकार के बने हुए छोटे चौकोर पत्र पर उक्त **'चक्र'** (पूजा-यन्त्र) की अष्ट-गन्ध आदि से रचना करे।

**'काली-तन्त्र'** में लिखा है—पहले अधोमुख एक **'त्रिकोण'** की रचना करे, फिर इस **त्रिकोण** को भीतर डाल कर दूसरे **त्रिकोण** की रचना करे। इसी प्रकार तीन और **त्रिकोण** बनाए। इन पाँचों **त्रिकोणों** को भीतर डालकर एक **'वृत्त'** बनाए। इसके बाहर एक **'अष्ट-दल'** कमल की रचना करे। इस **अष्ट-दल-कमल** को दूसरा **'वृत्त'** बना कर घेर दे। फिर चार द्वार-वाले **'भूपुर'** की रचना करे। इस प्रकार भगवती कालिका का **'पूजा-यन्त्र'** बन जाता है।

उक्त **'यन्त्र'** को सोने, चाँदी, पत्थर या अष्ट-धातु के छोटे से सुन्दर बने चौकोर पत्र पर बनाए। **'अष्ट-गन्ध'** निम्न प्रकार हैं—

**१. स्वयम्भू कुसुम, २. कुण्डोद्भव, ३. गोलोत्थ, ४. गोरोचन, ५. अगर, ६. केशर, ७. कस्तूरी, ८. श्वेत चन्दन।**

आठों वस्तुओं को बराबर-बराबर लेकर एकत्र पीसकर **'अष्ट-गन्ध'** बना ले। इसी से उक्त **'यन्त्र-राज'** की रचना करे।

**स्वतन्त्र-तन्त्र** में लिखा है पहले एक दूसरे के ऊपर **तीन त्रिकोण** बनाये। इन **तीनों त्रिकोणों** को भीतर डालकर एक **षट्-कोण** की रचना करे। उसके बाहर **अष्ट-दल-कमल** बनाए। तदनन्तर चार द्वारों से युक्त एक **भूपुर** की रचना करे। यह दूसरे **प्रकार का पूजा-यन्त्र** है।

कुमारी-कल्प में लिखा है पहले एक त्रिकोण बनाए। उसके ऊपर दूसरा फिर तीसरा त्रिकोण बनाए। इन तीनों त्रिकोणों को भीतर डालकर एक षट्-कोण की रचना करे। पहले त्रिकोण के मध्य में बिन्दु बनाकर उसके ऊपर ह्रीं बीज लिखे। षट्-कोण के बाहर एक वृत्त की रचना करे वृत्त के बाहर एक अष्ट-दल-कमल बनाए। फिर दूसरा वृत्त बनाकर चार द्वारवाले भूपुर की रचना करे।

**'भगवती कालिका'** की पूजा के लिए श्री गुरुदेव के द्वारा बताए हुए **'यन्त्र-राज'** की सविधि रचना करे।

अपने सामने स्थापित चौकी के ऊपर रखी हुई सुन्दर थाली के बीच में एक पुष्प रखकर उस पर उक्त **'यन्त्र-राज'** को स्थापित करे। इसके बाद साधक **'यन्त्र-राज'** के बिन्दु के नीचे भावना द्वारा नीचे लिखे हुए **'पीठों'** का गन्धाक्षत द्वारा पूजन करे—

## पीठ-पूजा

**१. मं मण्डूकाय नमः, २. कां कालाग्नि-रुद्राय नमः ३. मूं मूल-प्रकृत्यै नमः, ४. ह्रीं आधार-शक्त्यै नमः, ५. प्रं प्रकृत्यै नमः, ६. कूं कूर्माय नमः, ७. अं अनन्ताय नमः, ८. पृं पृथिव्यै नमः, ९. सुं सुधाम्बुधये नमः, १०. मं मणि-द्वीपाय नमः, ११. चिं चिन्तामणि-गृहाय नमः, १२. श्मं श्मशानाय नमः, १३. पां पारिजाताय नमः,** (पारिजात की जड़ में), **१४. रं रत्न-वेदिकायै नमः, १५. मं मणि-पीठाय नमः, १६.** (मणि-पीठ की चारों दिशाओं में)—**मुं नाना-मुनिभ्यो नमः**—पूर्व में, **दें नाना-देवेभ्यो नमः**—दक्षिण में, **बहु-मांसास्थि-मोदमाना शिं शिवाभ्यो नमः**—पश्चिम में, **शं शव-मुण्डेभ्यो नमः**—उत्तर में।

पुनः **'मणि-पीठ'** की पूर्वादि दिशाओं में तथा आग्नेयादि कोणों में—**धं धर्माय नमः**—पूर्व में, **ज्ञां ज्ञानाय नमः** दक्षिण में, **वैं वैराग्याय नमः**—पश्चिम में, **ऐं ऐश्वर्याय नमः** उत्तर में अं अधर्माय नमः आग्नेय कोण में, **अं अज्ञानाय नमः** नैर्ऋत्य में, **अं अवैराग्याय नमः** वायव्य में, **अं अनैश्वर्याय नमः** ईशान में।

अब पुनः '**मणि-पीठ**' के ऊपर पूजन करे—

**आं आनन्द-कन्दाय नमः, सर्व-तत्त्वात्मने पं पद्माय नमः अं द्वादश-कलात्मने अर्क-मण्डलाय नमः, उं षोडश-कलात्मने सोम-मण्डलाय नमः, रं दश-कलात्मने वह्नि-मण्डलाय नमः, सं सत्त्वाय नमः, रं रजसे नमः, तं तमसे नमः, आं आत्मने नमः, अं अन्तरात्मने नमः, पं परमात्मने नमः, ह्रीं ज्ञानात्मने नमः।**

उक्त '**पद्म**' के आठ '**दलों**' में आठ '**शक्तियों**' का और उसकी '**कर्णिका**' के मध्य में नवीं '**शक्ति**' का पूजन करे। यथा—

**१. इं इच्छायै नमः, २. ज्ञां ज्ञानायै नमः, ३. क्रिं क्रियायै नमः, ४. कां कामिन्यै नमः, ५. कां काम-दायिन्यै नमः, ६. रं रत्यै नमः, ७. रं रति-प्रियायै नमः, ८. आं आनन्दायै नमः, ९. मं मनोन्मन्यै नमः।**

पुनः '**पद्म**' की कर्णिका में पूजन करे। यथा—

**१. ऐं परायै नमः, २. ऐं अपरायै नमः, ३. ऐं परापरायै नमः, ४. हसौः सदा-शिव-महा-प्रेत-पद्मासनाय नमः।**

ऊपर लिखे हुए क्रम से '**श्री चक्र**' के '**बिन्दु**' के नीचे यथा-विधि '**पीठ-शक्तियों**' का पूजन कर चुकने पर '**कलश**' का स्थापन करे। यथा—

## कलश आदि की स्थापना

**कलश-स्थापन**—'**कलश**' ५० अंगुल ऊँचा, जिसका व्यास १२ अंगुल और मुख का व्यास ८ अंगुल हो, स्थापित करना चाहिए। वह सोने, चाँदी अथवा मिट्टी का होना चाहिए।

अपनी बाँईं ओर भूमि पर रक्त-चन्दन आदि से अनार या बिल्व की कलम द्वारा छोटे आकार का एक '**षट्-कोण**' बनाए। उसके मध्य में एक '**बिन्दु**' की रचना करे। फिर '**षट्-कोण**' को एक '**वृत्त**' से घेर दे। उसके बाहर '**सम चतुष्कोण**' की रचना करे। अब इस '**मण्डल**' पर '**सामान्यार्घ्य**' का जल छिड़के। उस **मण्डल** का '**ह्रीं आधार-शक्तिभ्यो नमः**' से पूजन करे। फिर '**त्रिपद**' या किसी पत्ते आदि का आधार लेकर '**नमः**' मन्त्र पढ़ता हुआ, उसे

जल से धोकर, उस **मण्डल** पर स्थापित करे। फिर इस **आधार** के चारों ओर '**रं दश-कलात्मने वह्नि-मण्डलाय नमः**', मन्त्र से '**अग्नि-मण्डल**' का पूजन करे। फिर '**कलश**' को लेकर उसमें जल छोड़कर '**फट्**' मन्त्र से उसे धोकर लाल वस्त्र से लपेट कर, माला से विभूषित कर देवी-रूप में उसकी भावना कर '**ॐ**' मन्त्र पढ़कर उसे उक्त '**आधार**' पर स्थापित करे।

'**कलश**' के चारों ओर '**अं द्वादश-कलात्मने अर्क-मण्डलाय नमः**' मन्त्र से '**सूर्य-मण्डल**' का पूजन करे। अब '**मूल-मन्त्र**' का उच्चारण करता हुआ '**तीर्थ**' से '**कलश**' को पूर्ण करे। फिर '**कलश**' के द्रव्य के चारों ओर '**उं षोडश-कलात्मने सोम-मण्डलाय नमः**', मन्त्र से '**सोम-मण्डल**' का पूजन करे। फिर '**कलश**' के ऊपर '**फट्-कार**' कर उसकी रक्षा करे। '**हुं**' बीज का उच्चारण कर '**अवगुण्ठन-मुद्रा**' द्वारा उसके चारों ओर पर्दा डालने की भावना करे। '**मूल-मन्त्र**' पढ़ता हुआ '**कलश**' के द्रव्य को एकटक देखे। फिर उसमें '**सामान्यार्घ्य**' का जल छिड़क कर '**कुश**' से उसका ताड़न करे। फिर—

**ॐ गङ्गे च यमुने चैव, गोदावरि सरस्वति !**
**नर्मदे सिन्धु कावेरि ! द्रव्येऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ।।**

उक्त मन्त्र पढ़कर '**कलश**' के द्रव्य का पूजन कर भावना करे कि वह सब तीर्थ-मय हो गया है और उसे अपने '**इष्ट-देवता**' के रूप में देखे। अब '**कलश**' के द्रव्य के ऊपर दाहिना हाथ रखकर मन्त्रों द्वारा उसका शापोद्धार करे। यथा—

**ॐ एकमेव परं-ब्रह्म, स्थूल-सूक्ष्म-मयं ध्रुवम् ।**
**कचोद्भवां ब्रह्म-हत्यां, तेन ते नाशयाम्यहम् ।।**
**ॐ सूर्य - मण्डल - सम्भूते, वरुणालय-सम्भवे !**
**अमा - बीज - मये देवि ! शुक्र - शापाद् विमुच्यताम् ।।**
**ॐ वेदानां प्रणवो बीजं, ब्रह्मानन्द-मयो यदि ।**
**तेन सत्येन हे देवि ! ब्रह्म-हत्यां व्यपोहतु ।।**
**ॐ शां शीं शूं शैं शौं शः शुक्र-शाप-विमोचितायै सुरा-**

**देव्यै नमः**—इस मन्त्र का १२ बार जप करे।

**ॐ वां वीं वूं वैं वौं वः ब्रह्म-शाप-विमोचितायै सुरा-देव्यै नमः'**—इस मन्त्र का १२ बार जप करे।

**ॐ रां रीं रूं रैं रौं रः रुद्र-शाप-विमोचितायै सुरा-देव्यै नमः**—इस मन्त्र का १२ बार जप करे।

**ह्रीं श्रीं क्रां क्रीं क्रूं क्रैं क्रौं क्रः सुरा कृष्ण-शापं विमोचय, अमृतं स्रावय-स्रावय स्वाहा**—इस मन्त्र का दस बार जप करे।

इस प्रकार शाप-मोचन कर 'कलश'-द्रव्य के ऊपर **धेनु-मुद्रा** दिखाता हुआ, नीचे का मन्त्र पढ़कर उसे **अमृत-मय** करे—

**प्लुं क्लुं म्लुं ङ्लुं स्वाहा अमृते, अमृतोद्भवे, अमृत-वर्षिणि! अमृतं स्रावय स्रावय स्वाहा** (१० बार जपे)

तब निम्न दो मन्त्रों का तीन-तीन बार जप करे—

**ॐ पवमानः परं - ब्रह्म, पवमानः परो रसः ।**
**पवमानं परं ज्ञानं, तेन ते पावयाम्यहम् ।।१।।**

**ॐ हंसः शुचिषद् वसुरन्तरिक्ष सद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत्, निषद्वर सदृत सद्-व्योम सदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं वृहत्।।२।।**

इसके बाद साधक **'कलश-द्रव्य'** के ऊपर **'आनन्द-भैरव'** और **'आनन्द-भैरवी'** का क्रम से ध्यान और उनके मन्त्र का जप करे। यथा—

## आनन्द-भैरव का ध्यान

**सूर्य-कोटि-प्रतीकाशं, चन्द्र-कोटि-सुशीतलम् ।**
**अष्टादश-भुजं देवं, पञ्च-वक्त्रं त्रिलोचनम् ।।**
**अमृतार्णव-मध्यस्थं, ब्रह्म-पद्मोपरि-स्थितम् ।**
**वृषारूढं नील-कण्ठं, सर्वाभरण-भूषितम् ।।**
**कपाल-खट्वाङ्ग-धरं, घण्टा-डमरु-वादिनम् ।**
**पाशाङ्कुश-धरं देवं, गदा-मुशल-धारिणम् ।।**
**खड्ग-खेटक-पट्टीशं, मुद्गरं शूल-दण्डकम् ।**
**विचित्र-खेटकं मुण्डं, वरदाभय-पाणिकम् ।**
**लोहितं देव-देवेशं, भावयामि पुनः पुनः ।।**

**मन्त्र—ल-ह-स-क्ष-म-ल-व-र-यूं आनन्द-भैरवाय वषट्**—इस मन्त्र-का तीन बार जप करे।

## . आनन्द-भैरवी का ध्यान

**भावयामि सुधां देवीं, चन्द्र-कोटि-युत-प्रभाम् ।**
**हिम-कुन्देन्दु-धवलां, पञ्च-वक्त्रां त्रिलोचनाम् ।।**
**अष्टादश-भुजैर्युक्तां, सर्वानन्द-करोद्यताम् ।**
**प्रहसन्तीं विशालाक्षीं, देव-देवस्य सम्मुखीम् ।।**

**मन्त्र : स-ह-क्ष-म-ल-व-र यीं आनन्द-भैरव्यै वौषट्**—इस मन्त्र का तीन बार जप करे।

अब साधक **'द्रव्य'** के ऊपर **'अ-क-थ त्रिकोण'** के लिखने की भावना करे। यथा–**'त्रिकोण'** के पश्चिम-कोण से लेकर उत्तर-कोण तक ऊपर की रेखा पर **'अं'** से लेकर **'अः'** तक **मातृका वर्णों** के लिखने की भावना करे। फिर उत्तर के कोण से लेकर नीचे के पूर्व-कोण तक दाहिनी रेखा पर **'कं'** से लेकर **'तं'** तक **मातृका वर्णों** के लिखने की भावना करे। अब पूर्व के कोण से लेकर पश्चिम के कोण तक बाँईं रेखा पर **'थं'** से लेकर **'हं'** तक के **मातृका वर्णों** की लिखने की भावना करे। फिर त्रिकोण के मध्य में **'लं'**, **'क्षं'** इन दो मातृका-वर्णों की लिखने के भावना करे। अब **'मूल-मन्त्र'** के तीन खण्ड करके एक-एक खण्ड से पूर्व दिशा के क्रम से **'अकथ-त्रिकोणो'** के एक-एक कोण का गन्धाक्षत से पूजन करे।

तब **'अकथ-त्रिकोण'** के मध्य में **'आनन्द-भैरव'** और **'आनन्द-भैरवी'** का संयोगावस्था में ध्यान करे और इस क्रिया से जो पदार्थ क्षरित हो, उसके **'कलश-द्रव्य'** में मिश्रित होने से उसे **अमृत-मय** हुआ समझे।

अब साधक **'कलश'** के द्रव्य पर **'धेनु-मुद्रा'** दिखाकर उसे **अमृत-मय** करे। इसके बाद उस द्रव्य पर **'वं'** वरुण-बीज का आठ बार जप करे। फिर बाद में अपने **'मूल-मन्त्र'** का आठ बार जप करे। इस प्रकार यहाँ **'प्रथम तत्त्व'** का शोधन समाप्त हुआ।

## विशेषार्घ्य पात्र (श्री-पात्र)

अपने आसन और **'श्री-चक्र'** के सिंहासन के बीच की भूमि पर **'कलश'** के समानान्तर पर **'विशेषार्घ्य-पात्र'** (श्री-पात्र) की स्थापना करे।

पहले उस स्थान पर **'त्रिकोण'**, उसके बाहर **'षट्-कोण'**, उसके बाहर **'वृत्त'** और उसके बाहर **'चतुरस्र'** का मण्डल बनाए। **'त्रिकोण'** के मध्य में **'ह्रीं'** बीज अङ्कित करे। अब **'चतुरस्र'** के चारों कोणों में पीठों का पूजन करे। यथा—

**पूं पूर्ण-गिरि-पीठाय नमः** (आग्नेय कोण में)
**उं उड्यान-पीठाय नमः** (नैर्ऋत्य कोण में)
**जां जालन्धर-पीठाय नमः** (वायव्य कोण में)
**कां काम-रूप-पीठाय नमः** (ईशान कोण में)

अब **'षट्-कोण'** के प्रत्येक कोण में पूर्व दिशा के क्रम से षट्-कोणों का पूजन करे। यथा—

**ह्रां हृच्छक्त्यै नमः। ह्रीं शिर-शक्त्यै नमः। ह्रूं शिखा-शक्त्यै नमः। ह्रैं कवच-शक्त्यै नमः। ह्रौं नेत्र-शक्त्यै नमः। ह्रः अ-शक्त्यै नमः।**

अब साधक **'त्रिकोण'** के तीनों कोणों में, पूर्व दिशा के क्रम से, अपने **'मूल-मन्त्र'** के तीन खण्ड करके, एक-एक खण्ड से, उन तीनों कोणों में पूजन करे। तब **'पूरे मण्डल'** पर **'ह्रीं आधार-शक्त्यै नमः'**—इस मन्त्र से **आधार-शक्ति** का पूजन करे। तब **'त्रिपद'** या कोई पत्ता लेकर उसे धोकर **'आधार'** के रूप में उसे **'मण्डल'** पर स्थापित करे। उस **आधार** पर **'नमः'** कहकर **'सामान्यार्घ्य'** का जल छिड़के और उसी **आधार** पर **'अग्नि-मण्डल'** और उसकी **कलाओं** का पूजन करे। यथा—

**रं वह्नि-मण्डलाय धर्म-प्रद-दश-कलात्मने श्रीदक्षिण-कालिकायाः विशेषार्घ्य-पात्राधाराय नमः।** (पूर्व दिशा से वामावर्त्त-क्रम से पूजन करे)

**यं धूम्रार्चिषे नमः, रं ऊष्मायै नमः, लं ज्वलिन्यै नमः, वं**

**ज्वालिन्यै नमः, शं विस्फुलिङ्गिन्यै नमः, षं सुश्रियै नमः, सं स्वरूपायै नमः, हं कपिलायै नमः, लं हव्यवहायै नमः, क्षं कव्यवहायै नमः।**

अब एक सुन्दर पात्र लेकर **'फट्'** मन्त्र का उच्चारण कर **'सामान्यार्घ्य'** के जल से उसे धोए। फिर उसे उक्त **'आधार'** पर स्थापित करे।

फिर **'अं अर्क-मण्डलाय अर्थ-प्रद-द्वादश-कलात्मने श्री-दक्षिण-कालिकायाः विशेषार्घ्य-पात्राय नमः।'** इस मन्त्र से उस पात्र पर **'अर्क-मण्डल'** की पूजा कर उसकी कलाओं का पूजन करे। यथा—

**कं भं तपिन्यै नमः, खं बं तापिन्यै नमः, गं फं धूम्रायै नमः,**
**घं पं मरीच्यै नमः, ङं नं ज्वलिन्यै नमः, चं धं रुच्यै नमः,**
**छं दं सुषुम्नायै नमः, जं थं भोगदायै नमः, झं तं विश्वायै नमः,**
**ञं णं बोधिन्यै नमः, टं ढं धारिण्यै नमः, ठं डं क्षमायै नमः।**

इस प्रकार पात्र के ऊपर **'सूर्य-मण्डल'** का पूजन कर उसके भीतर कुश से **'त्रिकोण-वृत्त'** और **'षट्-कोण'** का यन्त्र भावना द्वारा लिखे। फिर **'मूल-मन्त्र'** से **'त्रिकोण'** की पूजा कर **'षडङ्ग-मन्त्रों'** से **'षट्-कोण'** का पूजन करे।

पूजन कर **'मूल-मन्त्र'** के साथ मातृका-वर्णों का विलोम-क्रम से अर्थात् **'ळं'** से **'अं'** तक मन-ही-मन उच्चारण करता हुआ, उस पात्र को **'कलश'** के द्रव्य से पूर्ण करे। फिर उसमें रक्त-चन्दन, यव, मदार पुष्प, श्वेत अपराजिता, कनैर पुष्प, बिल्व-पत्र, बर्बरी, कुन्द पुष्प, दूर्वा, अक्षत, सुगन्ध आदि द्रव्य छोड़े।

इसके बाद साधक **'मांसादि'** अन्य चार तत्त्वों का शोधन करे। यथा—

## मांसादि-चार तत्त्वों का शोधन

### १. मांस-शोधन :

एक पात्र में **'मांस'** लेकर अपने सामने रखे और उसे अपने दाहिने हाथ से स्पर्श कर निम्न मन्त्र पढ़कर अभिमन्त्रित करे—

ॐ प्रतद्विष्णुस्तुवते वीर्येण मृगो न भीमः कुचरो गरिष्ठाः।
यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्वधिक्षिपन्ति भुवनानि विश्वाः।।

**२. मीन-शोधन :**

एक पात्र में **'मत्स्य-खण्ड'** लेकर **'शुद्धि-पात्र'** के पास रखकर उसे पूर्व-वत् निम्न-मन्त्र से अभिमन्त्रित करे—

**ॐ त्र्यम्बकं यजामहे, सुगन्धिं पुष्टि - वर्धनम् ।**
**उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् ।।**

**३. मुद्रा-शोधन :**

अन्न के बने हुए सब पदार्थ थोड़े-थोड़े एक पात्र में लेकर, उसे **'मीन-पात्र'** के पास रखकर निम्न मन्त्र पढ़कर अभिमन्त्रित करे—

**ॐ तद्-विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति् सूरयः दिवीव चक्षुराततम्।**
**तद्-विप्रासो विपण्यवो जागृवांसः समिन्धते विष्णोर्यत् परमं पदम्।।**

**४. पञ्चम-शोधन :**

एक पात्र में **'पञ्चम-तत्त्व'** लेकर उसे **'मुद्रा-पात्र'** के पास स्थापित कर निम्न मन्त्र से पूर्व-वत् अभिमन्त्रित करे–

**ॐ विष्णुः योनिं कल्पयतु त्वष्टा-रूपाणि पिंशतु ।**
**आसिञ्चतु प्रजापतिर्धाता गर्भं दधातु वै ।।**
**गर्भं देहि सिनीवालि, गर्भं देहि सरस्वति !**
**गर्भं धेह्यश्विनौ देवावाधत्तां पुष्कर-स्रजा ।।**

अब साधक चारों तत्त्वों पर हाथ रखता हुआ नीचे लिखे हुए मन्त्र को पढ़ता हुआ, उन्हें अभिमन्त्रित करे—

**प्लुं क्लुं म्लुं ङ्लुं स्वाहा अमृते, अमृतोद्भवे, अमृत-वर्षिणि! अमृतं स्रावय स्रावय स्वाहा।**

इस प्रकार अभिमन्त्रित कर प्रत्येक द्रव्य का अति अल्प अंश लेकर **'विशेषार्घ्य-पात्र'** के द्रव्य में छोड़े। फिर **'हुं'** बीज का उच्चारण कर **'अवगुण्ठन-मुद्रा'** से उन तत्त्वों का **अवगुण्ठन** करे। उन पर **'धेनु-मुद्रा'** दिखाकर उन्हें **अमृत-मय** करे। तीन बार **'ताल'** 'देकर, दस बार **'चुटकियाँ'** बजाकर उनका **'दिग्-बन्धन'** करे। फिर

प्रत्येक तत्त्व पर आठ-आठ बार **'मूल-मन्त्र'** का जप करे।

इस प्रकार चारों द्रव्यों का शोधन कर अपनी बाँईं ओर उन्हें यथा-क्रम स्थापित कर दे।

## विशेषार्घ्य-पात्र (श्रीपात्र) का शेष पूजन

अब पुनः **'विशेषार्घ्य-पात्र'** के द्रव्य पर कलाओं सहित **'सोम-मण्डल'** का पूजन करे। यथा—

**उं सोम-मण्डलाय काम-प्रद-षोडश-कलात्मने श्रीदक्षिण-कालिकायाः विशेषार्घ्य-पात्र-द्रव्याय नमः।**

**अं अमृतायै नमः, आं मानदायै नमः, इं पूषायै नमः, ईं तुष्ट्यै नमः, उं पुष्ट्यै नमः, ऊं रत्यै नमः, ऋं धृत्यै नमः, ॠं शशिन्यै नमः, लृं चन्द्रिकायै नमः, ॡं कान्त्यै नमः, एं ज्योत्स्नायै नमः, ऐं श्रियै नमः, ओं प्रीत्यै नमः, औं अङ्गदायै नमः, अं पूर्णायै नमः, अः पूर्णामृतायै नमः।**

इसके बाद **'पात्र के द्रव्य'** के ऊपर कल्पना द्वारा **'अकथ-त्रिकोण'** की रचना करे। **'त्रिकोण'** की रेखाओं पर **'मातृका-वर्णों'**को अङ्कित करे। बाँईं ओर से ऊपर की रेखा पर **'अं'** से लेकर **'अः'** तक के वर्ण लिखे। **'त्रिकोण'** की दाईं रेखा पर **'कं'** से लेकर **'थं'** तक के वर्ण लिखे। बाँईं ओर की रेखा पर **'दं'** से लेकर **'हं'** तक के वर्ण लिखे। **'त्रिकोण'** के मध्य में **'लं' 'क्षं'** लिखे।

इस प्रकार **'अकथ-यन्त्र'** की रचना कर चुकने पर **'मूल-मन्त्र'** के तीन खण्ड कर, एक-एक खण्ड से पूर्वादि क्रम से उक्त **'त्रिकोण'** के एक-एक कोण का पूजन करे। अब—

**'ॐ गङ्गे च यमुने चैव, गोदावरि सरस्वति !**
**नर्मदे सिन्धु कावेरि! द्रव्येऽस्मिन् सन्निधिं कुरु।।**

यह मन्त्र पढ़कर **'अंकुश-मुद्रा'** द्वारा **'सूर्य-मण्डल'** से **'पात्र के द्रव्य'** में **'तीर्थों का आकर्षण'** करे और उस द्रव्य के **'तीर्थ-मय'** होने की भावना करे।

अब **'पात्र के द्रव्य'** के ऊपर बनाए गए **'अकथ-यन्त्र'** में

'आनन्द-भैरव' और 'आनन्द-भैरवी' का ध्यान-पूजन आवाहन-पूर्वक करे। यथा—

**हसक्षमलवरयूं आनन्द-भैरवाय वषट् श्रीआनन्द-भैरव ! इहागच्छ इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ, इह सन्निधेहि इह सन्निधेहि, इह सन्निरुद्धस्व इह सन्निरुद्धस्व, इह सम्मुखीभव इह सम्मुखीभव, मम पञ्चोपचार-पूजां गृहाण-गृहाण।**

उक्त मन्त्र पढ़ते हुए, यथा-क्रम आवाहनीय आदि 'मुद्राएँ' दिखाता जाए। तब 'पञ्चोपचार-पूजा' करे—

**हसक्षमलवरयूं आनन्द-भैरवाय वषट् गन्धं समर्पयामि।**
**हसक्षमलवरयूं आनन्द-भैरवाय वषट् पुष्पं समर्पयामि।**
**हसक्षमलवरयूं आनन्द-भैरवाय वषट् धूपं समर्पयामि।**
**हसक्षमलवरयूं आनन्द-भैरवाय वषट् दीपं समर्पयामि।**
**हसक्षमलवरयूं आनन्द-भैरवाय वषट् नैवेद्यं समर्पयामि।**
**हसक्षमलवरयूं आनन्द-भैरवाय वषट् ताम्बूलं समर्पयामि।**

अब ध्यान के साथ 'आनन्द-भैरव' के बाँईं ओर 'आनन्द-भैरवी' का आवाहनादि करे—

**सहक्षमलवरयीं आनन्द-भैरव्यै वौषट्, श्रीआनन्द-भैरवि! इहागच्छ इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ, इह सन्निधेहि इह सन्निधेहि, इह सन्निरुद्धस्व, इह सन्निरुद्धस्व, इह सम्मुखीभव इह सम्मुखीभव, मम पञ्चोपचार-पूजां गृहाण गृहाण।**

पूर्व-वत् यथा-क्रम आवाहनीय आदि मुद्राएँ दिखाता जाए। तब 'पञ्चोपचार-पूजा' करे—

**सहक्षमलवरयीं आनन्द-भैरव्यै वौषट् गन्धं समर्पयामि।**
**सहक्षमलवरयीं आनन्द-भैरव्यै वौषट् पुष्पं समर्पयामि।**
**सहक्षमलवरयीं आनन्द-भैरव्यै वौषट् धूपं समर्पयामि।**
**सहक्षमलवरयीं आनन्द-भैरव्यै वौषट् दीपं समर्पयामि।**
**सहक्षमलवरयीं आनन्द-भैरव्यै वौषट् नैवेद्यं समर्पयामि।**
**सहक्षमलवरयीं आनन्द-भैरव्यै वौषट् ताम्बूलं समर्पयामि।**

इस प्रकार पूजन कर चुकने पर 'विशेषार्घ्य-पात्र' के ऊपर

पूर्वादि दिशा के क्रम से चारों दिशाओं में और उसके मध्य में 'पञ्चों-रत्नों' की पूजा करे। यथा—

ग्लूं गगन-रत्नेभ्यो नमः पूर्व में।
स्लूं स्वर्ग-रत्नेभ्यो नमः दक्षिण में।
प्लूं पाताल-रत्नेभ्यो नमः पश्चिम में।
म्लूं मर्त्य-लोक-रत्नेभ्यो नमः उत्तर में।
न्लूं नाग-लोक-रत्नेभ्यो नमः मध्य में।

अब 'विशेषार्घ्य-पात्र' के ऊपर अपना दाहिना हाथ रखकर आगे लिखे मन्त्रों से उसे अभिमन्त्रित करे—

ऐं ह्रीं सौः ब्रह्म-रस-सम्भूतमशेष-रस-सम्भवम् ।
आपूरितं महा-पात्रं, पीयूष-रस-संयुतम् ।।१
अखण्डैक-रसानन्द-करे, पर-सुधात्मनि !
स्वच्छन्द-स्फुरणामत्र, निधेहि कुल-रूपिणि ! ।।२
अकुलस्थामृताकारे, सिद्धि-ज्ञान-करे परे !
अमृतत्वं निधेह्यस्मिन्, वस्तूनि क्लिन्न-रूपिणि ।।३
तद्-रूपेणैकरस्यं च कृत्वार्घ्यं तत्-स्वरूपिणि !
भूत्वा परामृताकारं, मयि चित्-स्फुरणां कुरु ।।४

इस प्रकार 'विशेषार्घ्य-पात्र' को अभिमन्त्रित कर 'द्रव्य' के बीच में 'ईंकार'-रूप 'काम-कला' को कल्पना द्वारा लिखकर उस पर 'इष्ट-देवता' का आवाहन करे। यथा—

मूलं साङ्गे श्रीमहा - काल - शिव - सहिते श्रीमद्-दक्षिणे कालिके ! इहागच्छ इहागच्छ।

मूलं साङ्गे श्रीमहा-काल-शिव सहिते श्रीमद्-दक्षिणे कालिके ! इह तिष्ठ, इह तिष्ठ।

मूलं साङ्गे श्रीमहा - काल - शिव - सहिते श्रीमद्-दक्षिणे कालिके ! इह सन्निधेहि, इह सन्निधेहि।

मूलं साङ्गे श्रीमहा-काल-शिव-सहिते श्रीमद्-दक्षिणे कालिके इह सन्निरुद्धस्व, इह सन्निरुद्धस्व।

मूलं साङ्गे श्रीमहा-काल-शिव-सहिते श्रीमद्-दक्षिणे

**कालिके! इह सम्मुखीभव, इह सम्मुखीभव।**

**मम पञ्चोपचार-पूजां गृहाण, गृहाण। देवि ! प्रसन्ना भव, वरदा भव।**

उक्त मन्त्र-वाक्य पढ़ता हुआ यथा-क्रम **'पाँचों मुद्राएँ'** दिखाता जाय। इस प्रकार देवता का **आवाहन** आदि करे। **ताल-त्रय** देकर दशों दिशाओं में चुटकियाँ बजाकर **दिग्-बन्धन** करे। फिर **'हुं'** बीज पढ़कर **'अव-गुण्ठन मुद्रा'** से **अवगुण्ठन** करे। **'धेनु-मुद्रा'** से **अमृत-मय** करे। **'योनि-मुद्रा'** दिखाकर **नमस्कार** करे। फिर पूजा करे। यथा—

**हंसः नमः गन्धं समर्पयामि। हंसः नमः पुष्पं समर्पयामि। हंसः नमः धूपं समर्पयामि। हंसः नमः दीपं समर्पयामि। हंसः नमः नैवेद्यं समर्पयामि। हंसः नमः ताम्बूलं समर्पयामि।**

तदनन्तर **'शङ्ख-मुद्रा'** दिखाकर उनके **'षडङ्गों'** का पूजन कर उनका **'सकलीकरण'** करे। यथा—

**ह्रां हृच्छक्त्यै नमः। ह्रीं शिर-शक्त्यै नमः। ह्रूं शिखा-शक्त्यै नमः। ह्रैं कवच-शक्त्यै नमः। ह्रौं नेत्र-शक्त्यै नमः। ह्रः अस्त्र-शक्त्यै नमः।**

इसके बाद पात्र के द्रव्य पर **'मत्स्य-मुद्रा'** प्रदर्शित कर **'मूल-मन्त्र'** का दस बार जप करे। इस प्रकार पूजन कर **'विशेषार्घ्य-पात्र'** को ध्यान द्वारा देवता-स्वरूप समझे। तदनन्तर उसे तीन पुष्पाञ्जलियाँ प्रदान करे। इसके बाद धूप तथा दीप प्रदान करे।

## अन्य पात्रों की स्थापना

अब साधक **'कलश'** के पास से लेकर **'विशेषार्घ्य-पात्र'** तक एक पंक्ति में **'गुरु-पात्र, भोग-पात्र, शक्ति-पात्र, योगिनी-पात्र, वीर-पात्र, बलि-पात्र'** आदि की स्थापना करे। यथा—

**१. गुरु-पात्र**—साधक **'कलश'** के पास भूमि पर **'त्रिकोण-वृत्त'** का एक मण्डल बनाए। उसमें गन्धाक्षत से **'ॐ आधार-शक्त्यै नमः'** मन्त्र से **आधार-शक्ति** का पूजन करे। फिर **'फट्'** मन्त्र से **आधार** को धोकर उसे **'मण्डल'** पर रखकर **'ॐ गुरु-**

**पात्राधाराय नमः गन्धाक्षतं समर्पयामि'** से गन्धाक्षत द्वारा पूजा करे। तब **'फट्'** मन्त्र से पात्र को धोकर उसे आधार के ऊपर स्थापित करे। **'ॐ गुरु-पात्राय नमः गन्धाक्षतं समर्पयामि'** से गन्धाक्षत द्वारा पूजा करे। तब उस पात्र में **'ह्रीं'** मन्त्र से जल भरे। फिर उसमें **'ॐ गङ्गे चैव'** इत्यादि मन्त्र पढ़कर **'अंकुश-मुद्रा'** द्वारा सूर्य-मण्डल से तीर्थों का आवाहन करे। तब **'ॐ'** मन्त्र पढ़कर पात्र के जल में गन्ध, पुष्प, अक्षत तथा शुद्धि-खण्ड आदि और **'विशेषार्घ्य-पात्र'** का द्रव्य छोड़े। फिर **'धेनु-मुद्रा'** दिखाकर उस द्रव्य को अमृत-मय करे। तब पात्र के ऊपर **'ॐ'** का दस बार जप करे।

**२. भोग-पात्र**–**'गुरु-पात्र'** के पास भूमि पर **'त्रिकोण-वृत्त'** का मण्डल बनाए। उसमें गन्धाक्षत से **'ॐ आधार-शक्त्यै नमः'** से **'आधार-शक्ति'** की पूजा करे। फिर **'फट्'** मन्त्र से आधार को धोकर उसे **'मण्डल'** पर स्थापित करे और **'ॐ भोग-पात्राधाराय नमः'** द्वारा उसकी पूजा करे। फिर **'फट्'** मन्त्र से पात्र को धोकर उसे आधार पर रखकर **'ॐ भोग-पात्राय नमः गन्धाक्षतं समर्पयामि'** से गन्धाक्षत द्वारा उसकी पूजा करे। फिर **'ह्रीं'** मन्त्र पढ़ता हुआ उसमें जल भरे। फिर उसमें **'ॐ गङ्गे'** इत्यादि मन्त्र पढ़कर **'अंकुश-मुद्रा'** द्वारा सूर्य-मण्डल से तीर्थों का आवाहन करे। तब **'ॐ'** मन्त्र पढ़कर पात्र के जल में गन्ध, पुष्प, अक्षत तथा शुद्धि-खण्डादि और **'विशेषार्घ्य-पात्र'** का द्रव्य छोड़े। फिर **'धेनु-मुद्रा'** दिखाकर उस जल को अमृत-मय करे। तब पात्र के ऊपर **'ॐ'** का दस बार जप करे।

**३. शक्ति**-पात्र–**'भोग-पात्र'** के पास भूमि पर **'त्रिकोण-वृत्त'** का मण्डल बनाए। उसमें गन्धाक्षत से **'ॐ आधार-शक्त्यै नमः'** से **'आधार-शक्ति'** की पूजा करे। फिर **'फट्'** मन्त्र से आधार को धोकर उसे मण्डल पर स्थापित करे और **'ॐ शक्ति-पात्राधाराय नमः'** इत्यादि क्रम से पात्र का पूजन करे।

इसी प्रकार **'योगिनी-पात्र, वीर-पात्र, बलि-पात्र'** आदि की उनके–उनके नामों का उल्लेख करते हुए स्थापना करे।

इसके बाद उसी पंक्ति में **'श्री-पात्र'** तक **'पाद्य, अर्घ्य, आचमनीय** और **'मधुपर्क'** आदि पात्रों की उन-उनके नामों का उल्लेख करते हुए स्थापना करे, परन्तु इन पात्रों में **'विशेषार्घ्य-पात्र'** के द्रव्य को न छोड़कर उसके स्थान में **'पाद्य-पात्र'** में श्यामार्क, दूर्वा, कुश, विष्णु-क्रान्ता, **'अर्घ्य-पात्र'** में गन्ध, पुष्प, अक्षत, यव, कुश, तिल, सरसों, दूर्वा, **'आचमनीय-पात्र'** में जावित्री, लौंग, कङ्कोल का चूर्ण तथा **'मधुपर्क-पात्र'** में घी, दही और मधु के मिश्रण को छोड़कर स्थापित करे।

## आनन्द-भैरव, गुरु आदि का तर्पण

बाँएँ हाथ की 'तत्त्व-मुद्रा' में शुद्धि-खण्ड और दाहिने हाथ की ज्ञान-मुद्रा में गन्धाक्षत लेकर पूजन-तर्पण करे।

**आनन्द-भैरव का तर्पण—'ह-स-क्ष-म-ल-व-र-यूं आनन्द-भैरवाय वषट् श्रीआनन्द-भैरव-श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा'** मन्त्र पढ़कर अपने सिर में स्थित **'सहस्रार'** की कर्णिका में **'ज्ञान-मुद्रा'** से पूजन करे और **'तत्त्व-मुद्रा'** से शुद्धि-खण्ड को **'श्री-पात्र'** के द्रव्य में डुबोकर उसे अपने सिर पर लगाकर उन्हें तृप्त करे। यह क्रिया तीन बार करे।

अब शिर के **'सहस्रार'** में ही पूर्व-वत् **'गुरु-चतुष्टय'** का क्रम से पूजन और तर्पण मन्त्र द्वारा करे। **'कर्णिका'** में **'ज्ञान-मुद्रा'** से पूजन और तर्पण **'गुरु-पादुका-मन्त्र'** में यथा-स्थान नाम को जोड़ ले। यथा—

**१. गुरु श्रीअमुकानन्दनाथ तच्छक्त्यम्बा-श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।**

**२. परम-गुरु—श्रीअमुकानन्दनाथ तच्छक्त्यम्बा-श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।**

**३. परापर-गुरु—श्रीअमुकानन्दनाथ तच्छक्त्यम्बा-श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।**

**४. परमेष्ठि-गुरु—श्रीअमुकानन्दनाथ तच्छक्त्यम्बा-श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।**

इसके बाद हृदय-कमल में विराजमान **'भगवती कालिका'** का पूजन तथा **'श्री-पात्र'** के द्रव्य से तीन बार तर्पण करे—

**मूलं सायुधां स-वाहनां स-परिवारां श्रीमहा-काल-शिव-सहितां श्रीदक्षिण-कालिका-श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।**

इस प्रकार **'श्री भैरव, गुरु-चतुष्टय'** और **'इष्ट-देवता'** का पूजन-तर्पण कर चुकने पर साधक आगे लिखे श्रुति के मन्त्रों को पढ़ता हुआ अपनी देह में स्थित तत्त्वों का शोधन करे।

## तत्त्व-शोधन

**ॐ प्राणापान-व्यानोदान-समानाः मे शुद्ध्यन्तां ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयासं स्वाहा।।१।।**

**ॐ पृथिव्यप्-तेजो-वाय्वाकाशानि मे शुद्ध्यन्तां ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयासं स्वाहा।।२।।**

**ॐ प्रकृत्यहङ्कार-बुद्धि-मनः—श्रोत्राणि मे शुद्ध्यन्तां ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयासं स्वाहा ।।३।।**

**ॐ त्वक्-चक्षुर्जिह्वा-घ्राण-वचांसि मे सुद्धंयन्ताम् ज्योतिरंहं विरजा विपाप्मा भूयासं स्वाहा ।।४**

**ॐ पाणि-पाद-पायूपस्थ-मुखः मे शुद्ध्यन्तां ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयासं स्वाहा ।।५।।**

**ॐ शब्द स्पर्श-रूप-रस-गन्धाकाशानि मे शुद्ध्यन्तां ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयासं स्वाहा।।६।।**

**ॐ वायु-तेजः-सलिल-भूम्यात्मनो मे शुद्ध्यन्तां ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयासं स्वाहा ।।७।।**

इस प्रकार तत्त्वों की शुद्धि कर चुकने पर साधक **'कलश'** का कुछ **'कारण'** अपनी हथेली में लेकर दोनों हथेलियों का उससे मार्जन करे। फिर दाहिने हाथ की हथेली पर एक **'त्रिकोण'** बनाए। **'त्रिकोण'** की दाहिनी और बाँईं भुजा के कोणों में तथा अपने सम्मुख और **'त्रिकोण'** के बीच में **'शुद्धि'** के चार छोटे-छोटे खण्ड रक्खे। फिर बाँएँ हाथ के अँगूठे, मध्यमा और अनामा से दाहिने

हाथ की हथेली में रक्खे हुए **'शुद्धि-खण्डों'** में से सामने का खण्ड उठाकर—

**'मूलं ह्रीं श्रीं आत्म-तत्त्वेन स्थूल-देहं शोधयामि स्वाहा'** मन्त्र पढ़कर उसे खा जाय।

इसी प्रकार दाहिनी ओर का दूसरा खण्ड उठाकर **'मूलं ह्रीं श्रीं विद्या-तत्त्वेन सूक्ष्म-देहं शोधयामि स्वाहा'**—मन्त्र पढ़कर और—

**'मूलं ह्रीं श्रीं शिव-तत्त्वेन पर-देहं शोधयामि स्वाहा'** मन्त्र पढ़कर तथा—

बीच का खण्ड उठाकर **'मूलं ह्रीं श्रीं सर्व-तत्त्वेन तनु-त्रयाश्रयं जीवं शोधयामि स्वाहा'**—यह मन्त्रपढ़कर खा जाय।

इसके बाद वस्त्र से हाथ को पोछकर उन्हें शुद्ध करे। फिर दोनों हाथों से सारी देह को स्पर्श कर शरीर का मार्जन करे।

इस प्रकार **'तत्त्व-शोधन'** करके साधक **'कारण-बिन्दु'** स्वीकार करे। पहले वह **'मूलाधार-चक्र'** में **कुण्डलिनी देवी** का ध्यान कर उन्हें अपनी जिह्वा के अग्र-भाग में ले आने की भावना करे। तब **भोग-पात्र** का द्रव्य एक दूसरे पात्र में लेकर नीचे लिखा हुआ मन्त्र पढ़कर उसे पान करे—

## कारण-बिन्दु-ग्रहण

**ॐ आर्द्रं ज्वलति ज्योतिरहस्मि ज्योतिर्ज्वलति ब्रह्माऽहमस्मि। योऽहमस्मि अहमस्मि अहमेवाहं मां जुहोमि स्वाहा ।।मूलं।।**

यह मन्त्र पढ़कर **'तत्त्व-मुद्रा'** से उस पात्र से एक बूँद **'अमृत'** लेकर पान करे। फिर निम्न मन्त्र पढ़े—

**ॐ त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि। ऋतं वदिष्यामि। सत्यं वदिष्यामि। तन्त्रमामवतु तद्-वक्तारमवतु। अवतु मां। अवतु वक्तारम् ।।मूलं।।**

उक्त मन्त्र पढ़कर पुनः उसी प्रकार एक बूँद **'अमृत'** पानकर कर जाय। फिर निम्न मन्त्र पढ़े—

**ॐ यश्छन्दसामृषभो विश्व-रूपः। छन्दोभ्योऽध्यमृतात् सम्बभूव। स मेन्द्रो मेधया स्पृणोतु। अमृतस्य देव धारणो भूयासम्।**

शरीरे मे विचर्षणम्। जिह्वा मे मधु-मत्तमा। कर्णाभ्यां भूरि विश्रुवम्। ब्रह्मणः केशोऽसि मेधया पिहतः श्रुतं मे गोपाय। आवहन्ती वितन्वाना ।।मूलं।।

उक्त मन्त्र पढ़कर पुनः उसी प्रकार एक बूँद **'अमृत'** स्वीकार करे।

**'बिन्दु-स्वीकार'** कर चुकने पर साधक **'विशेषार्घ्य-पात्र'** का द्रव्य लेकर अपने ऊपर तथा पूजा के उपकरणों पर छिड़के। फिर सबके **ब्रह्म-मय** होने की भावना करे।

## पञ्च-बलि-प्रदान

साधक अपनी बाँईं ओर **'कलश'** के परे एक **'चतुष्कोण-मण्डल'** की कल्पना करे। उसकी पूर्व की रेखा में **'बटुक'** के लिए, दक्षिण की रेखा में **'योगिनियों'** के लिए, पश्चिम की रेखा में **'क्षेत्रपाल'** के लिए, उत्तर की रेखा में **'गणेश'** के लिए और मध्य में **'सर्व-भूतों'** के लिए बलि-प्रदान करने को **'त्रिकोण'** और उसके बाहर **'वृत्त'** बनाकर **पाँच मण्डलों** की रचना करे। फिर एक थाली में पाँच छोटी तश्तरियाँ या पत्ते रखकर उनमें से प्रत्येक में **मुद्रा, शुद्धि, तृतीया, वटक** आदि सब पदार्थ **बलि-उपहार** के लिए सजाए। अब साधक उन **मण्डलों** की क्रमशः पूजा कर बटुकादि देवताओं को क्रमशः **बलि-प्रदान** करे। यथा—

**१. बटुक-बलि**—पहले **'ऐं ह्रीं ह्रूं बटुक-बलि-मण्डलाय नमः'** मन्त्र से पूर्व दिशा के **'मण्डल'** का पूजन करे। फिर **'उक्त-मण्डल'** पर **'बां बटुकाय नमः, गन्धं समर्पयामि, बां बटुकाय नमः पुष्पं समर्पयामि, बां बटुकाय नमः धूपं समर्पयामि, बां बटुकाय नमः 'दीपं समर्पयामि, बां बटुकाय नमः नैवेद्यं समर्पयामि'**—इस प्रकार ध्यान-पूर्वक **'बटुकनाथ'** का पञ्चोपचार से पूजन कर उस **'मण्डल'** पर एक **'बलि-भाग'** जल के सहित रखे। उस भाग पर एक बत्ती भी जलाए। अब **'बलि का मन्त्र'** पढ़कर उत्सर्ग करे। फिर **'बलि-पात्र'** के द्रव्य से बाँएँ अँगूठे और अनामिका की मुद्रा से मन्त्र पढ़कर **'बलि-पात्र'** का **'अमृत'** छोड़कर बलि-प्रदान करे। **'बलि-**

मन्त्र' यह है—'एह्येहि देवी-पुत्र, बटुक-नाथ, कपिल-जटा-भार-भास्वर, त्रिनेत्र, ज्वाला-मुख ! सर्व-विघ्नान्नाशय नाशय सर्वोपचार-सहितं बलिं गृहण-गृहण स्वाहा। एष बलिर्बटुकाय नमः।'

२. योगिनी-बलि—दक्षिण के मण्डल में पहले 'ऐं ह्रीं ह्रूं योगिनी-बलि-मण्डलाय नमः' से 'मण्डल' का पूजन करे। फिर 'मण्डल' में 'योगिनीभ्यो नमः गन्धं समर्पयामि नमः' इत्यादि क्रम से 'योगिनियों' का पञ्चोपचारों से पूजन करे। पूर्व-वत् 'बलि-भाग' 'मण्डल' पर रखकर दाहिने अँगूठे और अनामिका की मुद्रा से उस पर 'योगिनी-पात्र' का 'अमृत' गिराता हुआ मन्त्र पढ़कर बलि-प्रदान करे। मन्त्र यह है—

ऊर्ध्वं ब्रह्माण्डतो वा दिवि गगन-तले भू-तले निस्तले वा।
पाताले वा वने वा पवन-सलिलयोर्यत्र कुत्र स्थितो वा।।
क्षेत्रे पीठोपपीठादिषु च कृत-पदा धूप-दीपादिकेन।
प्रीताः देव्यः सदा नः शुभ-बलि-विधिना पान्तु वीरेन्द्र-वन्द्याः।
सर्व-योगिनीः ह्रूं फट् स्वाहा, एष बलिर्योगिनीभ्यो नमः।।

३. क्षेत्रपाल-बलि—पश्चिम के 'मण्डल' में पहले 'ऐ ह्रीं ह्रां क्षेत्रपाल-बलि-मण्डलाय नमः' से मण्डल का पूजन करे। फिर 'क्षां क्षेत्रपालाय नमः' मन्त्र से क्षेत्रपाल का पञ्चोपचारों से पूजन करे। अब 'मण्डल' पर बलि-भाग स्थापित करे। तब बाँएँ हाथ की मूठी बाँधकर अँगूठे के ऊपर से बलि-पात्र का अमृत गिराता हुआ मन्त्र पढ़कर बलि-प्रदान करे। मन्त्र यह है—

क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः क्षेत्रपालाय धूप-दीप-सहितं बलिं गृह्ण-गृह्ण स्वाहा—एष-बलिः क्षेत्रपालाय नमः।

४. गणेश-बलि—उत्तर के मण्डल में पहलें 'ऐं ह्रीं ह्रूं गणेश-बलि-मण्डलाय नमः' से मण्डल की पूजा करे। फिर 'गं गणेशाय नमः' मन्त्र से गणेश का पञ्चोपचारों से पूजन करे। अब 'मण्डल' पर 'बलि-भाग' स्थापित करे। फिर उस पर बाँएँ हाथ की उँगलियों को दण्डाकार खड़ी कर मध्यमा और अँगूठे की मुद्रा से 'बलि-पात्र' का 'अमृत' गिराते हुए मन्त्र पढ़कर बलि-प्रदान

करे। मन्त्र यह है–गां गीं गूं गणपतये वर-वरद ! सर्व-जनं मे वशमानय बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा—एष बलिर्गणपतये नमः।

५. सर्व-भूत-बलि—मध्य के 'मण्डल' में पहले 'ऐं ह्रीं ह्रूं सर्व-भूत-बलि-मण्डलाय नमः' से 'मण्डल' की पूजा करे। फिर 'ॐ सर्व-भूतेभ्यो नमः' मन्त्र से 'सर्व-भूतों' का पञ्चोपचारों से पूजन करे। अब 'मण्डल' पर 'बलि-भाग' को स्थापित करे। फिर तत्त्व-मुद्रा से 'बलि-पात्र' का 'अमृत' 'बलि-भाग' पर गिराते हुए मन्त्र पढ़कर बलि प्रदान करे। मन्त्र यह है—

ॐ ह्रीं सर्व-विघ्न-कृद्भ्य : सर्व-भूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा–एष बलिः सर्व-भूतेभ्यो नमः।

इसके बाद 'ॐ सर्वेभ्यो बलि-देवताभ्यो नमः' मन्त्र पढ़कर पाँचों मण्डलों पर गन्ध, पुष्प और अक्षत छोड़कर बलि-देवताओं का पुनः पूजन करे। फिर हाथ जोड़कर निम्न-मन्त्र पढ़े—

ॐ बलि-दानेन सन्तुष्टा, क्षमध्वं बलि-देवताः।
यथा-सुखं विहरन्तु, यथेच्छा सुदिशासु चा।।

## इष्ट-देवता का ध्यानादि

ध्यान करते समय अपनी दोनों आँखें बन्द रक्खे।। गर्दन और शरीर सीधे रहें। भगवती दक्षिणा-काली के ध्यान अनेक प्रकार से बताए हैं। यथा 'स्वतन्त्र तन्त्र' में—

ॐ अञ्जनाद्रि-निभां देवीं कराल-वदनां शिवाम् ।
मुण्ड-मालावली-कीर्णां, मुक्त-केशीं स्मिताननाम् ।।
महा-काल-हृदम्भोज-स्थितां पीन-पयोधराम् ।
विपरीत-रतासक्तां, घोर-दंष्ट्रां शिवैः सह ।।
नाग-यज्ञोपवीतां च, चन्द्रार्द्ध-कृत-शेखराम् ।
सर्वालङ्कार-युक्तां तु, मुक्ता-मणि-विभूषिताम् ।।
मृत-हस्त-सहस्रैस्तु, योगिनीभिर्विराजिताम् ।
रक्त-पूर्णां मुखाम्भोजां, मद्य-पान-प्रमत्तिकाम् ।।
वह्न्यर्क-शशि-नेत्रां तु, रक्त-विस्फुरिताननाम् ।
विगताशु-किशोराभ्यां, कृत-कर्णावतंसिनीम् ।।

कण्ठावसक्त-मुण्डालि - गलद्-रुधिर-चर्चिताम् ।
श्मशान-वह्नि-मध्यस्थां, ब्रह्म-केशव-वन्दिताम् ।
सद्यः-कृत्त-शिरः-खड्ग - वराभीति-कराम्बुजाम् ।।

## दूसरे प्रकार का ध्यान (भैरव-तन्त्रे)

ॐ भिन्नाञ्जन-चय-प्रख्यां, प्रवीण-शव-संस्थिताम् ।
गलच्छ्रोणित-धाराभिः, स्मेरानन-सरोरुहाम् ।।
पीनोन्नत-कुच-द्वन्द्वां, पीन-वक्षो नितम्बिनीम् ।
दक्षिणां मुक्त-केशालीं, दिगम्बर-विरोधिनीम् ।।
महा-काल-शवाविष्टां, स्वैरानन्दोपरि-स्थिताम् ।
मुख-सान्द्र-स्मितामोद-मोदिनीं मद-विह्वलाम् ।।
आरक्त-मुख - सान्द्राभिर्नेत्रालीभिर्विराजिताम् ।
शव-द्वय-कृतोत्सङ्गां, सिन्दूर-तिलकोज्ज्वलाम् ।।
पञ्चाशन्मुण्ड-घटितां, माला-शोणित-लोहिताम् ।
नाना-मणि-विशोभाढ्यां, नाना-मणि-विभूषिताम् ।।
शवास्थि-कृत-केयूर - शङ्ख-कङ्कण-मण्डितां ।
शव-वक्षः-समारूढां, लेलिहानां शवं क्वचित् ।।
शव-मांस-कृत-ग्रासां, साट्टहासां मुहुर्मुहुः ।
खड्गां मुण्ड-धरां वामे, सव्येऽभय-वर-प्रदाम् ।।
दन्तुरां च महा-रौद्रीं, चण्ड-नादाति-भीषणाम् ।
शिवाभिर्घोर-रावाभिर्वेष्टितां भय-नाशिनीम् ।।
माभैर्माभैः स्व-भक्तेषु, जल्पन्तीं घोर-निस्वनैः ।
यूयं किमिच्छथ ब्रूथ, ददामीति प्रभाषिणीम् ।।

## तीसरे प्रकार का ध्यान

ॐ कराल-वदनां घोरां, मुक्त-केशीं चतुर्भुजाम् ।
दक्षिणां कालिकां दिव्यां, मुण्ड-माला-विभूषिताम् ।।
सद्यः-छिन्न-शिरः खड्गं वामोर्ध्वाधः-कराम्बुजाम् ।
अभयं वरदं चैव, दक्षिणाधोर्ध्वं च पाणिकाम् ।।

महा-मेघ-प्रभां श्यामां, तथा चैव दिगम्बराम् ।
कण्ठावसक्ता - मुण्डालीं, गलद्-रुधिर-चर्चिताम् ।।
कर्णावतंसतां नीत, शव-युग्म-भयानकाम् ।
घोर-दंष्ट्रां करालास्यां, पीनोन्नत-पयोधराम् ।।
शवालङ्कार-सङ्घातैः, कृत-काञ्चीं हसन्मुखीम् ।
सृक्क-द्वय-गलद् - रक्त-धारां विस्फुरिताननाम् ।।
घोर-रावां महा-रौद्रीं, श्मशानालय-वासिनीम् ।
दन्तुरां दक्षिणस्यापि, लम्ब-मान-कचोच्चयाम् ।।
शव-रूप-महा - देव-हृदयोपरि-संस्थिताम् ।
शिवाभिर्घोर - रावाभिश्चतुर्दिक्षु समन्विताम् ।।
महा-कालेन च समं, विपरीत-रतातुराम् ।
सुख-प्रसन्न-वदनां, स्मेरानन-सरोरुहाम् ।।
एवं सञ्चिन्तयेद् देवीं, श्मशानालय-वासिनीम् ।
सर्वालङ्कार - भूषाङ्गीं, सर्व - शत्रु - विमोचनीम् ।।

अपने को '**काम-कला**' के स्वरूप में परिणत हुआ समझे। फिर चन्दन लगा हुआ **गुड़हल का फूल** हाथ में लेकर '**कच्छप-मुद्रा**' बनाए और मूलाधार-चक्र में स्थित **कुण्डलिनी देवी** को **सुषुम्ना-नाड़ी** के मार्ग से '**सहस्रार**' के बिन्दु में ले आने की भावना करे। वहाँ के क्षरित होनेवाले **अमृत-रस** से उसे सराबोर करे। फिर उसे '**सुषुम्ना-नाड़ी**' के मार्ग से अपने हृदय के लाल रङ्ग के '**अष्ट-दल-कमल**' में ले आए। यहाँ '**अष्ट-दल**' में **मूल-मन्त्र** का स्मरण करते हुए **गुरुदेव** द्वारा बताए ध्यान के अनुसार '**इष्ट-देवता**' के दिव्य स्वरूप का ध्यान करे। फिर उस '**देवी-मूर्ति**' को **सुषुम्ना-मार्ग** से '**सहस्रार**' के बिन्दु में ले जाने का ध्यान करे। वहाँ से उसे वायु-बीज '**यं**' का जप करता हुआ अपनी **वाम-नासा** के मार्ग से **हाथ के पुष्प** में ले आने की भावना करे और पहले से स्थापित '**यन्त्र-राज**' में उस **पुष्प** को रख दे तथा यह भावना करे कि '**महा-काल शिव**'-सहित '**दक्षिणा काली**' **यन्त्र के बिन्दु** में आ विराजी हैं। अब साधक निम्न मन्त्र पढ़े—

ॐ देवेशि, भक्ति-सुलभे ! परिवार-समन्विते !
यावत् त्वां पूजयिष्यामि, तावत् त्वं सुस्थिरा भव।।

आवाहन—इसके बाद साधक निम्न मन्त्र से आवाहनीय आदि मुद्राएँ दिखा कर आवाहन आदि करे—

ॐ साङ्गे श्रीमहा-काल-शिव-सहिते, श्रीदक्षिण-कालिके ! इहागच्छ, इहागच्छ।

ॐ साङ्गे श्रीमहा-काल-शिव-सहिते, श्रीदक्षिण-कालिके ! इह तिष्ठ, इह तिष्ठ।

ॐ साङ्गे श्रीमहा-काल-शिव-सहिते, श्रीदक्षिण-कालिके ! इह सन्निहिता भव, इह सन्निहिता भव।

ॐ साङ्गे श्रीमहा-काल-शिव-सहिते, श्रीदक्षिण-कालिके ! इह सन्निरुद्धा भव, इह सन्निरुद्धा भव।

ॐ साङ्गे श्रीमहा-काल-शिव-सहिते, श्रीदक्षिण कालिके ! इह सम्मुखी भव, इह सम्मुखी भव। मम सर्वोपचार-पूजां गृहाण, गृहाण।

इस प्रकार आवाहनादि कर देवता का 'सकलीकरण' करे अर्थात् देवता के षडङ्गों का पूजन करते हुए उसे स्वरूप प्रदान करे। यथा—

सकलीकरण—ह्रां हृच्छक्त्यै नमः। ह्रीं शिर-शक्त्यै नमः। ह्रूं शिखा-शक्त्यै नमः। ह्रैं कवच-शक्त्यै नमः। ह्रौं नेत्र-त्रय-शक्त्यै नमः। ह्रः अस्त्र-शक्त्यै नमः। सकलीकृता भव।

अवगुण्ठन—'हुं' का उच्चारण कर 'अवगुण्ठन-मुद्रा' द्वारा देवता का अवगुण्ठन कर कहे—अवगुण्ठिता भव।

दिग्-बन्धन—देवता के ऊपर दशों दिशाओं में चुटकी बजाता हुआ 'दिग्-बन्धन' करे।

अमृतीकरण—'वं' बीज का उच्चारण कर देवता को 'धेनु-मुद्रा' दिखाकर कहे—अमृतीकृता भव।

परमीकरण—साधक भगवती की मूर्ति के ऊपर 'महा-मुद्रा' बनाकर उससे 'सामान्यार्घ्य' का जल गिराता हुआ देवता का

**अभिषिञ्चन** करने की भावना करे और कहे—**परमीकृता भव।**

## प्राण-प्रतिष्ठा

अब साधक देवता के हृदय के सामने **'लेलिहानी मुद्रा'** दिखाते हुए निम्न मन्त्र द्वारा उनके **प्राणों** आदि की प्रतिष्ठा करे—

**ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं हौं हंसः श्रीदक्षिण-कालिकायाः प्राणाः इह प्राणाः।**

**ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं हौं हंसः श्रीदक्षिण-कालिकायाः इह जीव स्थितः।**

**ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं हौं हंसः श्रीदक्षिण-कालिकयाः सर्वेन्द्रियाणि।**

**ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं हौं हंसः श्रीदक्षिण-कालिकायाः वाङ्-मनस्त्वक्-चक्षुः-जिह्वा-घ्राण-प्राण-पदानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।**

साधक ऊपर लिखे हुए मन्त्र को तीन बार पढ़कर **'प्राण-प्रतिष्ठा'** करे।

**मुद्रा-प्रदर्शन**—अब साधक **खड्ग, मुण्ड,** वर और **अभय** आदि **चारों आयुधों** को **मुद्रा-रूप** में बनाकर **देवता के सम्मुख** प्रदर्शित करे। फिर **'योनि-मुद्रा'** बनाकर **देवता को नमस्कार** करे।

**स्वागत आदि**—अब साधक हाथ जोड़कर **देवता का स्वागत** करे। फिर कुशल-प्रश्न पूछकर **'कमल-मुद्रा'** से एक फूल लेकर **'श्री चक्र'** पर रखकर देवता के बैठने के लिए **आसन** प्रदान करे। यथा—**दक्षिणे कालिके ! स्वागतं, कुशलं। इदमासनं आस्यताम् ।**

## आवरण देवताओं का आवाहनादि

**षडङ्ग-पूजा**—अब देवता के **आग्नेय, नैर्ऋत्य, वायव्य** और **ईशान** आदि **कोणों में** तथा **मध्य में** और **चारों दिशाओं में** देवता के **हृदय आदि षडङ्गों** की भावना करे।

**रश्मि-वृन्द आदि का आवाहन**—इसके बाद **'यन्त्र-राज'** में यथा-स्थान **'रश्मि-वृन्द'** आदि का ध्यान-पूर्वक आवाहन करे।

साधक पहले 'रश्मि-वृन्द' का यन्त्र-राज के पाँचों त्रिकोणों के पन्द्रहों कोणों में पूर्व दिशा के क्रम से आवाहन करे। यथा—

**ॐ काली-कपालिनी-कुल्ला-कुरुकुल्ला-विरोधिनी-विप्रचित्ता-उग्रा-उग्र-प्रभा-दीप्ता-नीला-घना-वलाका-मात्रा-मुंद्रा-अमितादि-रश्मि-वृन्द-देवताः इहागच्छन्तु इहागच्छन्तु, इह तिष्ठन्तु इह तिष्ठन्तु, हह सन्निहिता भवन्तु इह सन्निहिता भवन्तु, इह सन्निरुद्धा भवन्तु, इह सन्निरुद्धा भवन्तु। इह सम्मुखी भवन्तु इह सम्मुखी भवन्तु, मम सर्वोपचार-पूजां गृह्णन्तु गृह्णन्तु।**

इस प्रकार 'रश्मि-वृन्द' का आवाहन कर उनका ध्यान करे। यथा—

**सर्वाः श्यामा असि-करा, मुण्ड-माला-विभूषणाः।**
**तर्जनीं वाम-हस्तेन, धारयन्त्यश्च सस्मिताः।।**

अब साधक 'अष्ट-दल-कमल' में पूर्वादि-दिशा के क्रम से दलों में ब्राह्मी आदि आठ माताओं का ध्यान-पूर्वक आवाहन करे। यथा—

**ब्राह्मी-नारायणी-माहेश्वरी-चामुण्डा-कौमारी-अपराजिता-वाराही-नारसिंही-आदि-देव्यः इहागच्छन्तु इहागच्छन्तु, इह तिष्ठन्तु इह तिष्ठन्तु, इह सन्निहिता भवन्तु इह सन्निहिता भवन्तु, इह सन्निरुद्धा भवन्तु इह सन्निरुद्धा भवन्तु, इह सम्मुखी भवन्तु इह सम्मुखी भवन्तु।**

इसके बाद ब्राह्मी आदि माताओं का ध्यान करे। यथा—

**१. ब्राह्मी—ब्रह्माणीं हंस-संरूढां, स्वर्ण-वर्णां चतुर्भुजाम् ।**
**चतुर्वक्त्रां त्रिनेत्रां च, ब्रह्म-कूर्चं च पङ्कजम् ।।**
**दण्ड-पद्माक्ष-सूत्रं च, दधतीं चारु-हासिनीम् ।**
**जटा-जूट-धरां देवीं, भावयेत् साधकोत्तमः ।।**

**२. नारायणी—नारायणीं महा-दीप्तां, श्यामां गरुड-वाहिनीम् ।**
**नानालङ्कार-संयुक्तां, चारु-केशां चतुर्भुजाम् ।।**
**घण्टां शङ्ख-कपालं च, चक्रं सन्दधतीं पराम् ।**
**मधु-मत्त-मदोल्लोल-दृष्टिं, सर्वाङ्ग-सुन्दरीम् ।।**

३. माहेश्वरी— माहेश्वरीं वृषारूढां, शुभ्रां त्रि-नयनान्विताम् ।
कपालं डमरुं चैव, वरदाभय - शूलकम् ।
टङ्कं च दधतीं देवीं, नानाऽऽभरण - भूषिताम् ।।

४. चामुण्डा— चामुण्डामट्ट - हासां प्रकटित-दशनां भीम - वक्त्रां त्रिनेत्राम् ।
नीलाम्भोज-प्रभाभां प्रमुदित - वपुषां नर-मुण्डालि-मालाम् ।।
खड्गं शूलं कपालं नर-शिर - घटितां खेटकं धारयन्तीम् ।
प्रेतारूढां प्रमत्तां मधु-मद - मुदितां भावयेच्चण्ड-रूपाम् ।।

५. कौमारी— कौमारीं कुंकुम-प्रभां, शिखि-संस्थिताम् ।
चतुर्भुजां शक्ति - पाशमंकुशाभय - धारिणीम् ।
नानालङ्कार-संयुक्तां, प्रमत्तां परि-चिन्तयेत् ।।

६. अपराजिता— अपराजितां च पीताभामक्ष - सूत्र - वर - प्रदाम् ।
कपालं मातुलाङ्गं च, दधतीं परि - चिन्तयेत् ।।

७. वाराही— वाराहीं धूम्र-वर्णां च, वराह-वदनां शुभाम् ।
फलक - खड्ग - मूषल - हल - वेद - भुजैर्युताम् ।।

८. नारसिंही— नारसिंहीं नृसिंहस्य, विभ्रतीं सदृशं वपुः ।।

तदनन्तर असिताङ्ग आदि आठ भैरवों और भैरवी-महा-भैरवी, सिंह, धूम्र, भीम, उन्मत्त, वशिनी और मोहिनी आदि आठ भैरवियों का 'अष्ट-दल-कमल' में पूर्वादि दिशा के क्रम से प्रत्येक दल के अग्र-भाग में ध्यान-पूर्वक आवाहन करे। यथा—

असिताङ्ग-रुरु-चण्ड-क्रोध-उन्मत्त-कपाली-भीषण-संहार-भैरवाः इहागच्छन्तु इहागच्छन्तु, इह-तिष्ठन्तु इह तिष्ठन्तु, इह सन्निहिता भवन्तु, इह सन्निहिता भवन्तु, इह सन्निरुद्धा भवन्तु इह सन्निरुद्धा भवन्तु, इह सम्मुखी भवन्तु इह सम्मुखी भवन्तु।

भीषणास्यं त्रिनयनमर्द्ध - चन्द्र - विभूषितम् ।
स्फटिकाभं कङ्कणादि-भूषा-शत-समायुतम् ।।१
अष्ट-वर्ष-वयस्कं च, कुन्तलोल्लसितं भजे ।
धारयन्तं दण्ड-शूले, भैरव्यादि-समायुतम् ।।२

भैरवियाँ—कोटि-चन्द्र के समान ज्योतिवाली, पूर्ण शुभ्र-वदना, पाँच मुखवाली, त्रिनेत्रा और अठारह हाथवाली हैं।

इसके बाद इन्द्रादि दश दिक्-पालों का भूपुर की रेखा पर पूर्व दिशा के क्रम से आवाहन और ध्यान करे। यथा—

**इन्द्र-प्रभृति-दिक्-पाला इहागच्छन्तु इहागच्छन्तु इत्यादि।**

इन दस दिक्-पालों का क्रम से उनके स्थानों में नीचे लिखे रूपों में ध्यान करे। यथा—

**१. नील-वर्ण ऐरावतस्थ वज्र-हस्त मुकुट-धारी सहस्राक्ष इन्द्र!**
**२. रक्त-वर्ण ! शक्ति - हस्त त्रिनेत्र मेषस्थ अग्नि !**
**३. महिषस्थ दण्ड - पाश - धर श्याम - वर्ण यम !**
**४. श्याम - वर्ण खड्ग - हस्त प्रेतस्थ निर्ऋति !**
**५. गौर - वर्ण पाश - हस्त मकरस्थ वरुण ।**
**६. नील - वर्ण अंकुश - हस्त मृगस्थ वायु !**
**७. श्याम - वर्ण गदा - हस्त मर्त्यस्थ कुबेर !**
**८. गौर - वर्ण त्रिनेत्र शूल - हस्त वृष भस्थ ईशान !**
**९. स्वर्ण-वर्ण हंसस्थ चतुर्वक्त्र त्रिनेत्र अक्ष-पद्म-दण्ड-कमण्डलु-धर यज्ञोपवीती जटिल ब्रह्मन् !**
**१०. श्याम-वर्ण गरुडस्थ शङ्ख-चक्र-गदा-पद्म-धर चतुर्भुज नानाऽलङ्कार-भूषित अनन्त !**

## भगवती दक्षिण कालिका कापूजन-तर्पण

उक्त प्रकार आवरण-देवताओं का आवाहन और ध्यान कर **'श्री-चक्र'** पर भगवती **'दक्षिण कालिका'** का दरबार सजा कर साधक **'विशेषार्घ्य-पात्र'** का अमृत लेकर नीचे लिखे मन्त्र को पढ़कर उन्हें तीन बार तृप्त करे। यथा-

**मूलं महा-काल-शिव-सहिते, दक्षिण-कालिके, सायुधे, सपरिवारे, मातः ! तृप्यताम् ।**

अब साधक भगवती का षोडशोपचारों से पूजन करे। यथा-

**१. पाद्य–मूलं एतत् पाद्यं महा-काल-शिव-सहितायै दक्षिण-कालिकायै नमः**–**'पाद्य-पात्र'** को अनामा-अङ्गुष्ठ की मुद्रा से देवता के चरणों में अर्पित करे। यदि **'पाद्य-पात्र'** न हो, तो एक पात्र में **'सामान्यार्घ्य'** का जल लेकर उसमें **'पाद्य-पात्र'** की सामग्री

छोड़कर उसे **'पाद्य'** के रूप में अर्पित करे।

२. **अर्घ्य–मूलं एतत् अर्घ्यं महा-काल-शिव-सहितायै दक्षिण-कालिकायै स्वधा**–सब अँगुलियों की मुद्रा से **'अर्घ्य-पात्र'** को उठाकर मन्त्र पढ़कर देवता के शिर पर उसका जल गिराए। यदि **'अर्घ्य-पात्र'** न हो, तो **'सामान्यार्घ्य-पात्र'** का जल दूसरे पात्र में लेकर उसमें **'अर्घ्य-पात्र'** की सामग्री छोड़कर उसे **'अर्घ्य-पात्र'** के रूप में अर्पित करे।

३. **आचमन–मूलं एतत् आचमनीयं महा-काल-शिव-सहितायै दक्षिण-कालिकायै स्वधा**–अनामा, मध्यमा और अंगुष्ठ की मुद्रा से आचमनी पकड़, **'आचमनीय-पात्र'** से जल लेकर देवता के मुख में आचमन प्रदान करे। **'आचमनीय-पात्र'** न हो, तो **'सामान्यार्घ्य-पात्र'** के जल से आचमन कराए।

४. **मधुपर्क– मूलं महा-काल-शिव-सहितायै दक्षिण-कालिकायै नमः एष मधुपर्कं नमः**—अधोमुखी अनामा-अंगुष्ठ की मुद्रा से **'मधुपर्क-पात्र'** से देवता के मुख में आचमनी से **'मधुपर्क'** लेकर छोड़े।

**पुनः आचमन–मूलं महा-काल-शिव-सहितायै दक्षिण-कालिकायै नमः इदं शुद्धमाचमनीयं समर्पयामि स्वधा**—**'आचमनीय पात्र'** या **'सामान्यार्घ्य'** का जल **श्री-मुख में आचमन** के लिए पुनः प्रदान करे। (अनामा, मध्यमा, तर्जनी और अंगुष्ठ की मुद्रा से)।

५. **स्नान**–अब साधक भगवती को **'मूलं महा-काल शिव-सहितायै दक्षिण-कालिकायै नमः'** यह पढ़कर **'ज्ञान-मुद्रा'** से उन पर गन्धाक्षत छोड़कर उन्हें पृथक् स्थान में कल्पित **'स्नान-मण्डप'** में ले जाने की भावना करे। वहाँ वह **'मूलं महा-काल-शिव-सहितायै दक्षिण-कालिकायै नमः उद्वर्तनार्थे हरिद्रा-तैलं समर्पयामि'**—यह पढ़कर उन पर गन्धाक्षत छोड़कर हल्दी, तेल लगाने की भावना करे। फिर वह **'मूलं महा-काल-शिव-सहितायै दक्षिण-कालिकायै नमः'** यह पढ़कर कनिष्ठा-रहित दाहिने हाथ की **'मूठ-मुद्रा'** उन्हें दिखाकर **'सामान्यार्घ्य'** का जल छोड़कर उनको

स्नान कराने की भावना करे। फिर वह **'मूलं महा-काल-शिव-सहितायै दक्षिण-कालिकायै नमः'** यह पढ़कर **'ज्ञान-मुद्रा'** से उन पर अक्षत छोड़कर सूखे कपड़े से उनके अङ्ग पोंछने की भावना करे।

**६. वस्त्र—मूलं महा-काल-शिव-सहितायै दक्षिण-कालिकायै नमः इदं वस्त्रं उत्तरीयं च निवेदयामि**—यह कहकर शुद्ध रेशमी लाल रङ्ग का वस्त्र पहनने को प्रदान करे अथवा **'ज्ञान-मुद्रा'** से उन पर अक्षत छोड़कर उसे पहनाने की भावना करे। (अंगुष्ठ, अनामा, मध्यमा से)।

**७. आभूषण—मूलं महा-काल-शिव-सहितायै दक्षिण-कालिकायै नमः इमानि भूषणानि निवेदयामि**—यह कहकर आभूषण प्रदान करे अथवा **'ज्ञान-मुद्रा'** से अक्षत छोड़कर भिन्न-भिन्न अङ्गों में उपयुक्त रत्न-जटित सोने के आभूषण पहनाने की भावना करे। (अंगुष्ठ-अनामा से)।

आभूषण पहना चुकने पर साधक **'मूलं महा-काल-शिव-सहितायै दक्षिण-कालिकायै नमः'** यह कहकर **'ज्ञान-मुद्रा'** से उन पर अक्षत छोड़ कर यह भावना करे कि भगवती **'स्नान-मण्डप'** से निकल मन्द गति से चलकर **'श्री-चक्र'** में अपने स्थान पर प्रसन्न-मन से आ विराजी हैं।

**८.गन्ध—'मूलं महा-काल-शिव-सहितायै दक्षिण-कालिकायै नमः इदं गन्धं समर्पयामि'**—यह कहकर भगवती के अङ्गों में अष्ट-गन्ध प्रदान करे।

**९. पुष्प—'मूलं महा-काल-शिव-सहितायै दक्षिण-कालिकायै वौषट् इमानि बिल्व-पत्र-सहित पुष्पाणि समर्पयामि'**—यह कह कर भगवती को बिल्व-पत्र के साथ पुष्प, पुष्प-हार आदि प्रदान करे। (अंगुष्ठ-तर्जनी की मुद्रा से)।

**१०. धूप**—सामान्यार्घ्य के जल से **'फट्'** मन्त्र से धूप-पात्र का प्रोक्षण करे। उसमें अग्नि रखकर और धूप छोड़कर **'नमः'** मन्त्र से गन्धाक्षत-पुष्प से उसका पूजन करे। फिर उसे भगवती के सामने

स्थापित कर बाँईं तर्जनी से उसको स्पर्श करे। तब **'मूलं महा-काल-शिव-सहितायै श्रीदक्षिण-कालिकायै नमः धूपं निवेदयामि'** कहे। फिर उस पर **'विशेषार्घ्य'** का द्रव्य छोड़कर उसे भगवती को प्रदान करे। तब **'ॐ गज-ध्वनि मन्त्र-मातः! स्वाहा'**—यह मन्त्र पढ़कर गन्धाक्षत-पुष्प से घण्टे का पूजन करे। फिर बाँएँ हाथ में **'घण्टा'** लेकर उसे बजाता हुआ **तर्जनी और अँगूठे की मुद्रा** से **'धूप-पात्र'** उठाकर भगवती को धूप प्रदान करता हुआ साधक देवता की **'गायत्री'** का तथा **'मूल-मन्त्र'** का जपकर तीन बार **धूप-पात्र** घुमाकर **'धूप'** प्रदान करे। (**धूप-पात्र** देवता के बाँएँ रखे)।

**११. दीप**–**'सामान्यार्घ्य'** के जल से **'फट्'** मन्त्र से **'दीप-पात्र'** का प्रोक्षण कर उसमें बत्ती रखकर उसे जलाए। फिर **'नमः'** मन्त्र से गन्धाक्षत और पुष्प से उसका पूजन कर देवता के सामने रखकर बाँईं मध्यमा से छूकर **'मूलं महा-काल-शिव-सहितायै श्रीदक्षिण-कालिकायै नमः दीपं निवेदयामि'** कहे। फिर **'विशेषार्घ्य'** का द्रव्य उस पर छोड़कर **'घण्टा'** बाँएँ हाथ में लेकर उसे बजाता हुआ मध्यमा, अंगुष्ठ के बीच में **'दीप-पात्र'** पकड़, उसको तीन बार घुमाकर **'आरती'** करता हुआ और **'मूल-मन्त्र'** तथा **'गायत्री'** का जप करता हुआ दीप प्रदान करे। फिर उसे देवता के दाहिने रखे।

**१२. नैवेद्य**–इसके बाद साधक पहले एक पात्र में **'कारण'** लेकर देवता के सम्मुख आधार पर रख **'ॐ कालि ! कालि ! महा-कालि ! हूं हूं अमृतमासवं विधि-वत् कुरु कुरु स्वाहा'**—इस मन्त्र को सात बार पढ़ते हुए पात्र के ऊपर हाथ रखकर **'कारण'** को अभिमन्त्रित करे। फिर बाँएँ हाथ की **'ग्रास-मुद्रा'** से पात्र को उठाकर दाहिने हाथ में **'शुद्धि-खण्ड'** आदि लेकर दोनों हाथों को एक दूसरे से मिलाकर दोनों वस्तुएँ देवता को निम्न मन्त्र पढ़कर निवेदित करे—

**'मूलं शुद्ध्यादि-सहितमासवं महा-काल-शिव-सहितायै श्रीदक्षिण-कालिकायै नमः निवेदयामि'**—यह मन्त्र पढ़कर साधक

यह भावना करे कि देवता ने **'शुद्धि'** सहित **'आसव'** का पान किया है। फिर वह **'पात्र'** और **'शुद्धि-खण्ड'** को आधार पर रख दे।

इसके बाद **नैवेद्य के पदार्थ** स्वर्ण आदि किसी सुन्दर पात्र में लेकर अपने सामने **'त्रिकोण'** के **'मण्डल'** पर रखे। फिर **'हुं'** मन्त्र से **'अवगुण्ठन-मुद्रा'** द्वारा उसका **अवगुण्ठन** करे। **वायु-बीज 'यं'** का उसके ऊपर १६ बार जप कर उसके **दोषों का शोषण** करे। फिर अग्नि-बीज **'रं'** का १६ बार जपकर उन **दोषों को जला** दे। तब **'वं'** **'वरुण-बीज'** का १६ बार जप करता हुआ **'धेनु-मुद्रा'** दिखाकर उसे **अमृत-मय** करे। फिर उसके ऊपर सात बार **'मूल-मन्त्र'** का जप करे। तब बाँएँ अँगूठे से **नैवेद्य-पात्र** को स्पर्श किए हुए **'नैवेद्यं महा-काल-शिव-सहितायै श्रीदक्षिण-कालिकायै नमः निवेदयामि'**—यह कहकर दाहिने हाथ की **'तत्त्व-मुद्रा'** से उस पर **'सामान्यार्घ्य'** का जल छोड़कर देवता को **नैवेद्य** निवेदित करे।

इसके बाद एक पात्र में जल लेकर **'मूलं महा-काल-शिव-सहितायै श्रीदक्षिण-कालिकायै नमः इदं जलं निवेदयामि'**—यह पढ़कर **नैवेद्य** के पास उसे **आधार** पर रख दे। **'प्राणाय स्वाहा'** (कनिष्ठा-अनामा-अंगुष्ठ की मुद्रा से), **'अपानाय स्वाहा'** (तर्जनी-मध्यमा-अंगुष्ठ की मुद्रा से), **'समानाय स्वाहा'** (अंगुष्ठ-अनामा-मध्यमा की मुद्रा से), **'उदानाय स्वाहा'** (अनामा-अंगुष्ठ-मध्यमा-तर्जनी की मुद्रा से), **'व्यानाय स्वाहा'** (पाँचों अँगुलियों की मुद्रा से) आदि मन्त्र पढ़ता हुआ पाँचों मुद्राएँ क्रम से दिखाता हुआ, अन्त में बाँएँ हाथ से **'ग्रास-मुद्रा'** दिखाकर यह भावना करे कि भगवती प्रसन्न-मन होकर भोजन कर रही हैं।

जब साधक यह समझ ले कि **भगवती** पूर्ण रूप से भोजन करके पानी पी चुकी हैं, तब वह उन्हें पुनः आचमन कराए—

**१३. पुनः** आचमन–**'मूलं महा-काल-शिव-सहितायै दक्षिण-कालिकयै स्वधा आचमनीयं समर्पयामि'**–यह पढ़कर **'आचमनीय-पात्र'** या **'सामान्यार्घ्य'** का जल देवता के मुख में

आचमन के लिए प्रदान करे।

**१४. ताम्बूल**—देवता को अब साधक ताम्बूल प्रदान करे। कर्पूरादि सुगन्धि-द्रव्य पड़े हुए **ताम्बूल** एक पात्र में रख उसे बाँएँ अँगूठे से स्पर्श कर **'महा-काल-शिव-सहितायै दक्षिण-कालिकायै नमः ताम्बूलं निवेदयामि'** यह कह **'सामान्यार्ध्य'** का जल छोड़कर निवेदन करे और भावना द्वारा देवता के मुख में पान खिला दे। **ताम्बूल** को स्पर्श कर देवता को पाँचों अँगुलियों की मुद्रा से खिलाने की भावना करे।

**१५. तर्पण**—अब साधक **'विशेषार्घ्य'** के द्रव्य से देवता का तीन बार **तर्पण** करे। यथा—**'मूलं महा-काल-शिव-सहितायै दक्षिण-कालिकायै साङ्गायै स-परिवारायै स-वाहनायै सायुधायै श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।'**

**१६. नमस्कार**—फिर साधक **'योनि-मुद्रा'** दिखाकर भगवती को नमस्कार करे।

## महा-काल शिव का पूजन

भगवती दक्षिण कालिका का **'षोडशोपचार-पूजन'** कर चुकने पर उनके दक्षिण भाग में स्थित **'महा-काल'** का पृथक् रूप से पूजन करे। पूजन करने के पहले साधक हाथ जोड़कर उनका ध्यान पढ़े। यथा—

**कोटि-कालानलाभासं, चतुर्बाहुं त्रि-लोचनम् ।**
**श्मशानाष्टक-मध्यस्थं, मुण्डाष्टक-विभूषितम् ।।**
**पञ्च-प्रेत-स्थितं देवं, त्रिशूलं डमरुं तथा ।**
**खड्गं च खर्परं चैव, वाम-दक्षिण-योगतः ।।**
**विभ्रतं सुन्दरं देहं, श्मशान-भस्म-शोभितम् ।**
**नाना-शवैः क्रीडमानं, कालिका-हृदय-स्थितम् ।।**
**लालयन्तं रतासक्तं, घोर-चुम्बन-तत्परम् ।**
**गृध्र-गोमायु-संयुक्तं, भैरवी-गण-संयुतम् ।।**
**जटा-पटल-शोभाढ्यं, सर्व-शून्यालये स्थितम् ।**
**सर्व-शून्यं मुण्ड-भूषं, प्रसन्न-वदनं शिवम् ।।**

इस प्रकार ध्यान कर साधक 'महा-काल' का 'पञ्चोपचार' से उनके मूल-मन्त्र द्वारा पूजन करे। मन्त्र यह है—ॐ क्षौं यां रां लां वां क्रौं महा-काल भैरव! सर्व-विघ्नान् नाशय नाशय ह्रीं श्रीं फट् स्वाहा।

पूजन—मूलं श्रीमहा-कालाय नमः गन्धं समर्पयामि। मूलं श्रीमहा-कालाय नमः पुष्पं समर्पयामि। मूलं श्रीमहा-कालाय नमः धूपं समर्पयामि। मूलं श्रीमहा-कालाय नमः दीपं समर्पयामि। मूलं श्रीमहा-कालाय नमः नैवेद्यं समर्पयामि। मूलं श्रीमहा-कालाय नमः आचमनीयं समर्पयामि। मूलं श्रीमहा-कालाय नमः ताम्बूलं समर्पयामि।

अब साधक 'योनि-मुद्रा' से 'महा-काल' को नमस्कार करे।

## आवरण-पूजन

पूर्वोक्त 'श्री-चक्र' में भगवती के आवरण-देवताओं का पूजन करने को साधक तत्पर हो। हाथ में पुष्पाञ्जलि लेकर निम्न मन्त्र पढ़कर भगवती के चरणों में चढ़ाए और 'आवरण-पूजा' करने की आज्ञा प्राप्त करे। यथा—

ॐ सञ्चिन्मये परे देवि ! परामृत-रस-प्रिये !
अनुज्ञां कालिके ! देहि, परिवारार्चनाय मे ।।

इस प्रकार आज्ञा प्राप्त कर 'श्री-चक्र' के भीतर यथा-स्थान यथा 'आवरण-देवता' का ध्यान कर उनका पूजन प्रारम्भ करे। दाहिने हाथ की 'ज्ञान-मुद्रा' में गन्धाक्षत और बाएँ हाथ की 'तत्त्व-मुद्रा' में 'शुद्धि' का एक लघु अंश लेकर उनका यथा-स्थान 'गन्धाक्षत' से पूजन और 'कारण' से तर्पण करे। यथा—

**प्रथम आवरण**—'प्रथम' त्रिकोण के ऊपर 'बिन्दु' के वामांश-भाग में वायव्य कोण से ईशान कोण तक पाँच रेखाओं की कल्पना करे और उन रेखाओं पर यथा-क्रम पूजन-तर्पण करे। पहले गुरु-पंक्तियों का ध्यान करे यथा—

ते रक्त-माल्याम्बर-भूषणाढ्यैः स्वलंकृताः पङ्कज-विष्टरस्थाः।
सर्वे च सालम्बन-योग-निष्ठाः, प्राप्ताखिलैश्वर्य-गुणाष्ट-कार्याः।।

अब हाथ में पुष्पाञ्जलि लेकर **'ॐ प्रथमावरण-देवताभ्यो नमः'** यह मन्त्र पढ़कर उन रेखाओं पर पुष्पाञ्जलि अर्पित करे। फिर प्रथम रेखा में **'गुरु-चतुष्टय'** का, द्वितीय रेखा में **'दिव्यौघ'-'सिद्धौघ'** गुरुओं का, तृतीय रेखा में **'सिद्धौघ' 'गुरुओं'** का और चतुर्थ रेखा में **'मानवौघ'** गुरुओं का तथा पाँचवीं रेखा में **'कुल-गुरुओं'** का **'गुरु-पात्र'** से पूजन-तर्पण करे। यथा-प्रथम पंक्ति में—

**ॐ ऐंह्रींश्रीं हसखफ्रें हसक्षमलवरयूं सहखफ्रें सहक्षमलवरयीं श्रीगुरु - अमुकानन्द - नाथ - तच्छक्त्यम्बा - श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।**

**श्रीपरम-गुरु-अमुकानन्द-नाथ-तच्छक्त्यम्बा-श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।**

**श्रीपरापर-गुरु-अमुकानन्द-नाथ-तच्छक्त्यम्बा-श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।**

**श्रीपरमेष्ठि-गुरु-अमुकानन्दनाथ-तच्छक्त्यम्बा-श्रीपादुकां पूज-यामि नमः तर्पयामि स्वाहा।**

द्वितीय पंक्ति में **दिव्यौघ गुरुओं** का—

**श्रीमहा-देव्यम्बा-श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।**

**श्रीमहा-देवानन्दनाथ-श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।**

**श्रीत्रिपुराम्बा–श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।**

**श्रीत्रिपुर-भैरवानन्द-नाथ-श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।**

तृतीय पंक्ति में **सिद्धौघ गुरुओं** का—

**श्रीब्रह्मानन्द-नाथ–श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।**

**श्रीपूर्ण-देवानन्द-नाथ–श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।**

**श्रीचल-चित्तानन्द-नाथ–श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।**

**श्रीचञ्चलानन्द-नाथ-श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।**

**श्रीकुमारानन्दनाथ-श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।**

**श्रीक्रोधानन्द-नाथ-श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।**

**श्रीवरदानन्द-नाथ–श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।**

श्रीस्मर-दीपानन्द-नाथ—श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।
श्रीमायाम्बा—श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।
श्रीमायावत्यम्बा—श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।

चतुर्थ पंक्ति में मानवौघ गुरुओं का—

श्रीविमलानन्द-नाथ—श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।
श्रीकुशलानन्द-नाथ—श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।
श्रीभीम-सेनानन्द-नाथ—श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।
श्रीसुधाकरानन्द-नाथ—श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।
श्रीमीना-नन्दानाथ-श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।
श्रीगोरक्षकानन्द-नाथ—श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।
श्रीभोज-देवानन्द-नाथ—श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामिस्वाहा।
श्रीप्रजापत्यानन्द-नाथ—श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।
श्रीमूल-देवानन्द-नाथ—श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।
श्रीरन्ति-देवानन्द-नाथ—श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।
श्रीविघ्न-देवानन्द-नाथ—श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।
श्रीहुताशनानन्द-नाथ—श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।
श्रीसमयानन्द-नाथ—श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।
श्रीसन्तोषानन्द-नाथ—श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।

पञ्चम् पंक्ति में कुल-गुरुओं का—

श्रीप्रह्लादानन्द-नाथ—श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।
श्रीसकलानन्द-नाथ—श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।
श्रीकुमारानन्द-नाथ—श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।
श्रीवशिष्ठानन्द-नाथ—श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।
श्रीक्रोधानन्द-नाथ—श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।
श्रीसुखानन्द-नाथ—श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।
श्रीध्यानानन्द-नाथ—श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।
श्रीबोधानन्द-नाथ—श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।

इस प्रकार गुरु-पंक्तियों का पूजन-तर्पण कर हांथ में पुष्पाञ्जलि लेकर निम्न मन्त्र पढ़े—

मूलं भगवति दक्षिण-कालिके ! अभीष्ट-सिद्धिं मे देहि, शरणागत-वत्सले ! भक्त्या समर्पये तुभ्यं, प्रथमावरणार्चनम् ।।

यन्त्र में विराजमान भगवती के चरणों में पुष्पाञ्जलि अर्पित करे। 'सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तु' कह कर 'विशेषार्घ्य' के द्रव्य से सबसे भीतर के 'त्रिकोण' के बिन्दु में अर्पित करे।

**द्वितीय आवरण**—हाथ में पुष्प लेकर, 'ॐ द्वितीय-आवरण-देवताभ्यो नमः' कहकर पुष्पाञ्जलि यन्त्र-राज के 'प्रथम-त्रिकोण' पर छोड़े। साधक उक्त 'त्रिकोण' के १. आग्नेय, २. ईशान ३.वायव्य, ४. नैर्ऋत्य के कोणों में, ५. मध्य में और ६. सब दिशाओं में षडङ्ग देवताओं का ध्यान करते हुए क्रम-पूर्वक विशेषार्घ्य के द्रव्य द्वारा तर्पण करे। षडङ्गों का ध्यान यह है—

तुषार - स्फटिक श्याम - नील - कृष्णारुणार्चिषः ।
वरदाभय - धारिण्यः, प्रधान - तनवस्त्रियः ।।

क्रां हृदय-शक्ति-श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।
(आग्नेय कोण में)

क्रीं शिरः-शक्ति—श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।
(ईशान कोण में)

क्रूं शिखा-शक्ति—श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।
(वायव्य कोण में)

क्रैं कवच-शक्ति—श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।
(नैर्ऋत्य कोण में)

क्रौं नेत्र-शक्ति—श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।
(मध्य में)

क्रः अस्त्र-शक्ति—श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।
(सब दिशाओं में)

हाथ में पुष्पाञ्जलि लेकर—

मूलं भगवति दक्षिण - कालिके !
अभीष्ट-सिद्धिं मे देहि शरणागत-वत्सले !
भक्त्या समर्पये तुभ्यं, द्वितीयावरणार्चनम् ।।

'यन्त्र-राज' में विराजमान भगवती के चरणों में पुष्पाञ्जलि अर्पित करे। **'सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तु'** कहकर विशेषार्घ्य-द्रव्य से सबसे भीतर के **'त्रिकोण'** के **'बिन्दु'** में अर्पित करे।

तृतीय आवरण—हाथ में पुष्पाञ्जलि लेकर **'ॐ तृतीयावरण-देवताभ्यो नमः'** यह मन्त्र पढ़कर **'पाँचों त्रिकोणों'** पर पुष्पाञ्जलि अर्पित करे। **पाँचों त्रिकोणों** के **प्रत्येक कोण** में **पूर्वादि दिशा** के क्रम से **वामावर्त्त** से **पन्द्रहों रश्मियों** का पूजन और **'योगिनी-पात्र'** के द्रव्य से तर्पण करे। पूर्व-वत् ध्यान करे—

**प्रथम त्रिकोण में—**

**ॐ काली—श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।**
**ॐ कपालिनी—श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।**
**ॐ कुल्ला—श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।**

**द्वितीय त्रिकोण में—**

**ॐ कुरु-कुल्ला—श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।**
**ॐ विरोधिनी-श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।**
**ॐ विप्र-चित्ता—श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।**

**तृतीय त्रिकोण में—**

**ॐ उग्रा—श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।**
**ॐ उग्र-प्रभा—श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।**
**ॐ दीप्ता—श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।**

**चतुर्थ त्रिकोण में:—**

**ॐ नीला—श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।**
**ॐ घना—श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।**
**ॐ वलाका—श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।**

**पञ्चम त्रिकोण में—**

**ॐ मात्रा-श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।**
**ॐ मुद्रा-श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।**
**ॐ मिता-श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।**

हाथ में पुष्पाञ्जलि लेकर—

'मूलं भगवति दक्षिण - कालिके !
अभीष्ट-सिद्धिं मे देहि। शरणागत-वत्सले !
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम्।।

'यन्त्र-राज' में विराजमान भगवती के चरणों में पुष्पाञ्जलि अर्पित करे।

'सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तु' कहकर विशेषार्घ्य-द्रव्य से उक्त पाँचों त्रिकोणों में बिन्दु अर्पित करे।

**चतुर्थ आवरण**—हाथ में पुष्पाञ्जलि लेकर '**ॐ चतुर्थावरण-देवताभ्यो नमः**' यह पढ़कर '**अष्ट-दल-कमल चक्र**' में अर्पित करे। 'चक्र' के दलों में 'ब्राह्मी' आदि आठों माताओं के ध्यान-पूर्वक 'योगिनी-पात्र' के द्रव्य से तर्पण करे। यथा—

**आं ब्राह्मी—श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।** (पूर्व में)
**ईं नारायणी—श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।**
(आग्नेय कोण में)
**ऊं माहेश्वरी—श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।**
(दक्षिण कोण में)
**ॠं चामुण्डा—श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।**
(नैर्ॠत्य कोण में)
**ॡं कौमारी—श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।**
(पश्चिम कोण में)
**ऐं अपराजिता—श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।**
(वायव्य कोण में)
**औं वाराही—श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।** (उत्तर में)
**अः नारसिंही—श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा**
(ईशान कोण में)

हाथ में पुष्पाञ्जलि लेकर—

**'मूलं' भगवति दक्षिण-कालिके !**
**अभीष्ट-सिद्धिं मे देहि, शरणागत-वत्सले !**
**'भक्त्या समर्पये तुभ्यं, चतुर्थावरणार्चनम् ।।**

'सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तु' कहकर पूर्व-वत् विशेषार्घ्य-द्रव्य से अष्ट-दलों में 'बिन्दु' अर्पित करे।

**पञ्चम आवरण**—हाथ में पुष्पाञ्जलि लेकर **'ॐ पञ्चमावरण-देवताभ्यो नमः'** यह पढ़कर **'अष्ट-दल-कमल'**-चक्र में अर्पित करे। **कमल-दल** के अग्र भाग में **आग्नेय कोण** के दल से **दक्षिणावर्त्त** के क्रम से **आठों भैरवों** का एवं **भैरवियों** का गन्धाक्षत से पूजन और **'बलि-पात्र'** के द्रव्य से तर्पण करे। यथा—

**ऐं ह्रीं अं असिताङ्ग—भैरव-भैरवी-श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।** (पूर्व में)

**ऐं ह्रीं इं रुरु-भैरव-महा-भैरवी—श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।** (आग्नेय में)।

**ऐं ह्रीं उं चण्ड-भैरव-सिंह-भैरवी—श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।** (दक्षिण में)

**ऐं ह्रीं ऋं क्रोध-भैरव-धूम्र-भैरवी—श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।** (नैर्ऋत्य में)

**ऐं ह्रीं लृं उन्मत्त-भैरव-भीम-भैरवी—श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।** (पश्चिम में)

**ऐं ह्रीं एं कपाली-भैरव-उन्मत्त-भैरवी—श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।** (वायव्य में)

**ऐं ह्रीं ओं भीषण-भैरव-वशिनी-भैरवी—श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।** (उत्तर में)

**ऐं ह्रीं अं संहार-भैरव-मोहिनी-भैरवी—श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।** (ईशान में)

हाथ में पुष्पाञ्जलि लेकर—

**'मूलं' भगवति दक्षिण - कालिके !**
**अभीष्ट-सिद्धिं मे देहि शरणागत-वत्सले !**
**भक्त्या समर्पये तुभ्यं, पञ्चमावरणार्चनम् ।।**

**'सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तु'** से पूर्व-वत् द्रव्य छोड़ें।

**षष्ठावरण**—हाथ में पुष्पाञ्जलि लेकर **'ॐ षष्ठावरण-**

**देवताभ्यो नमः'** यह पढ़ कर **'भूपुर'** की रेखा पर **'दशों दिशाओं'** में अर्पित करे। **'भूपुर'** में पूर्वादि-क्रम से **'इन्द्रादि दिक्-पालों'** का पूजन और **'वीर-पात्र'** के द्रव्य से तर्पण करे। यथा—

**लां इन्द्र—श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा** (पूर्व में)।

**वां वह्नि—श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा** (आग्नेय में)।

**यां यम—श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा** (दक्षिण में)।

**क्षां निर्ऋति—श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा** (नैर्ऋत्य में)।

**वां वरुण—श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा** (पश्चिम में)।

**यां वायु—श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा** (वायव्य में)।

**शां कुबेर—श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा** (उत्तर में)।

**हां ईशान—श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा** (ईशान में)।

**आं ब्रह्मा—श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा** (पूर्व और ईशान के बीच में)

**ह्रीं अनन्त—श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा** (निर्ऋति और पश्चिम के बीच में)

हाथ में पुष्पाञ्जलि लेकर—

**'मूलं' भगवति दक्षिण - कालिके !**
**'अभीष्ट-सिद्धिं मे देहि, शरणागत-वत्सले !**
**भक्त्या समर्पये तुभ्यं, षष्टावरणार्चनं ।।**

**'सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तु'** से पूर्व-वत् द्रव्य छोड़े।

**सप्तम आवरण**—हाथ में पुष्पाञ्जलि लेकर **'ॐ सप्तमावरण-देवताभ्यो नमः'** यह पढ़कर **'भूपुर'** की रेखा के बाहर **दशों दिशाओं** में उसे अर्पित करे। **'भूपुर'** की रेखा के प्रत्येक देवता के सामने उनके **'अस्त्र'** का पूजन और **वीर-पात्र** के द्रव्य से तर्पण करे। यथा—**(अस्त्रों का ध्यान निर्दिष्ट रङ्गों में करे।)**

**वं पीत-वर्ण-वज्र—श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।** (पूर्व में)।

**शं शुक्ल-वर्ण शक्ति—श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।** (आग्नेय में)।

दं सित-वर्ण-दण्ड—श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा। (दक्षिण में)

खं आकाश-वर्ण खड्ग—श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा (नैर्ऋत्य में)।

पां विद्युत्-वर्ण-पाश—श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा। (पश्चिम में)

अं रक्त-वर्ण-अंकुश—श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा। (वायव्य में)।

गं सित-वर्ण-गदा—श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा। (उत्तर में)।

त्रिं असित-वर्ण-त्रिशूल—श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा। (ईशान में)।

पं कोकनद-वर्ण पद्म—श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा। (ईशान और पूर्व के बीच में)।

चं पाटल-वर्ण चक्र-श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा (नैर्ऋत्य और पश्चिम के बीच में)।

हाथ में पुष्पाञ्जलि लेकर—

'मूलं' भगवति दक्षिण - कालिके !
अभीष्ट-सिद्धिं मे देहि, शरणागत - वत्सले !
भक्त्या समर्पये तुभ्यं, सप्तमावरणार्चनम् ।।

'सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तु' से पूर्व-वत् द्रव्य छोड़े।

अष्टमावरण—हाथ में पुष्पाञ्जलि लेकर 'ॐ अष्टमावरण-देवताभ्यो नमः'—यह पढ़कर 'चक्र' के बिन्दु में अर्पित करे।

इसके बाद भगवती के आयुधों का पूजन और तर्पण 'श्री-पात्र' के अमृत से करे। यथा—

ऊपर के दाएँ हाथ में 'खं खड्गं पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।'

नीचे के दाएँ हाथ में 'मुं मुण्डं पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।'

ऊपर के बाँएँ हाथ में **'अं अभयं पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।'**

**नीचे के बाँएँ हाथ में 'वं वरं पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।'** हाथ में पुष्पाञ्जलि लेकर—

**'मूलं' भगवति दक्षिण - कालिके !**
**अभीष्ट-सिद्धिं मे देहि, शरणागत-वत्सले !**
**भक्त्या समर्पये तुभ्यं अष्टमावरणार्चनम् ।।**

**'सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तु' से** पूर्व-वत् **'द्रव्य'** छोड़े।

इस प्रकार **'आवरण-पूजन'** समाप्त कर चुकने पर साधक **'कलश'** के **द्रव्य** को एक पात्र में और दूसरे पात्र में **'शुद्धि'** आदि लेकर **भगवती कालिका** को **'मूल-मन्त्र'** पढ़कर **'शुद्धि-सहितं इदं कारण-द्रव्यं निवेदयामि'** कहकर अर्पित करे। फिर **देवी** का पुनः **पूजन** करे तथा **मुद्राएँ** दिखाए। फिर **'महा-काल'** के **मूल-मन्त्र** का उच्चारण कर **भगवती कालिका** के **दक्षिण** ओर स्थित उनका पूजन और तर्पण करे। मन्त्र यह है—**हूँ क्षौं यां रां लां वां आं क्रां महा-काल-भैरव ! सर्व-विघ्नान् नाशय नाशय ह्रीं श्रीं फट् स्वाहा। श्रीमहा-काल-श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।**

उक्त मन्त्र को पढ़ता हुआ गन्धाक्षत से उनका पूजन और **'श्री-पात्र'** के द्रव्य से तर्पण **तीन बार** करे।

इसके बाद **भगवती कालिका** का निम्न प्रकार से पुनः पूजन करे। यथा—

**गन्ध—मूलं परमानन्द-सौरभ्यः, परिपूर्ण-दिगन्तरम् ।**
**गृहाण परमं गन्धं, कृपया परमेश्वरि ! ।।**

**श्रीमहा-काल-सहितायै दक्षिण-कालिकायै गन्धं नमः**—इस मन्त्र को पढ़कर कनिष्ठा और अंगुष्ठ की **'गन्ध-मुद्रा'** से अष्ट-गन्ध द्रव्य अर्पित करे।

**पुष्प**—हाथ में पुष्प लेकर निम्न मन्त्र पढ़ता हुआ अर्पित करे—

**मूलं—तुरीय-वन-सम्भूतं, नाना-गुण-मनोहरम् ।**
**अमन्द-सौरभं पुष्पं, गृहाण इदमुत्तमम् ।।**

**श्रीमहा-काल-सहितायै दक्षिण-कालिकायै पुष्पाणि वौषट्।**

**अंगुष्ठ** और **तर्जनी** से पकड़कर **पुष्पों** को **अधोमुख** करके तीन बार फूलों को अर्पित करे। फिर **अंगुष्ठ** और **तर्जनी** की **'पुष्प-मुद्रा'** दिखाए।

**धूप**—**'धूप-पात्र'** को लेकर **'फट्'** मन्त्र से जल द्वारा उसका प्रोक्षण करे। फिर उसमें **अग्नि** और **धूप-द्रव्य** छोड़े। तब **'ॐ गज-ध्वनि मन्त्र-मातः ! स्वाहा'** इस मन्त्र से गन्धाक्षत और पुष्प से **'घण्टे'** का पूजन करे। फिर बाँएँ हाथ में **'घण्टा'** लेकर और **अंगुष्ठ** तथा **तर्जनी** की **मुद्रा** से **'धूप-पात्र'** को पकड़कर **'घण्टा'** बजाता हुआ मन्त्र पढ़कर **धूप** अर्पित करे—

**मूलं—वनस्पति-रसोत्पन्नो, गन्धाढ्यः सु-मनोहरः ।**
**आघ्रेयः सर्व-देवानां, धूपोऽयं प्रति-गृह्यताम् ।।**

**साङ्गायै स-परिवार्यै श्रीमहा-काल-सहितायै श्रीदक्षिण-कालिकायै धूपं निवेदयामि नमः**—इस प्रकार **धूप** प्रदान कर **शङ्ख-पात्र** या **सामान्यार्घ्य** का जल पृथ्वी पर छोड़ दे। फिर **अंगुष्ठे** और **तर्जनी** को **ऊर्ध्व-मुख** कर **'धूप-मुद्रा'** देवता को दिखाए।

**दीप**—**'फट्'** मन्त्र रखकर जल से **'दीप-पात्र'** का प्रोक्षण करे। फिर **'नमः'** से **पुष्प** अर्पित करे। तब **घृत-प्लुत बत्ती** रखकर उसे जागृत करे। **दाहिने हाथ** की **अंगुष्ठ** और **मध्यमा** की **मुद्रा** से **'दीप-पात्र'** लेकर और बाँएँ हाथ में **'घण्टा'** लेकर बजाता हुआ निम्न मन्त्र को पढ़ता हुआ **भगवती** को **'दीप'** प्रदान करे—

**मूलं- सु-प्रकाशो महा-दीपः, सर्वत्र तिमिरापहः।**
**स-बाह्याभ्यन्तरं ज्योतिर्दीपोऽयं प्रति-गृह्यतामः।।**

**'साङ्गायै स-परिवारायै महा-काल-सहितायै श्रीदक्षिण-कालिकायै दीपं निवेयामि नमः।'** यह मन्त्र पढ़ता हुआ नेत्रों से लेकर पैरों तक **दीप** दिखाता हुआ उसे **देवता** को अर्पित करे। फिर **'शङ्ख-पात्र'** या **'सामान्यार्घ्य'** का जल भूमि पर गिराकर **मध्यमा** और **अंगुष्ठ** की **'दीप-मुद्रा'** देवता को दिखाए।

**नैवेद्य**—अब **देवता** को **पुष्पाञ्जलि** प्रदान कर उन्हें **'नैवेद्य'**

प्रदान करने की क्रिया करे। अपने सामने भूमि पर एक **'त्रिकोण'** और **'चतुरस्र मण्डल'** की रचना करे। उस पर **'नैवेद्य-पात्र'** को रखे। पात्र में **'नैवेद्य'** के सभी द्रव्य स्थापित करे। फिर **'क्रीं हूं ह्रीं'** यह मन्त्र पढ़कर **'सामान्यार्घ्य'** के जल से नैवेद्य का प्रोक्षण करे। तब **'नैवेद्य'** के ऊपर अपना बाँयाँ हाथ फैलाकर उसके ऊपर दाँयाँ हाथ रखकर बाँएँ हाथ की हथेली में **'यं'** वायु-बीज का स्मरण करता हुआ उसका **बारह बार** जप करे और यह समझे कि इस जप के प्रभाव से **'नैवेद्य'** के सारे दोष सूख गए। अब **'नैवेद्य'** पर दाहिना हाथ फैलाए और उसके ऊपर **'बाँयाँ'** हाथ रखकर दाहिने हाथ की। हथेली में **'रं'** अग्नि-बीज का ध्यान करता हुआ उसका **बारह बार** जप करे और इस जप के प्रभाव से यह समझे कि **'नैवेद्य'** के सारे सूखे हुए दोष भस्म हो गए। फिर **बाँएँ हाथ** को **'नैवेद्य'** के ऊपर फैलाए और उसके ऊपर **दाहिना हाथ** रखे। **बाँएँ हाथ** की हथेली में **'वं'** वरुण-बीज का ध्यान करता हुआ **बारह बार** जप करे। इस क्रिया से यह समझे कि **'नैवेद्य-द्रव्य' अमृत-मय** हो गए हैं। फिर **'मूल-मन्त्र'** पढ़कर **'सामान्यार्घ्य'** के जल से **'नैवेद्य'** का प्रोक्षण करे और उसे **अमृत-मय** समझे। फिर उस पर **'धेनु-मुद्रा'** दिखाए और **जल, गन्ध** तथा **पुष्प** से उसका **पूजन** करे। फिर **हाथ में पुष्प** लेकर **देवता** को **पुष्पाञ्जलि** प्रदान करे और यह समझे कि **देवता के मुख** से **तेज** निकल रहा है। अब **बाँएँ हाथ** के **अँगूठे** के **अग्र भाग** से **'नैवेद्य-पात्र'** को स्पर्श करे और **दाहिने हाथ** से **आचमनी** में **जल** ले। फिर यह मन्त्र पढ़े—

**मूलं- अन्नं चतुर्विधं स्वादु-रसैः षड्भिः समन्वितम् ।**
**फेणिका - घृत - पुञ्जाद्यैर्नैवेद्यं प्रति - गृह्यताम् ।।**

**'साङ्गायै सपरिवारायै श्रीमहा-काल-सहितायै श्रीदक्षिण-कालिकायै नैवेद्यं समर्पयामि नमः।'**—यह मन्त्र पढ़कर भूमि पर जल छोड़कर **'नैवेद्य'** प्रदान करे। **अंगुष्ठ** और **अनामिका** की **'नैवेद्य-मुद्रा'** देवता को दिखाए।

**'ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा'**—यह मन्त्र पढ़कर ध्यान

द्वारा देवता के दाहिने हाथ में 'अर्घ्य-पात्र' का जल प्रदान करे।

फिर बाँएँ हाथ से विकचोत्पल-सदृश 'ग्रास-मुद्रा' बनाकर दाहिने हाथ से 'प्राणादि मुद्राएँ' दिखाए। यथा—

मूलं ॐ प्राणाय स्वाहा (कनिष्ठा, अनामा, अंगुष्ठ से)
मूलं ॐ अपानाय स्वाहा (अंगुष्ठ, अनामा, तर्जनी से)
मूलं ॐ समानाय स्वाहा (अंगुष्ठ, अनामा, मध्यमा से)
मूलं ॐ उदानाय स्वाहा (अनामा, अंगुष्ठ, मध्यमा, तर्जनी से)
मूलं ॐ व्यानाय स्वाहा (सब अँगुलियों से)

इस प्रकार 'नैवेद्य' प्रदान कर पूर्व-वत् आचमन प्रदान करे। फिर पूर्व-वत् 'ताम्बूल' प्रदान कर 'मूल-मन्त्र' सहित निम्न श्लोक पढ़कर तीन पुष्पाञ्जलियाँ प्रदान करे। यथा—

**ब्रह्मेशाद्यैरमर-निकरैः स्तूयमानैः समन्तात् ।**
**चञ्चद्-बाल-व्यजन-निकरैः वीज्य-माना सखीभिः ।।**
**मर्म-क्रीडा-प्रहसन-परां पंक्ति-भोक्त्रीं हसन्तीम् ।**
**भुंक्ते पात्रे कनक-घटिते षड्-रसान् चिद्-विलासान् ।।**

इस प्रकार देवता की दूसरी बार पूजा कर चुकने पर साधक पूजाङ्ग के रूप में होम करे।

## नित्य-होम

'कुण्ड, स्थण्डिल' में या 'सम-तल भूमि' में पूर्व की ओर तीन रेखाएँ बनाए। 'मूल-मन्त्र' से उनका वीक्षण, 'फट्' से कुशों द्वारा ताड़न, 'फट्' से ही अर्घ्योदक-द्वारा प्रोक्षण और 'हुं' से अभ्युक्षण करे। फिर 'मूलं श्रीमद्-दक्षिण-कालिकायाः स्थण्डिलाय नमः' से स्थण्डिल का पूजन कर विहित अग्नि लाए और पूर्व-वत् उसके वीक्षणादि संस्कार करे। 'मूलं हुँ फट् क्रव्यादेभ्यः स्वाहा' मन्त्र से एक प्रज्वलित अङ्गार नैर्ऋत्य में क्रव्यादों के लिए छोड़कर अग्नि का 'हुँ' से अवगुण्ठन और 'वं' से 'धेनु-मुद्रा' द्वारा 'अमृतीकरण' करे। तब दोनों हाथों से अग्नि को उठाकर 'स्थण्डिल' आदि के ऊपर तीन बार घुमाए और 'शिव-बीज'-बुद्धि से उसे 'स्थण्डिल' आदि में अपनी ओर को स्थापित करे।

फिर **'ह्रीं वह्नि-मूर्तये नमः, रं वह्नि-चैतन्याय नम'** मन्त्र से पूजन कर चेतनता की कल्पना करे। **'ॐ चित्-पिङ्गल हन हन, दह-दह, पच-पच, मथ-मथ, सर्वं ज्ञापय स्वाहा'** से अग्नि को प्रज्वलित कर उसे निम्न मन्त्र से **प्रणाम** करे—

**ॐ अग्निं प्रज्वलितं वन्दे,** जातवेदं हुताशनम् ।
**सुवर्ण-वर्णममलं, समिद्धं विभ्रती मुखम् ।।**

इसके बाद **सङ्कल्प** पढ़े। **सङ्कल्प-वाक्य** के अन्त में **'श्रीमद्-दक्षिण-कालिका-पूजाङ्ग-रूपं होमं करिष्ये।'** इसके बाद **'ॐ अग्ने ! त्वं श्रीमद्-दक्षिण-कालिका-नामाऽसि'** से **अग्नि को इष्ट-देवता** की नाम देकर **'ॐ श्रीमद्-दक्षिण-कालिका-नामाग्नये नमः'** से उसका पूजन करे। फिर घृत के **'वीक्षणादि'**-संस्कार कर प्रादेश-प्रमाण दो कुश-पत्रों से घृत के तीन भागों की कल्पना करे। बाँएँ भाग में **'इडा'**, दाएँ में **'पिङ्गला'** और मध्य में **'सुषुम्ना'** का ध्यान करे। **'नमः'** से दाएँ भाग का **आज्य** लेकर **'ॐ अनये स्वाहा'** से अग्नि के दाएँ नेत्र में और बाँएँ भाग का आज्य लेकर **'ॐ सोमाय स्वाहा'** से अग्नि के बाँएँ नेत्र में हवन करे। मध्य भाग के आज्य से **'ॐ अग्नि-सोमाभ्यां स्वाहा'** से अग्नि के मुख में हवन करे। तदनन्तर **'ॐ भूः स्वाहा, ॐ भुवः स्वाहा, ॐ स्वः स्वाहा, ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा'—इन महा-व्याहृतियों से होम कर** निम्न मन्त्र से तीन बार हवन करे—

**ॐ वैश्वानर, जातवेद ! इहावह, (लोहिताक्ष ! सर्व-कर्माणि साधय स्वाहा।)**

तब **अग्नि** में देवता का **(यन्त्र-राज** में स्थित) **प्रज्वलित अग्नि** के रूप में **इष्ट-देवता** का ध्यान करे। फिर उनका पञ्चोपचारों से पूजन करे।

अब **देवता के 'षडङ्गों'** के लिए हवन करे। यथा—

**ॐ ह्रीं हृदयाय नमः स्वाहा, ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा, ॐ हूँ शिखायै वषट् स्वाहा, ॐ ह्रैं कवचाय हुं स्वाहा, ॐ ह्रौं नेत्र-त्रयाय वौषट् स्वाहा, ॐ ह्रः अस्त्राय फट् स्वाहा।**

इसके बाद 'क्रीं श्रीं दक्षिण-कालिकायै स्वाहा' मन्त्र से पचीस आहुतियाँ, 'क्रीं साङ्गायै सायुधायै स-वाहनायै श्रीदक्षिण-कालिकायै स्वाहा' से तीन आहुतियाँ दे। 'क्रीं स्वाहा' से या विद्या-राज्ञी से देने में 'क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा स्वाहा' से सोलह बार आहुतियाँ दे। 'क्रीं वौषट्' से 'पूर्णाहुति' ताम्बूल, पूगी-फल, अक्षत (घृत के अतिरिक्त) से दे। तब 'श्रीदक्षिणे कालिके ! पूजिताऽसि प्रसीद क्षमस्व' कहकर 'विशेषार्घ्य' का बिन्दु अग्नि में डाले और संहार-मुद्रा से तेजो-रूप देवता को 'यन्त्र-राज' में आसीन देवता के स्वरूप में विलीन करे। इसके बाद भस्म का वन्दन करे। यथा—

ॐ त्र्यायुषं जमदग्ने ! कश्यपस्य त्र्यायुषम् ।
यद्-देवेषु त्र्यायुषं, तन्नो अस्तु त्र्यायुषम् ।।
ॐ भो भो वह्ने ! महा-शक्ते ! सर्व-कर्म-प्रसाधक !
कर्मान्तरेऽपि सम्प्राप्ते, सान्निध्यं कुरु सादरम् ।।

'अग्ने ! क्षमस्व' से अग्नि का विसर्जन करे और दही या जल से पृथ्वी को शीतल कर दे। अन्त में 'स्रुव' में लगी हुई भस्म से निम्न मन्त्र का पाठ करते हुए अपने तिलक लगाए—

ॐ यं यं स्पृशामि पादेन, यं यं पश्यामि चक्षुषा ।
स एव दासतां यातु, यदि शक्र-समो भवेत् ।।

## बलि-प्रदान

उक्त प्रकार 'नित्य-होम' कर चुकने पर साधक अपने दाएँ भूमि पर 'त्रिकोण-चतुरस्र' का एक मण्डल बनाए। उस 'मण्डल' में भगवती 'श्री दक्षिणा-कालिका' का ध्यान करे और 'मूल-मन्त्र' से गन्ध, पुष्प, अक्षत द्वारा उनका पूजन करे। फिर उस 'मण्डल' पर किसी पात्र या पत्ते पर अन्न और आमिष के पदार्थ रखकर नीचे लिखे मन्त्र द्वारा उन्हें 'बलि' प्रदान करे। यथा—

एहि-एहि जगतां जननि ! इममामिषान्नं बलिं गृह्ण-गृह्ण, सिद्धिं देहि देहि, शत्रु-क्षयं कुरु-कुरु, हूं हूं ह्रीं ह्रीं फट् स्वाहा। एष बलि-र्दक्षिण-कालिकायै नमः।

'**भगवती कालिका**' को '**बलि**' दे चुकने पर उस **बलि-भाग**' के समीप ही एक **दूसरे पात्र** में **आमिष** और **अन्न** के पदार्थ रखकर नीचे लिखे मन्त्र द्वारा '**भगवान् महा-काल**' को भी **बलि** प्रदान करे। यथा—

**ॐ हूं महा-काल ! श्मशानाधिप ! इममामिषान्नं बलिं गृह्ण-गृह्ण, मम विघ्न-निवारणं कुरु-कुरु, सिद्धिं मे प्रयच्छ स्वाहा।**

साधक लोग यहीं पर '**शिवा-बलि**' भी करते हैं।

इस प्रकार **बलियाँ** दे चुकने पर यह भावना करे कि **देवता** तृप्त हो गए हैं। फिर एक पात्र में **जल** लेकर उसे '**धेनु-मुद्रा**' द्वारा **अमृत-मय** बनाकर भगवती के हाथ में देकर उसके पीने की भावना कर यह मन्त्र पढ़े—'**ॐ अमृतोपधानमसि स्वाहा।**'

## आरार्तिक (आरती)

एक थाली में '**स्वस्तिक**' आदि कोई '**मण्डल**' रक्त चन्दन आदि से बनाकर उसका पर **चार बत्तियों** वाला एक '**दीपक**' अथवा चार '**दीपक**' अलग-अलग रखे। फिर उन **दीपकों** का पूजन करे। यथा—

**(१) ग्लूं गगन-लोक-गोमेदक-रत्नाय ग्लूं नमः।**

**(२) स्लूं स्वर्ग-लोक-सुवर्ण-रत्नाय स्लूं नमः।**

**(३) म्लूं मर्त्य-लोक-माणिक्य-रत्नाय म्लूं नमः।**

**(४) न्लूं नाग-लोक-नील-रत्नाय न्लूं नमः।**

इन मन्त्रों से पूर्वादि दिशाओं में और मध्य में उन **रत्नों** का गन्धाक्षत-पुष्प से पूजन करे और उन्हें '**चक्र-मुद्रा**' दिखाए। फिर '**धेनु-मुद्रा**' दिखाकर उन्हें **अमृत-मय** करे। तब '**मूल-मन्त्र**' पढ़कर गन्ध पुष्प और अक्षत से उनका पूजन करे। फिर '**आरार्तिक-पात्र**' को अपने **दोनों हाथों** से उठाकर अपने सिर के सामने तक लाए और निम्न मन्त्र पढ़े—

**'मूलं'- समस्ते योगिनी-चक्रे, परिवार-गणावृते !**
**आरार्तिकं गृहाणेदं, कालिके! मम सिद्धये ।।**

इसके बाद **खड़े होकर** बाँएँ हाथ से **घण्टा** बजाते हुए,

दाहिने हाथ से **'भगवती कालिका'** के सामने **'आरार्तिक-पात्र'** को नीचे से ऊपर की ओर **चारों ओर दस बार** घुमा भक्ति-भाव से **'आरती'** करे। फिर पात्र को भूमि पर रखकर **'सामान्यार्घ्य'** का जल आचमनी से लेकर भूमि पर गिराए।

अब साधक स्वस्थ-चित्त होकर **'मूल-मन्त्र'** से प्राणायाम करे। फिर अपने **'इष्ट-मन्त्र'** का ऋष्यादि न्यास, कर-न्यास, षडङ्ग-न्यास करके पूर्व-वत् अपने में **'काम-कला'** की ध्यान-पूर्वक भावना करे।

फिर **'सहस्र-दल'** की कर्णिका में **श्री गुरुदेव** का ध्यान करे। इसके बाद **हृदय-कमल** की कर्णिका में **इष्ट-देवता** का ध्यान करे। यथा—

**ध्यान–**

**सद्यश्छिन्न-शिरः कृपाणमभयं हस्तैर्वरं विभ्रतीम्।**
**घोरास्यां शिरसां स्रजा सुरुचिरामुन्मुक्त-केशावलिम्।।**
**सृक्कासृक्-प्रवहां श्मशान-निलयां श्रुत्योः शवालं कृतिम्।**
**श्यामाङ्गीं कृत-मेखलां शव-करैर्देवीं भजे कालिकाम्।।**

भगवती का ध्यान कर चुकने पर साधक पहले **'कुल्लुका'** आदि मन्त्रों का जप करे। यथा—

## कल्लुकादि का जप

**१. कुल्लुका मन्त्र–'क्रीं हूं स्त्रीं ह्रीं फट्'** मन्त्र शिर पर १२ बार जपे।

**२. सेतु मन्त्र–'ॐ'** मन्त्र हृदय पर १२ बार जपे।

**३. महा-सेतु मन्त्र–'क्रीं'** मन्त्र कण्ठ पर १२ बार जपे।

**४. निर्वाण मन्त्र–'ॐ अं मूलं ऐं अं आं इं ईं उं ऊं ॠं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः। कं खं गं घं ङं। चं छं जं झं ञं। टं ठं डं ढं णं। तं थं दं धं नं। पं फं बं भं मं। यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं ॐ'** मन्त्र नाभि में १२ या ३ बार जपे।

**५. काम-प्रद मन्त्र–'क्लीं'** मन्त्र को नाभि पर १२ बार जपे।

**६. रक्षा-मन्त्र–ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्रीं रां रीं रूं रैं रौं रः रम-**

लवरयूं राकिनि ! मां रक्ष-रक्ष, मम सर्व-धातून् रक्ष-रक्ष, सर्व-सत्त्व-वशङ्करि देवि ! आगच्छागच्छ। इमां पूजां गृह्ण-गृह्ण, ऐं घोरे देवि, घोरे-देवि ! ह्रीं सः परम-घोरे घोर-स्वरूपे ! एहि-एहि, नमश्चामुण्डे ! डरलकसहैं श्रीदक्षिणे कालिके, देवि, वरदे ! विद्ये !' यह मन्त्र शिर पर १२ बार जपे।

इस प्रकार 'कुल्लुकादि' मन्त्रों का जप कर चुकने पर साधक विहित माला लेकर गन्धाक्षत आदि से उसका पूजन करे। यथा—

## माला-पूजन-एवं जपादि

'मूल-मन्त्र' पढ़कर 'सामान्यार्घ्य' का जल माला पर छिड़के। फिर गन्ध, पुष्प और अक्षत से उसका पूजन नीचे लिखे मन्त्र से करे—

**ॐ माले माले, महा-माले ! सर्व-शक्ति-स्वरूपिणि !**
**चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव ।।**

'ॐ गं अविघ्नं कुरु माले !' मन्त्र पढ़कर दाहिने हाथ से 'माला' उठाकर शिर में गुरुदेव का, कण्ठ में पीले रङ्ग में इष्ट-मन्त्र का और हृदय में देवता का ध्यान करे। फिर छाती के ऊपर माला रखकर उसे दाहिने हाथ की अनामिका अँगुली के बीच पोर पर रखकर मध्यमा और अंगुष्ठ के योग से एकाग्र-चित्त होकर 'मूल-मन्त्र' का जप करे। सहस्र बार या अष्टोत्तर-शत बार जप करे।

जप समाप्त होने पर 'ॐ' का उच्चारण करे। फिर नीचे लिखे मन्त्र को पढ़कर 'माला' को नमस्कार करे। यथा—

**ॐ त्वं माले ! सर्व-देवानां, प्रीतिदा शुभदा भव ।**
**शुभं कुरुष्व मे भद्रे ! यशो-वीर्यं च सर्वदा ।।**

फिर 'ॐ सिद्ध्यै नमः' मन्त्र पढ़कर 'माला' को चक्राकार दोहराकर शिर पर स्थापित करे। तब 'मूल-मन्त्र' से प्राणायाम कर ऋष्यादि, कर और षडङ्ग आदि का न्यास करे। इसके बाद आचमनी से 'सामान्यार्घ्य' का जल लेकर जप का फल नीचे लिखा हुआ मन्त्र पढ़कर उस जल को देवता के दाएँ या बाँएँ हाथ में भावना

द्वारा छोड़कर समर्पित करे—

**ॐ गुह्याति-गुह्य-गोप्त्री त्वं, गृहाणास्मत्-कृतं जपम् ।**
**सिद्धिर्भवतु मे देवि ! त्वत्-प्रसादान्महेश्वरि ! ।।**

इस प्रकार देवता को **जप-फल** प्रदान कर उन्हें **मूल-मन्त्र-**द्वारा **पुष्पाञ्जलि** प्रदान करे। फिर **माला** को **शिर** से उतार कर यथा-स्थान रखकर आसन से उठकर **'भगवती कालिका'** की **प्रदक्षिणा** करे। इसके बाद साधक आसन पर बैठकर **'कवच, सहस्रनाम'** और **'स्तोत्र'** का पाठ करे।

## स-शक्ति सामयिकों का पूजन

इस प्रकार **स्तोत्र** आदि का पाठ कर चुकने पर आगत **सामयिकों** को **पूजा-गृह** में पृथक्-पृथक् आसनों पर **मण्डलाकार** या **पंक्ति** के रूप में बिठाए। यदि **गुरुदेव** उपस्थित हों, तो उन्हें **स-शक्ति** अपनी दाहिनी ओर बिठाए।

सबको अपनी-अपनी **शक्तियों** के सहित बिठाए। फिर **बटुक** और **कुमारिकाओं** को भी यथा-स्थान बिठाए।

अब इन सबका **गन्ध, पुष्प-माला, अक्षत** आदि से स-भक्ति पूजन करे। यथा-सबसे पहले **गुरुदेव** का पूजन करे। फिर **गुरु को 'गुरु-पात्र'** शुद्धि-सहित अर्पित करे और यह मन्त्र पढ़े—

**ॐ देव-नाथ गुरो स्वामिन् ! लोकानुग्रह-कारक !**
**त्रायस्व मां कृपा-सिन्धो ! पूजां पूर्ण-तरां कुरु ।।**

इसके बाद **'गं गणपतये नमः'** मन्त्र से **गणेश** का, **'बं बटुकाय नमः,'** से **बटुक** का और **'कुं कुमार्यै नमः'** से **कुमारी** का पूजन करे और इन सबको **'शुद्धि-सहित पात्र'** प्रदान करे।

**'भोग-पात्र'** को अपने सम्मुख रखकर **'शक्ति-पात्र'** (गुरु-पत्नी के न होने पर) या **'योगिनी-पात्र'** अपनी **शक्ति** को प्रदान करे। यथा—

**ॐ अलि-पात्रमिदं तुभ्यं, दीयते पिशितान्वितम् ।**
**स्वीकृत्य सुभागे देवि! 'जयं देहि रिपुं दह' ।।**

**शक्ति का पूजन-मन्त्र :**

ॐ जयन्ती मङ्गला काली, भद्र-काली कपालिनी।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री, स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते।।

**साधक का पूजन-मन्त्र :**

ॐ शिव-रूप महा-भाग, देव्याराधन-तत्पर !
भक्त्या अर्चयाम्यहं त्वां, वन्दे तु वीर-मण्डलम् ।।

**शक्तियों** और **साधकों** का पूजन कर **'शुद्धि-सहित'** क्रम से उन्हें **'पात्र'** प्रदान करे। **'वीर-पात्र'** का द्रव्य केवल **वीरों के पात्र** में छोड़े।

## पात्र-वन्दना

**अन्य साधक** भी दोनों हाथों से **'पात्र'** ग्रहण कर उसे आधार के ऊपर स्थापित करें। फिर उस पर **'मूल-मन्त्र'** का **दस बार** जप कर वे **'तर्पण, तत्त्व-शुद्धि और बिन्दु-स्वीकार'** करें। तब **'शुद्धि-सहित'** निवेदित कर **'मूल-मन्त्र'** का **१०८ बार** जप करें। जप-**फल** समर्पित कर प्रणाम करें और कुछ द्रव्य **आचार्य** को निवेदित करें। तदनन्तर **'चक्र-नायक'** सामयिकों के साथ **'पात्र-वन्दना'** करे। यथा—

## प्रथम पात्र-वन्दना

**'श्रीनाथादि'** तथा **'श्री-मद्-भैरव'** आदि **'प्रथम पात्र'** की वन्दना पढ़कर साधक **'मूलाधार'** से **'कुण्डलिनी'** को उठाकर उसे अपनी जिह्वा तक लाने की भावना करें। इसके बाद **'आणविक मूल-शोधन'** के लिए निम्न मन्त्र पढ़े—

**ॐ अं आं इं ईं उं ऊँ ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः। आत्म-तत्त्वेन पञ्चीकृत-महा-सम्भवे कर्म-सञ्चितं जीवस्य सुख-दुःखाद्यनुभवाय तनुजाग्र-हृष्टं सत्व-प्रधानं प्रथम-खण्डात्मकं धर्म-प्रदं दश-कलाऽग्नि-मण्डलात्मकं। ॐ आर्द्रं ज्वलति ज्योतिरहमस्मि। ज्योतिर्ज्वलति ब्रह्माहमस्मि। योऽहमस्मि अहमस्मि। अहमेवाहं मां जुहोमि स्वाहा। काम-धार-मयं ब्रह्म-स्वरूपं सच्चिदानन्दात्मकं अकार-मयं प्रकृत्यहङ्कार-बुद्धि-श्रोत्र-त्वक्-चक्षुर्जिह्वा-घ्राण-प्राण-वाक्-पाणि-पाद-पायूपस्थ-शब्द-स्पर्श-रूप-**

रस-गन्धाकाश-वाय्वग्नि-सलिल-पृथिव्यात्मक-चतुर्विंशति-तत्त्व-सहितं-स्थूल देहं शोधयामि। आर्द्रं ज्वलति ज्योतिरहमस्मि। ज्योतिर्ज्वलति ब्रह्माहमस्मि। योऽहमस्मि अहमस्मि। अहमेवाहं मां जुहोमि स्वाहा। कुण्डलिनी-मुखे जुहोमि स्वाहा।

## द्वितीय पात्र-वन्दना

'चक्रेश्वर' पहले 'शक्ति' का उच्छिष्ट कारण एक पात्र में लेकर अपने सामने आधार पर स्थापित करे। 'शक्ति' अपना उच्छिष्ट 'द्रव्य' निम्न मन्त्र पढ़कर प्रदान करे—

**ॐ वत्स ! तुभ्यं मया दत्तं, पीत-शेषं कुलामृतम् ।**
**त्वच्छत्रून् संहनिष्यामि, सर्वाभीष्टं ददामि ते ।।**

अब 'हैमं' इत्यादि 'पात्र-वन्दना' पढ़कर 'कार्मिक मल-शोधन' के लिए 'पूर्व-वत् कुण्डलिनी' का ध्यान करता हुआ निम्न मन्त्र पढ़े—

**ॐ कं खं गं घं ङं। चं छं जं झं ञं। टं ठं डं ढं णं। तं थं दं धं नं। पं फं बं भं मं। पञ्च-प्राण-मनो-बुद्ध्यात्मकं जीवस्य प्रपञ्ची-कृत-भोगायतनं स्वप्नं द्रष्टं तेजसाधारं रज-प्रधानं द्वितीय-खण्डात्मकं अर्थ-प्रदं द्वादश-कला-सूर्य-मण्डलात्मकं पात्रमेनं विष्णु-स्वरूपं यजुर्वेदात्मक-सप्त-तत्त्व-सहितं विद्या-तत्त्वेन सूक्ष्म-देहं शोधयामि स्वाहा।**

पूर्व-वत् 'ॐ आर्द्रं ज्वलति' मन्त्र पढ़ता हुआ कुण्डलिनी के मुख में 'द्वितीय पात्र' का द्रव्य अर्पित करे।

## तृतीय पात्र-वन्दना

'ॐ सर्वाम्नाय' आदि वन्दना पढ़कर 'पूर्व-वत्' कुण्डलिनी का ध्यान करता हुआ 'मायिक मल-शोधन' के लिए निम्न मन्त्र पढ़े—

**ॐ यं रं लं वं। शं षं सं हं लं क्षं। अनाद्यविद्यामनिर्वचनीयं ब्रह्माज्ञानापनोदन-सन्नाशं निःस्वयं शरीर-द्वय-हेतुकं सुषुप्ति-द्रष्टं प्रज्ञाधारं तृतीय-खण्डात्मकं काम-प्रदं षोडश-कला-चन्द्र-मण्डला-त्ममकममृत-मयंरुद्र-स्वरूपं सामवेदात्मकं मकार-मयं शिव-शक्ति-**

सदा-शिवेश्वर-शुद्ध-विद्यात्मक-पञ्च-तत्त्व-सहित शिव-तत्त्वेन-कारण-देहं शोधयामि स्वाहा।

पूर्व-वत् **'ॐ आर्द्रं ज्वलति'** मन्त्र पढ़ता हुआ तृतीय पात्र का द्रव्य **कुण्डलिनी** के मुख में समर्पित करे।

## चतुर्थ पात्र-वन्दना

**'मद्यं-मीन-रसावहं'** आदि वन्दना पढ़कर उसमें **शक्ति** का उच्छिष्ट **'द्रव्य'** छोड़कर **'ॐ प्रकृति-तत्त्वं शोधयामि स्वाहा। ॐ इष्ट-देवता-स्वरूपिणी-कुण्डलिनी-मुखे'** जुहोमि कहकर **कुण्डलिनी** के मुख में पूर्व-वत् पात्र के **द्रव्य की आहुति** प्रदान करे।

इसी प्रकार **पञ्चम, षष्ठ, सप्तम, अष्टम, नवम् दशम** एवं **एकादश** पात्रों की वन्दना पढ़ता हुआ **पुरुष, मन, बुद्धि, अहङ्कार, भैरव** एवं **सर्व-तत्त्वों** का शोधन करते हुए पात्रों के द्रव्य की आहुतियाँ पूर्व-वत् **कुण्डलिनी के मुख** में देता हुआ, साथ-साथ प्रसाद भी ग्रहण करता हुआ, **'चक्र'** का यजन समाप्त करे।

इसके बाद साधक **'ॐ देहस्था'** इत्यादि **'पात्र-प्रशंसा'** का स्तवन करे। यह स्तवन कर चुकने पर साधक नीचे लिखे मन्त्रों को पढ़कर **'कुण्डलिनी'** के मुख में **तीन पूर्णाहुतियाँ** प्रदान करे। यथा—

**प्रथम आहुति—**

**ॐ धर्माधर्म-हविर्दीप्ते, स्वात्माग्नौ मनसा स्रुचा ।**
**सुषुम्णा-वर्त्मना नित्यमक्ष-वृत्तिर्जुहोम्यहं स्वाहा ।।**

**द्वितीय आहुति—**

**ॐ प्रकाशाकाश-हस्ताभ्यामवल म्ब्योन्मनी-स्रुचम् ।**
**धर्माधर्म-कला-स्नेह-पूर्णां वह्नौ जुहोम्यहम् स्वाहा ।।**

**तृतीय आहुति—**

**ॐ अन्तर्निरन्तर - निरिन्धन - मेधमाने ।**
**मायान्धकार - परि - पन्थिनि संविदग्नौ ।।**
**कस्यांश्चिदद्भुत -विकाशि - मरीचि-भूमौ ।**
**विश्वं जुहोमि वसुधा दिशिवावसानं स्वाहा ।।**

**ॐ आर्द्रं ज्वलति ज्योतिरहमस्मि, ज्योतिर्ज्वलति ब्रह्माहमस्मि।**
**योऽहमस्मि अहमस्मि, अहमेवाहं मां जुहोमि स्वाहा ।।**

इस प्रकार तीन **पूर्णाहुतियाँ** दे चुकने पर **'ॐ नश्यन्तु प्रेत-कूमाण्डा'** इत्यादि **'शान्ति-स्तोत्र'** का पाठ करे। तब परस्पर **वीरों** को नमन कर **'ॐ जगत्-त्रयाभ्यर्चित'** इत्यादि **'वीर-वन्दना स्तोत्र'** का पाठ करे। (**वीर-वन्दना** आदि स्तोत्र **'चक्र-पूजा के स्तोत्र'** नामक पुस्तक में देखें।)

## विसर्जन

**'सामान्यार्घ्य'** के जल से **सामयिकों** का प्रोक्षण करे।

पहले **सूर्य-देवता** को नीचे लिखे मन्त्र से **अर्घ्य** प्रदान करे। एक पात्र में **गन्ध, पुष्प, अक्षत** और **सामान्यार्घ्य** का जल लेकर अपने सामने भूमि पर रखे। फिर **'ॐ नमो विवस्वते ब्रह्मन् भास्वते विष्णु-तेजसे नमः। सर्वत्र शुचये सवित्रे कर्म-दायिने ॐ हूं ह्रीं सः सूर्याय एषोऽर्घ्यः स्वधा।'** यह मन्त्र पढ़कर उक्त पात्र को उठाकर तीन बार **'सूर्य देवता'** को **अर्घ्य** प्रदान करे।

फिर हाथ में **सामान्यार्घ्य** का जल लेकर नीचे लिखा हुआ मन्त्र पढ़कर **आत्म-निवेदन** करे। यथा—

**ॐ इतः पूर्वं प्राण-बुद्धि-देह-धर्माधिकारतो जाग्रत्-स्वप्न-सुषुप्त्यवस्थासु कायेन मनसा वाचा कर्मणा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना यत्कृतं यत्स्मृतं यदुक्तं तत्सर्वं ब्रह्मार्पणं भवतु स्वाहा। मदीयं सकलं श्रीदक्षिण-कालिका-चरणौ समर्पितमस्तु। ॐ तत् सत्।**

उक्त **आत्म-निवेदन-मन्त्र** पढ़कर ध्यान-पूर्वक **देवता** के **दाहिने हाथ** में अपने हाथ का जल अर्पित करने की भावना करे।

इस प्रकार अपने आपको बाहर और भीतर **भगवती** के **श्रीचरणों** में समर्पित कर चुकने पर **साधक** पूजन की त्रुटियों के लिए नीचे लिखे मन्त्र द्वारा **सूर्य-देव** से प्रार्थना करे। यथा—

**ॐ यज्ञश्छिद्रं तपश्छिद्रं, यच्छिद्रं पूजने मम ।**
**तत्-सर्वमछिद्रमस्तु, भास्करस्य प्रसादतः ।।**

तत्पश्चात् **ईशान कोण** में **'त्रिकोण-मण्डल'** रक्त-चन्दन से

लिखकर उस पर एक पात्र रख **निर्माल्य-वासिनी चण्डेश्वरी देवी** का निर्माल्य उठा '**ॐ निर्माल्य-वासिन्यै चण्डेश्वर्यै नमः**' कह पूजा करे। तब नैवेद्य का किञ्चित् भाग ले '**उच्छिष्ट-चाण्डालिनी**' को निम्न मन्त्र से बलि दे—**ॐ उच्छिष्ट-चाण्डालिनि सुमुखि देवि महा-पिशाचिनि ! इमं बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा।**

इसके बाद '**मूल-मन्त्र**' का स्मरण करता हुआ **भगवती** के **चक्र** से एक पात्र में **निर्माल्य** लेकर उसे अपने शिर पर स्थापित करे। फिर उसे पान कर पुनः **प्राणायाम, ऋष्यादि, कर-न्यास** और **षडङ्ग-न्यास** करके **देवता** कर ध्यान करे।

अब साधक '**सामान्यार्ध्य-पात्र**' को ऊपरं उठाकर **यन्त्रस्थ देवता** के सिर पर उसके **जल की धार** छोड़े और पुनः उसे उसके स्थान पर रख दे।

अन्त में साधक **श्रीपात्र** (विशेषार्ध्य-पात्र) को उठाकर उसे **देवता के शिर** के ऊपर धुमाकर पुनः उसे अपने स्थान पर रख दे। इसके बाद देवता को '**संहार-मुद्रा**' दिखाकर '**यन्त्र-राज**' से उसी **मुद्रा** से **फूल** उठाकर उसे सूँघे और यह भावना करे कि **देवता** उसके **हृदय-कमल** में पहुँचकर अपने स्थान में विराजमान हो गया है। फिर साधक '**विशेषार्ध्य**' का द्रव्य एक पात्र में लेकर उसे **तीन बार** में पान करे। फिर '**विशेषार्ध्य**' में जल और पुष्प छोड़कर उसे भूमि पर उलट कर रख दे। तब **पात्र** को उठाकर अन्यत्र छिपाकर रख दे। फिर उस स्थान में '**ह्रीं**' बीज लिखकर वहाँ की मिट्टी से अपने ललाट पर **तिलक** करे और यह मन्त्र पढ़े-

**ॐ यं यं स्पृशामि पादेन, यं यं पश्यामि चक्षुषा ।**
**स एव दासतां याति, यदि शक्र-समो भवेत् ।।**

⌘⌘⌘

# परिशिष्ट

(१)

## श्रीमहा-विद्या-स्तोत्र

(२)

## श्रीमहा-विपरीत-प्रत्यङ्गिरा-स्तोत्र

'काली-मठ' के महन्त तथा भैरव-कुण्ड विन्ध्याचल (मिर्जापुर, उ०प्र०) के ब्रह्मी-भूत स्वामी श्रीअक्षोभ्यानन्द जी सरस्वती की कृपा से प्राप्त श्रीमहा-विद्या-स्तोत्र को भगवती काली के उपासकों के लाभार्थ यहाँ पुनः प्रकाशित किया जा रहा है।

ब्रह्मी-भूत स्वामी श्रीअक्षोभ्यानन्द जी सरस्वती ने नेपाल से प्रस्तुत स्तोत्र की पाण्डुलिपि प्राप्त की थी। उनसे उनके शिष्य ऋषि-कल्प पं० कृष्णानन्द जी मिश्र 'वैद्य', ककरा दुबावल, प्रयागराज को प्राप्त हुआ था।

पूज्य वैद्य जी की कृपा से यह दुर्लभ स्तोत्र पहले-पहल 'चण्डी' साधन-माला के अन्तर्गत १०१वें क्रम पर प्रकाशित हुआ था। बाद में यह स्तोत्र उपासकों की माँग पर स्वतन्त्र छोटी-पुस्तक के रूप में प्रकाशित हुआ था।

बहुत दिनों से इधर यह उपलब्ध नहीं है। अतः 'श्रीकाली-पूजा-पद्धति' के परिशिष्ट के रूप में इसे पुनः प्रस्तुत किया जा रहा है।

इसी क्रम में श्रीभैरवानन्दनाथ, सागर ( म०प्र० ) द्वारा प्राप्त श्रीमहा-विपरीत-प्रत्यङ्गिरा स्तोत्र एवं श्रीमहा-विद्या-कवच आदि भी यहाँ प्रकाशित किए जा रहे हैं। आशा है कि साधक बन्धु प्रस्तुत अनूठे प्रयोगात्मक स्तोत्रों से लाभान्वित होंगे।

# श्रीमहा-विद्या-स्तोत्र ( १ )

।। सङ्कल्प ।।

ॐ तत्सत् अद्यैतस्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय-प्रहरार्द्धे श्वेत-वराह-कल्पे जम्बू-द्वीपे भरत-खण्डे आर्यावर्त्त-देशे अमुक-पुण्य-क्षेत्रे कलि-युगे कलि-प्रथम-चरणे अमुक-सम्वत्सरे अमुक-मासे अमुक-पक्षे अमुक-तिथौ अमुक-वासरे अमुक-गोत्रोत्पन्नो अमुक-नाम त्रिविध-दोषोपशमनार्थं सकलारिष्ट-ग्रह-जन्म-दुःख-ध्वंसन-पूर्वकं भूत-प्रेत-पिशाच-राक्षस-ब्रह्म-राक्षस-वेताल तथा कुल-देवतायाः शान्त्यर्थं कष्ट-निवारणार्थं ज्वराधि-जन्य-दुःख-व्याधि-कृमि-ध्वंसन-पूर्वकं महा-शान्ति-कामः श्रीमहा-विद्यायाः सकल-रसानुकूल महा-शान्तिक-नाम-स्तोत्र-पाठमऽहं करिष्ये। तेनैव स्तोत्रेण दश-दिन-पर्यन्तं अहो-रात्र हवनमऽहं करिष्ये। ॐ नमो भगवते महा-विद्यायै नमः।

।। विनियोग ।।

ॐ अस्य श्रीमहा-विद्या-मन्त्रस्य श्रीअघोरार्यमा ऋषिः। गायत्री-त्रिष्टुप्-जगती-छन्दांसि। परमात्मा श्रीकालिका देवता। श्रीमहा-माहेश्वरी विद्या। माया बीजं। त्रि-शक्ति-त्रिमुद्रा शक्तिः। श्रीमहा-विद्या-प्रीत्यर्थे ( मम सकल-दुरित-क्षयार्थे, सकल-जन-वश्यार्थे, सकल-कार्य-सिद्ध्यर्थे, मोहनार्थे, मनोऽर्पित-कामना-सिद्ध्यर्थे, सकल-फल-प्राप्त्यर्थे, प्राप्त-संरक्षणार्थे, शीघ्र-सकल-कामना-सिद्ध्यर्थे, सर्वाशा-परिपूरणार्थे, धन-धान्यान्न-वस्त्रालङ्कारादि-समृद्ध्यर्थे ) जपे पाठे विनियोगः।

॥ ऋष्यादि-न्यास ॥

श्रीअघोरार्यमा-ऋषये नमः शिरसि। गायत्री-त्रिष्टुप्-जगती-छन्दोभ्यः नमः मुखे। परमात्मा श्री कालिका-देवतायै नमः हृदि। श्रीमहा-माहेश्वरी-विद्यायै नमः कण्ठे। माया-बीजाय नमः लिङ्गे। त्रि-शक्ति-त्रि-मुद्रा-शक्तये नमः नाभौ। श्रीमहा-विद्या-प्रीत्यर्थे (मम सकल-दुरित-क्षयार्थे, सकल-जन-वश्यार्थे, सकल-कार्य-सिद्ध्यर्थे, मोहनार्थे, मनोऽर्पित-कामना-सिद्ध्यर्थे, सकल-फल-प्राप्त्यर्थे, प्राप्त-संरक्षणार्थे, शीघ्र-सकल-कामना-सिद्ध्यर्थे, सर्वाशा-परिपूरणार्थे, धन-धान्यान्न-वस्त्रालङ्कारादि-समृद्ध्यर्थे) जपे पाठे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

॥ कर-न्यास ॥

ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः। ऐं तर्जनीभ्यां नमः। ह्रीं मध्यमाभ्यां नमः। श्रीं अनामिकाभ्यां नमः। क्लीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। महा-विद्यायै स्वाहा करतल-कर-पृष्ठाभ्यां नमः।

॥ अङ्ग-न्यास ॥

ॐ हृदयाय नमः। ऐं शिरसे स्वाहा। ह्रीं शिखायै वषट्। श्रीं कवचयोः हुम्। क्लीं नेत्र-त्रयाय वौषट्। महा-विद्यायै स्वाहा अस्त्राय फट्।

॥ उत्कीलन-मन्त्र ॥

ॐ ऐं ह्रीं वाग् - वादिनी सर्व - मन्त्राणां सर्व-यन्त्राणामुत्कीलन-करी सर्व-सुख-मुखन-करी स्वाहा।

॥ ध्यान ॥

पञ्च-वक्त्रां च लम्बोष्ठीं, नयन-त्रय-शोभिताम्।<br>
रक्त-दंष्ट्रां करालास्यां, कृष्णाजिन्मृग-रूपिणीम्॥<br>
रक्त-वस्त्रां दश-भुजामायुधैः परि-शोभिताम्।<br>
खड्गं च मुशलं शूलं, भल्लं वाणं च दक्षिणे॥

धनुः पाशं च डमरुं, शक्तिं खेटं तथोत्तरे।
विभ्राणां सिंह-पृष्ठस्थां, ध्याये तां हृत्-शिरोरुहे।।
आरुणीं वारुणीं चैव, सर्वोपद्रव - नाशिनीम्।
उल्का-मुखीं रुद्र-जटीं, नाग-पृष्ठ-शिरोधरीम्।।

भगवती महा-विद्या के पाँच मुख हैं। प्रत्येक मुख में तीन नेत्र हैं और ओष्ठ लम्बे हैं। रक्त-वर्ण की दाढ़ें हैं, जिनसे मुख भयानक हैं। काले मृग-जैसा स्वरूप है। रक्त-वस्त्र धारण किए हैं। दस भुजाएँ हैं, जिनमें से दाहिने पाँच हाथों में- १. खड्ग, २. मुशल, ३. शूल, ४. भाला और ५. वाण लिए हैं। बाँएँ पाँच हाथों में- १. धनुष, २. पाश, ३. डमरु, ४. शक्ति और ५. खेटक शोभायमान हैं। इस प्रकार की महा-विद्या देवी सिंह की पीठ पर आसीन हैं। इनका ध्यान हृदय-कमल पर करना चाहिए। ये उल्का के समान प्रदीप्त मुखोंवाली हैं। रुद्र-जटा-धारिणी हैं और इनके शिर पर नाग-पृष्ठ हैं। ये सभी उपद्रवों का नाश करनेवाली आरुणी-वारुणी हैं।

।। पूजा-मन्त्र ।।

**ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं कुल - कुण्ड - स्वामिनि! स्वाहा। ॐ आत्मा-रक्षां कुरु-कुरु, पर-विद्यां छिन्धि-छिन्धि, पर-यन्त्रं स्फोटय-स्फोटय, ॐ कुण्ड-स्वामिनि! स्वाहा।**

।। मूल-मन्त्र ।।

**ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं महा-विद्यायै स्वाहा।**

उक्त 'मूल-मन्त्र' का १०८ जप करने के बाद 'माला-मन्त्र' का जप करना चाहिए-

।। माला-मन्त्र ।।

**ॐ ह्रौं हंसक्ष-मल्वय-वरा हंसक्ष-मल्वय-वरीं श्रीं श्रीं ह्रीं याचकः सर्वाराध्य सर्व-शुद्धनार्थं सर्व-गुरु स्वयं गुरु-नाथ हंसक्ष-मल्वय सं हंसक्ष-मल्वपरि हंसक्ष-मल्वय-परां श्रीशम्भु गुरु श्रीं**

ह्रीं हसौं ऐं क्लीं सोऽहं सौं श्रीं ह्रीं मूलादि-ब्रह्म-रन्ध्रान्तं विष-तनीयसीमुद्यदादित्य-रुचिरां स्मरेत् शुभ-शान्तये।

ॐ महा-विद्यां प्रवक्ष्यामि, महा-देवेन निर्मिताम्।
चिन्तितां किन्त-रूपेण, मात्रा हृदय-नन्दिनीम्।।
उत्तमां सर्व-विद्यां, सर्व-भूत-वश-करीम्।
सर्व-पाप-क्षय-करीं, सर्व-शत्रु-निवारिणीम्।।

।। होम-मन्त्र ।।

ॐ ह्रां हंसः कुल-कार्य-करीं, कुल-करीं, गोत्र-करीं, पुत्र-करीं, पुष्टि-करीं, तुष्टि-करीं, धन-करीं, धान्य-करीं, वृद्धि-करीं, उत्साह-बल-वर्धिनीं, भूतानां प्रभञ्जिनीं, शोषिणीं, मोहिनीं, द्राविणीं, दुष्ट - यन्त्र-प्रभञ्जिनीं, पुत्र - पौत्रादि - वर्धिनीं, आयुरारोग्यैश्वर्याभिवर्धिनीं, सर्व-भूत-स्तम्भिनीं, सर्वाकर्षिणीं, सर्व-लोक-वश-करीं, सर्व-जन-वश-करीं, सर्व-यन्त्र-प्रमोदिनीं, एकाहिकं, द्व्याहिकं, त्र्याहिकं, चातुर्थिकं, पञ्चाहिकं, षष्ठ्याहिकं, सप्ताहिकं, अष्टाहिकं, अर्ध-मासिकं, षाणमासिकं, साम्वत्सारिकं, वातिकं, पैत्तिकं, श्लेष्मिकं, सान्निपातिकं, कुष्ठ-रोग-जठर-रोग-मुख-रोग-प्रमेह-रोग-शुक्र - विशि-भयं विस्फोटकादि-विनाशनाय स्वाहा।

ॐ वेतालादि-ज्वर, मुहूर्त-ज्वर, दिवस-ज्वर, रात्री-ज्वर, सन्ध्या-ज्वर, सन्तत-ज्वर, राक्षस-ज्वर, अग्नि-ज्वर, प्रस्वेद - ज्वर, विषम - ज्वर, तीव्र - ज्वर, माया-प्रयोगाभिचारिक-ज्वर, दृष्टि-ज्वर, पाण्डु-ज्वर, अस्मादादि-ज्वर-प्रयोगाद्धि विनाशनाय स्वाहा।

ॐ ब्रह्माण्ड-शूल, शिर-शूल, शिरोऽर्ध-शूल, अक्षि-शूल, घ्राण-शूल, कर्ण-शूल, दन्त-शूल, गल-शूल, गण्ड-शूल, हृदय-

शूल, कुक्षि-शूल, पृष्ठ-शूल, कटि-शूल, नाभि-शूल, उदर-शूल, हस्त-शूल, उरू-शूल, पाद-शूल, पादार्ध-शूल, सर्व-शूल-विनाशनाय स्वाहा।

ॐ सर्व-व्याधि-विनाशनाय स्वाहा, सर्व-शत्रु-विनाशनाय स्वाहा। सर्व-विस्फोटक-विनाशनाय स्वाहा।

ॐ आत्म-रक्षा, परमात्म-रक्षा, मित्र-रक्षा, अग्नि-रक्षा, प्रत्यग्नि-रक्षा, पराग्नि-वातो-रक्षा, चौर-रक्षा- तेषां सकलं बध्नामि नमः स्वाहा।

ॐ हर-देहिनीं नमः स्वाहा।

ॐ इन्द्र-देहिनीं नमः स्वाहा।

ॐ स्व-स्व-ब्रह्माण्ड-दण्डं विश्रामय, विश्रामय, विष्णु-दण्डम्। ॐ ज्वर-ज्वर, ईश्वर- कुमार-दण्डम्। ॐ प्रहर-प्रहरानु-दण्डम्, हिलि-मिलि माया-दण्डम्। नित्यं-नित्यं विश्रामय। विश्राम-वारुणी, शूलिनी, गारुड़ी रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ नदीनां पुलिने जाता, पर्वते वा वनान्तरे।
रुद्रस्य हृदये जाता, विद्याऽहं काम-रूपिणी स्वाहा।

ॐ ज्वल ज्वल देहस्य देहेन सकल-लोह-पिङ्गली-कठिन-प्रेरिका, किलि, किलि, किलिकं महा-दण्डं कुमार-दण्डं, नृत्य नृत्य विष्णु-वन्दितां, हंसिनीं, शङ्खिनीं, चक्रिणीं, गदिनीं, शूलिनीं रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ ह्रां स्वाहा, ॐ ह्रां ह्रां स्वाहा। ॐ ह्रीं स्वाहा, ॐ ह्रीं ह्रीं स्वाहा। ॐ ह्रूं स्वाहा, ॐ ह्रूं ह्रूं स्वाहा। ॐ ह्रें स्वाहा, ॐ ह्रें ह्रें स्वाहा। ॐ ह्रैं स्वाहा, ॐ ह्रैं ह्रैं स्वाहा। ॐ ह्रों स्वाहा, ॐ ह्रों ह्रों स्वाहा। ॐ ह्रौं स्वाहा, ॐ ह्रौं ह्रौं स्वाहा। ॐ ह्रं स्वाहा, ॐ ह्रं ह्रं स्वाहा। ॐ ह्रः स्वाहा, ॐ ह्रः ह्रः स्वाहा।

ॐ क्रां स्वाहा, ॐ क्रां क्रां स्वाहा। ॐ क्रीं स्वाहा, ॐ क्रीं क्रीं स्वाहा। ॐ क्रूं स्वाहा, ॐ क्रूं क्रूं स्वाहा। ॐ क्रें स्वाहा, ॐ क्रें क्रें स्वाहा। ॐ क्रैं स्वाहा, ॐ क्रैं क्रैं स्वाहा। ॐ क्रों स्वाहा, ॐ क्रों क्रों स्वाहा। ॐ क्रौं स्वाहा, ॐ क्रौं क्रौं स्वाहा। ॐ क्रं स्वाहा, ॐ क्रं क्रं स्वाहा। ॐ क्रः स्वाहा, ॐ क्रः क्रः स्वाहा।

ॐ कं स्वाहा, ॐ कं कं स्वाहा। ॐ खं स्वाहा, ॐ खं खं स्वाहा। ॐ गं स्वाहा, ॐ गं गं स्वाहा। ॐ घं स्वाहा, ॐ घं घं स्वाहा। ॐ ङं स्वाहा, ॐ ङं ङं स्वाहा। ॐ चं स्वाहा, ॐ चं चं स्वाहा। ॐ छं स्वाहा, ॐ छं छं स्वाहा। ॐ जं स्वाहा, ॐ जं जं स्वाहा। ॐ झं स्वाहा, ॐ झं झं स्वाहा। ॐ ञं स्वाहा, ॐ ञं ञं स्वाहा।

ॐ टं स्वाहा, ॐ टं टं स्वाहा। ॐ ठं स्वाहा, ॐ ठं ठं स्वाहा। ॐ डं स्वाहा, ॐ डं डं स्वाहा। ॐ ढं स्वाहा, ॐ ढं ढं स्वाहा। ॐ णं स्वाहा, ॐ णं णं स्वाहा। ॐ तं स्वाहा, ॐ तं तं स्वाहा। ॐ थं स्वाहा, ॐ थं थं स्वाहा। ॐ दं स्वाहा, ॐ दं दं स्वाहा। ॐ धं स्वाहा, ॐ धं धं स्वाहा। ॐ नं स्वाहा, ॐ नं नं स्वाहा।

ॐ पं स्वाहा, ॐ पं पं स्वाहा। ॐ फं स्वाहा, ॐ फं फं स्वाहा। ॐ बं स्वाहा, ॐ बं बं स्वाहा। ॐ भं स्वाहा, ॐ भं भं स्वाहा। ॐ मं स्वाहा, ॐ मं मं स्वाहा। ॐ यं स्वाहा, ॐ यं यं स्वाहा। ॐ रं स्वाहा, ॐ रं रं स्वाहा। ॐ लं स्वाहा, ॐ लं लं स्वाहा। ॐ वं स्वाहा, ॐ वं वं स्वाहा।

ॐ शं स्वाहा, ॐ शं शं स्वाहा। ॐ षं स्वाहा, ॐ षं षं स्वाहा। ॐ सं स्वाहा, ॐ सं सं स्वाहा। ॐ हं स्वाहा, ॐ हं हं स्वाहा। ॐ क्षं स्वाहा, ॐ क्षं क्षं स्वाहा। ॐ त्रं स्वाहा, ॐ त्रं त्रं स्वाहा। ॐ ज्ञं स्वाहा, ॐ ज्ञं ज्ञं स्वाहा।

ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः। ॐ भूः स्वाहा, ॐ भुवः स्वाहा। ॐ स्वः स्वाहा, ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा।

ॐ ब्रह्मणे नमः स्वाहा। ॐ विष्णवे नमः स्वाहा। ॐ रुं रुद्राय नमः स्वाहा। ॐ रुद्रादित्याय नमः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय सर्व-भूतानां सर्व-विषाणां सर्व-दुष्टानां निग्रहं कुरु-कुरु स्वाहा। ॐ आदित्याय नमः स्वाहा। ॐ सोमाय नमः स्वाहा। ॐ अङ्गारकाय नमः स्वाहा। ॐ बुधाय नमः स्वाहा। ॐ वृहस्पतये नमः स्वाहा। ॐ शुक्राय नमः स्वाहा।। ॐ शनैश्चराय नमः स्वाहा। ॐ राहवे नमः स्वाहा। ॐ केतवे नमः स्वाहा।

ॐ श्लेषाय नमः स्वाहा।। ॐ दुर्गे महा-शान्तिक-पतङ्ग-भूत-प्रेत-पिशाच-राक्षस-ब्रह्म-राक्षस-सर्व-वेताल-सर्व-वृश्चिक-भय-विनाशनाय स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रं ह्रः हूं फट् स्वाहा। ॐ क्रां क्रीं क्रूं क्रें क्रैं क्रों क्रौं क्रं क्रः स्वाहा। ॐ शिं शिवाय नमः स्वाहा।

ॐ सूं सूर्याय नमः स्वाहा। ॐ सों सोमाय नमः स्वाहा। ॐ मं मङ्गलाय नमः स्वाहा। ॐ बुं बुधाय नमः स्वाहा। ॐ वृं वृहस्पतये नमः स्वाहा। ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा। ॐ शं शनैश्चराय नमः स्वाहा। ॐ रां राहवे नमः स्वाहा। ॐ कें केतवे नमः स्वाहा।

ॐ महा-शान्तिक-भूत-प्रेत-पिशाच-राक्षस-ब्रह्म-राक्षस-सर्व-वेताल-सर्व-वृश्चिक-भय-विनाशनाय स्वाहा।

ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेशाय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ सिं सिंह-शार्दूल-गजेन्द्र-ग्रह-सर्व-व्याघ्रादि मृगादि-बध्नामि नमः स्वाहा।

ॐ बां बाहुं बध्नामि नमः स्वाहा। ॐ नें नेत्रं बध्नामि नमः स्वाहा। ॐ श्रों श्रोत्रं बध्नामि नमः स्वाहा। ॐ पां पादं बध्नामि नमः स्वाहा। ॐ आं आंसां बध्नामि नमः स्वाहा। ॐ सं सर्वं नमः स्वाहा। ॐ बं बन्धनं कुरु कुरु स्वाहा।

ॐ शत-योजन-विस्तीर्णं रुद्रो वदति मण्डलम्। तद् बन्धनं कुरु कुरु स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ भूत-पिशाचान्, असुर-ग्रहान्, डाकिनी-ग्रहान्, अपस्मार-ग्रहान्, कामलक-ग्रहान्, भूत-ग्रहान्, प्रेत-ग्रहान्, कस्मल-ग्रहान्, अति-विश्वास-ग्रहान् नाशय नाशय स्वाहा।

ॐ ग्लां ग्लीं ग्लूं ग्लें ग्लैं ग्लों ग्लौं ग्लं ग्लः गणपतये स्वाहा। ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः क्षेत्र-पालाय स्वाहा। ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रूं स्त्रें स्त्रैं स्त्रों स्त्रौं स्त्रं स्त्रः सूर्याय स्वाहा।

ॐ गं गन्धर्वाय स्वाहा। ॐ यं यक्षाय स्वाहा। ॐ ह्रीं तक्षक-आस्तीक-कर्कोटक-द्रावलिक-शङ्ख-पद्मक-कुलिक-महा-शङ्ख-चूड़-वासुकि-नाग-कुले श्रीं श्रीं ल्वौं ह्रौं हूं फट् स्वाहा।

ॐ ऐं ह्रीं हनुमते राम-दूताय लङ्का-विध्वंसनाय अञ्जनी-गर्भ-सम्भूताय त्रीन्-त्रिशत्-शाकिनी-शाय-शाकिनी-डाकिनी-यक्षिणी-विध्वंसनाय भूत-प्रेत-पिशाच-मर्दनाय, किलि किलि, वुवुकारेण विभीषणे, रक्षेशाय, ह्रीं श्रीं ग्लौं ह्रौं हूं फट् स्वाहा।

ॐ नमो हनुमते महा-बल-पराक्रमाय, मम परस्य च चतुर्वर्ण-भूत-प्रेत-पिशाच-शाकिनी-डाकिनी-यक्षिणी-पूतना-मारिका-महा-मारी-कृत्या-यक्ष-राक्षस-भैरवी, वेताल-ग्रह-ब्रह्म-ग्रह-राक्षस-आदित्यान् कुवा वीक्षणेन हन हन, जृम्भय जृम्भय, निराशय निराशय, वारय वारय, बन्धय बन्धय, नुद

नुद, धुन धुन, मां रक्ष रक्ष, महा-माहेश्वर, रुद्रावताराय हां हां हां, घें घें घें, हूं फट् स्वाहा।

ॐ ऐं श्रीं ह्रां ह्रीं हूं स्फ्रें, ह्सौं हस्ख्फ्रें ह्सों द्रों ॐ हनुमते मम क्षय-कुष्ठ-गण्ड-माला-स्फोटक-क्षत-ज्वर-एकाहिकं-द्व्याहिकं-त्र्याहिकं-चातुर्थिकं-सम्भव-ज्वर-सन्निपातिक-ज्वर-भूत-ज्वर-मन्त्र-ज्वर-शूल-भगन्दर-मूत्र-कृच्छ्र-कपाल-कर्ण-शूल-अक्षि-शूल - उदर-शूल-हस्त-शूल-पाद-शूलार्दित-सर्वान् व्याधीन् क्षणेन भिन्धि भिन्धि, छिन्धि छिन्धि, नाशय नाशय, निष्कृन्तय निष्कृन्तय, छेदय छेदय, भेदय भेदय, वीर हनुमान्! ह्रां ह्रां ह्रूं ह्रूं घें घें ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रूं फट् स्वाहा।

ॐ ऐं ह्रीं क्रां क्रौं सुग्रीवाय वानर-राजाधिराजाय किलि वुवु-कारेण, हिलि हिलि, मिलि मिलि, शाकिनी-डाकिनी-यक्षिणी-भूत-प्रेत-पिशाचान् प्रणाशय प्रणाशय, सुग्रीव वीर! छिन्धि छिन्धि, भिन्धि भिन्धि, सिन्धि सिन्धि, त्रोटय त्रोटय, त्राटय त्राटय, सर्व-ग्रहान् हन हन, पच पच, आग्रय आग्रय। ॐ ऐं ह्रीं ह्रीं क्रीं हों भूं स्भूं हूं हूं फट् स्वाहा।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ऐं सकलेश्वरि!, सुरासुर-वन्दिते!, श्रीत्रिपुरे! ऐं ह्रों क्रूं क्रूं हूं फट् स्वाहा। ॐ रक्त-चामुण्डे!, नर-कपाले! उल्कोपरि परिवारे!, श्मशान-प्रिये!, सर्व-सकल-भक्ष-रुधिर-मांस-भोजन-प्रिये!, सिद्धि-विद्याधर-वन्दित-चरणे!, असुरासुर-गण-सेविते!, दहन-पुरन्दरे!, विष्णु-स्तुते!, विश्वेश्वरि!, पूजिते!, त्रैलोक्यादि-आधार-मूले!, विश्व-जननि!, आनन्द-स्वरूपिणि!, विश्व-सृष्टि-स्वरूपे!, महा-विद्ये!, भैरव-रूपिणि!, स्वर्ग-मृत्यु-पाताल-विनाशिनि!, कल्पे!, रुद्र-कुक्षि!, विनिर्गत-शरीरे!, षोडश-कला-परिपूर्णे!, दानव-स्वरूपेण दश-दिशि इन्द्र-

उच्छिन्दे!, ऐं ह्रीं अस्मिन् मण्डले प्रवेशय प्रवेशय, शत्रु-मुखं स्तम्भय स्तम्भय, अन्य भूतं भक्षय भक्षय, अरि-सैन्यं विध्वंसय विध्वंसय, ब्रह्म-राक्षसान् उत्सादय उत्सादय, पर-विद्यां निवारय निवारय, कु-यन्त्रं भञ्जय भञ्जय, ज्वरं नाशय नाशय, विषं निर्विषं कुरु कुरु, पर-सङ्कटं दह दह, पच पच, मथ मथ, मर्दय मर्दय, सर्व-दुष्ट-जनं भक्षय भक्षय, मम मनोरथान् पूरय पूरय, अतीतानां गत-वार्त्तां वर्तमानं कथय कथय, ऐं ह्रीं छिन्धि छिन्धि, भिन्धि भिन्धि, सिन्धि सिन्धि, त्रोटय त्रोटय, सर्व-ग्रहान् शक्ति-शत्रून् भस्मी कुरु कुरु, इन्द्र-वज्रेण, ब्रह्म-पातेन, बन्ध बन्ध, रुद्र-शालेन छेदय छेदय, ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रों ह्रौं क्रों क्रौं ग्लौं स्वौं श्रीं हूं फट् स्वाहा।

ॐ हरिभ्यां नमः स्वाहा। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रं ह्रः हूं फट् स्वाहा। ॐ क्रां क्रीं क्रूं क्रें क्रैं क्रों क्रौं क्रं क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ गन्धाय नमः स्वाहा। ॐ गन्ध-पादाय नमः स्वाहा। ॐ पञ्चोत्तर-शत-कोटि-सहस्त्र-गजान् बन्ध बन्ध, शान्तिं कुरु कुरु, भूत-प्रेत-पिशाच-शाकिनी-डाकिनी-यक्षिणी-कूष्माण्ड-वासिनी चातुर्थिक-चौर-राजा-दुष्ट-पुरुषादीन् तेषां दिशां बध्नामि, पातालं बध्नामि, अन्तरिक्षं बध्नामि, घ्राणं बध्नामि, भ्रू बध्नामि, श्रोत्रं बध्नामि, मुखं बध्नामि, वाचं बध्नामि, जिह्वां बध्नामि, शब्दं बध्नामि, हृदयं बध्नामि, पञ्चाशत्-कोटि-सहस्त्रानन्त-योजन-विस्तीर्णो रुद्रो वदति मण्डलं। तस्य श्रीरुद्र-मण्डलं बन्ध बन्ध, रक्ष रक्ष, माचल माचल, माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रं ह्रः हूं फट् स्वाहा। ॐ क्रां क्रीं क्रूं क्रें क्रैं क्रों क्रौं क्रं क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा।

ॐ ऐन्द्र-दिशायां ऐरावतारूढं वज्र-हस्तं परिवार-सहितं दिग्-देवाधि-पतिमैन्द्र-मण्डलं बध्नामि स्वाहा। इन्द्र-मण्डलं बन्ध बन्ध, रक्ष रक्ष, माचल माचल, माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रं ह्रः हूं फट् स्वाहा। ॐ क्रां क्रीं क्रूं क्रें क्रैं क्रों क्रौं क्रं क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा।

ॐ अग्नि-दिशायां अजारूढं शक्ति-सहितं परिवार-सहितं दिग्-देवाधिपते अग्नि-मण्डलं बध्नामि नमः स्वाहा। ॐ अग्नि-मण्डलं बन्ध बन्ध, रक्ष रक्ष, माचल माचल, माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रं ह्रः हूं फट् स्वाहा। ॐ क्रां क्रीं क्रूं क्रें क्रैं क्रों क्रौं क्रं क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा।

ॐ दक्षिण-दिशायां महिषारूढं दण्ड-हस्तं परिवार-सहितं दिग्-देवाधि-पतिं निर्ऋति-मण्डलं बध्नामि नमः स्वाहा। ॐ निर्ऋति-मण्डलं बन्ध बन्ध, रक्ष रक्ष, माचल माचल, माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रं ह्रः हूं फट् स्वाहा। ॐ क्रां क्रीं क्रूं क्रें क्रैं क्रों क्रौं क्रं क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा।

ॐ नैऋत्य-दिशायां प्रेतारूढं खड्ग-हस्तं परिवार-सहितं दिग्-देवाधि-पतिं निऋति-मण्डलं बध्नामि नमः स्वाहा। ॐ निऋति-मण्डलं बन्ध बन्ध, रक्ष रक्ष, माचल माचल, माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रं ह्रः हूं फट् स्वाहा। ॐ क्रां क्रीं क्रूं क्रें क्रैं क्रों क्रौं क्रं क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा।

ॐ पश्चिम-दिशायां मन्त्रारूढं पाश-हस्तं परिवार-सहितं दिग्-देवाधि-पतिं वरुण-मण्डलं बध्नामि नमः स्वाहा। ॐ वरुण-मण्डलं बन्ध बन्ध, रक्ष रक्ष, माचल माचल, माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रं ह्रः हूं फट् स्वाहा। ॐ क्रां क्रीं क्रूं क्रें क्रैं क्रों क्रौं क्रं क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा।

ॐ वायु-दिशायां मृगारूढं धनुर्हस्तं परिवार-सहितं दिग्-देवाधि-पतिं वायु-मण्डलं बध्नामि नमः स्वाहा। ॐ वायु-मण्डलं बन्ध बन्ध, रक्ष रक्ष, माचल माचल, माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रं ह्रः हूं फट् स्वाहा। ॐ क्रां क्रीं क्रूं क्रें क्रैं क्रों क्रौं क्रं क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा।

ॐ उत्तर-दिशायां नरारूढं गदा-हस्तं परिवार-सहितं दिग्-देवाधि-पतिं कुबेर-मण्डलं बध्नामि नमः स्वाहा। ॐ कुबेर-मण्डलं बन्ध बन्ध, रक्ष रक्ष, माचल माचल, माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रं ह्रः हूं फट् स्वाहा। ॐ क्रां

क्रीं क्रूं क्रें क्रैं क्रों क्रौं क्रं क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा।

ॐ ईशान-दिशायां वृषभारूढं त्रिशूल-हस्तं परिवार-सहितं दिग्-देवाधि-पतिं ईशान-मण्डलं बध्नामि नमः स्वाहा। ॐ ईशान-मण्डलं बन्ध बन्ध, रक्ष रक्ष, माचल माचल, माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रं ह्रः हूं फट् स्वाहा। ॐ क्रां क्रीं क्रूं क्रें क्रैं क्रों क्रौं क्रं क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा।

ॐ अन्तरिक्ष-दिशायां लोष्ठ-नागारूढं शूल-हस्तं परिवार-सहितं दिग्-देवाधि-पतिं कालाग्नि-रुद्र-मण्डलं बध्नामि नमः स्वाहा। ॐ कालाग्नि-रुद्र-मण्डलं बन्ध बन्ध, रक्ष रक्ष, माचल माचल, माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रं ह्रः हूं फट् स्वाहा। ॐ क्रां क्रीं क्रूं क्रें क्रैं क्रों क्रौं क्रं क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा।

ॐ विष्णु-दिशायां गरुडारूढं शङ्ख-चक्र-गदा-पद्म-हस्तं परिवार-सहितं दिग् - देवाधि-पतिं विष्णु-मण्डलं बध्नामि नमः स्वाहा। विष्णु-मण्डलं बन्ध बन्ध, रक्ष रक्ष, माचल माचल, माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रं ह्रः हूं फट् स्वाहा। ॐ क्रां क्रीं क्रूं क्रें क्रैं क्रों क्रौं क्रं क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा।

ॐ ब्रह्मणो-दिशायां हंसारूढं ब्रह्मास्त्र-हस्तं परिवार-सहितं दिग्-देवाधि-पतिं ब्रह्म-मण्डलं बध्नामि नमः स्वाहा। ॐ ब्रह्म-

मण्डलं बन्ध बन्ध, रक्ष रक्ष, माचल माचल, माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रं ह्रः हूं फट् स्वाहा। ॐ क्रां क्रीं क्रूं क्रें क्रैं क्रों क्रौं क्रं क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा।

ॐ अधो-दिशायां क्रूनारूढं लोष्ठ-भागं क्रूं-परिवार-सहितं दिग्-देवाधि-पतिं पाताल-मण्डलं बध्नामि नमः स्वाहा। ॐ पाताल-मण्डलं बन्ध बन्ध, रक्ष रक्ष, माचल माचल, माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रं ह्रः हूं फट् स्वाहा। ॐ क्रां क्रीं क्रूं क्रें क्रैं क्रों क्रौं क्रं क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ महा-शान्तिक-भूत-प्रेत-पिशाच - राक्षस - ब्रह्म-राक्षस - सर्प - वेताल-वृश्चिक-भय-विनाशनाय स्वाहा।

ॐ पूर्व-दिशायां वज्रको नाम राक्षस स - दारस्य वज्रकस्याष्टादश-कोटि-सहस्रस्य पिशाचस्य दिशो बध्नामि नमः स्वाहा। ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा।

ॐ अग्नि-दिशायां अग्नि-ज्वालको नाम राक्षसस्याग्नि-ज्वालस्याष्टाष्टक-दश-कोटि-सहस्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि नमः स्वाहा। ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा।

ॐ दक्षिण - दिशायां पिङ्गलिको नाम राक्षसस्तस्य पिङ्गलिकस्याष्टादश-कोटि-सहस्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि

नमः स्वाहा। ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय् स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा।

ॐ निरऋति - दिशायां मारीचिको नाम राक्षसस्तस्य मारीचिकस्याष्टादश-कोटि-सहस्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि नमः स्वाहा। ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा।

ॐ पश्चिम-दिशायां मकरो नाम राक्षसस्तस्य मकरास्याष्टादश-कोटि-सहस्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि नमः स्वाहा। ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा।

ॐ नमो वायव्य - दिशायां कूष्माण्डको नाम राक्षसस्तस्य कूष्माण्डकस्याष्टादश-कोटि सहस्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि नमः स्वाहा। ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा।

ॐ हिमवन्तोत्तरस्य दिशायां महा-भीमो नाम राक्षसस्तस्य महा-भीमस्याष्टादश-कोटि-सहस्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि नमः स्वाहा। ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा।

ॐ ईशान-दिशायां भैरवो नाम राक्षसस्तस्य भैरवस्याष्टादश-कोटि - सहस्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि नमः स्वाहा।

ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा।

ॐ अन्तरिक्ष-दिशायां मन्त्र-रूपो नाम राक्षसस्तस्यान्त-रूपस्याष्टादश - कोटि - सहस्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि नमः स्वाहा। ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा।

ॐ ब्रह्मणो दिशायां ब्रह्म-स्वरूपो नाम राक्षसस्तस्य ब्रह्म-स्वरूपस्याष्टादश-कोटि-सहस्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि नमः स्वाहा। ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा।

ॐ ऊर्ध्व-दिशायां खेचरिको नाम राक्षसस्तस्य खेचरिक-स्याष्टादश-कोटि-सहस्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि नमः स्वाहा। ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा।

ॐ सर्वतो-दिशायां गरुडारूढं शङ्ख-चक्र-गदा-पद्म-हस्तेन श्रीनृसिंह-वन्दित बन्ध बन्ध, रक्ष रक्ष, माचल माचल, माक्रम्य माक्रम्य, कुरु कुरु फट् स्वाहा। ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ महा-शान्तिक-भूत-प्रेत-पिशाच-राक्षस-ब्रह्म-राक्षस-सर्व-वेताल-सर्प-वृश्चिक-भय-विनाशनाय स्वाहा।

ॐ शिखां मे रक्षतु ब्रह्माणी ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रं ह्रः हूं फट् स्वाहा।

ॐ शिरो-रोगे रक्षतु मातेश्वरी ॐ ह्रां ह्रीं व्रीं क्लीं क्षौं धूं हूं फट् स्वाहा।

ॐ कण्ठं मे रक्षतु वैष्णवी ॐ ह्रां ह्रीं व्रीं क्लीं क्षौं धूं हूं फट् स्वाहा।

ॐ भुजौ मे रक्षतु योगेश्वरी ॐ ह्रां ह्रीं व्रीं क्लीं क्षौं धूं हूं फट् स्वाहा।

ॐ कुक्षौ मे रक्षतु नव-दुर्गा ॐ ह्रां ह्रीं व्रीं क्लीं क्षौं धूं हूं फट् स्वाहा।

ॐ नाभौ मे रक्षतु वाराही ॐ ह्रां ह्रीं व्रीं क्लीं क्षौं धूं हूं फट् स्वाहा।

ॐ गुदं मे रक्षतु चामुण्डा ॐ ह्रां ह्रीं व्रीं क्लीं क्षौं धूं हूं फट् स्वाहा।

ॐ जङ्घे मे रक्षतु भैरवी ॐ ह्रां ह्रीं व्रीं क्लीं क्षौं धूं हूं फट् स्वाहा।

ॐ पादौ मे रक्षतु विनायकी ॐ ह्रां ह्रीं व्रीं क्लीं क्षौं धूं हूं फट् स्वाहा।

ॐ सर्वतो रक्षतु नारसिंही ॐ ह्रां ह्रीं व्रीं क्लीं क्षौं धूं हूं फट् स्वाहा।

ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ महा-शान्तिक-भूत-प्रेत-पिशाच-राक्षस-ब्रह्म-राक्षस-सर्व-वेताल-सर्प-वृश्चिक-भय-विनाशनाय स्वाहा।

ॐ परिणामे महा-विद्या, महा-देवस्य सन्निधौ।
एक-विंशति-रात्रेण, जपित्वा सिद्धिमाप्नुयात्।।
यदि न सिद्ध्यते वापि, रुद्रो वै ब्रह्महा भवेत्।
पठित्वा यस्तु न पठेत्, एतदा ब्रह्महा भवेत्।।
स्त्रियो वा पुरुषो वापि, पापं भस्म समाचरेत्।
पठेत् वा पाठयेत् वापि, सर्व-कार्येषु सर्वदा।।
दुष्टानां मारणं चैव, साधकानां सुखावहम्।
सर्व-कार्येषु सिद्धि स्यात्, शान्ति-कर्मे विशेषतः।।
माहेश्वरी महा-विद्या, महा-देवेन निर्मिता।
चक्रेश्वरी शिवा शान्ता, शान्तिदा भवति ध्रुवम्।।
जपेन हरते शत्रून्, जपेन सिद्धि-भाग् भवेत्।
द्रावणे स्तम्भने चैव, मारणे मोहने तथा।
सर्व-कार्येषु सिद्धि स्यात्, शान्ति-कर्मे विशेषतः।।

।। महा-विद्या शुभम् नमः ।।

✱✱✱

# महा-विद्या-हवन-विधि

भूर्ज-पत्रे त्विदं यन्त्रं, लिखेत् गोरोचनेन च।
वितस्ति-मात्रे भूमौ च, निखनेत् तु प्रयत्नतः।।
तदूर्ध्वं वेदिकां कृत्वा, अग्नि-स्थापनं यथा-विधिः।
सर्व-कार्येषु कर्तव्यं, होम-मन्त्रो यथा-विधि।।

भोज-पत्र पर गोरोचन या चन्दन अथवा दोनों को मिलाकर उससे अनार की लेखनी द्वारा चौंसठ वर्गों का चतुरस्त्र लिखे। प्रत्येक वर्ग के मध्य में 'ह्रीं' बीज लिखे। इस यन्त्र को हवन-वेदी के नीचे इस प्रकार गाड़ दे कि वह जलने न पाए। इसके लिए यह ध्यान रखे कि 'यन्त्र' से डेढ़ हाथ के ऊपर 'हवन-वेदी' रहे। 'हवन' के बाद विशेष रूप से भूत-शान्ति, ग्रह-शान्ति, ज्वर-शान्ति के लिए निम्न-लिखित मन्त्र का १०८ बार 'जप' करना चाहिए। 'अमुकं अमुकीं वा' के स्थान पर बाधा-ग्रस्त पुरुष या स्त्री का नाम लेना चाहिए। यथा– ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं त्रिपुरे महा-विद्ये 'अमुकं अमुकीं वा' आकर्षय स्वाहा।

## महा-विद्या-पूजन-सामग्री

शर्करा घृत खाण्डानि, हविष्यं गुग्गुलं तथा।
पञ्च - मेवा मधुं चैव, लवङ्गं लायचिं तथा।।
पूगी - फलं च ताम्बूलं, तण्डुलाक्षतमेव च।
नारिकेलं च पुष्पं च, दुकूलं पद्ममेव च।।
पद्म - पुष्पं रक्त-पुष्पं, च धूप - दीपकं तथा।
नैवेद्यं चैव ताम्बूलं, दक्षिणा स्वर्ण-मेव च।।
अर्कः पलाशः खदिरः, अपामार्गोऽथ पिप्पलः।
औदुम्बर-शमी-दूर्वा, कुशां च समधिः क्रमात्।।
ग्रह-प्रेतये समधिः।

## महा-विद्या-दीप-मन्त्र

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं दीप-स्वरूपे!, महा-विद्ये!, प्रचण्ड-पराक्रमे!, सर्व-भूत-प्रभञ्जिनि!, सर्व - दुष्ट - ग्रह - द्राविणि!, पर-यन्त्र-पर-तन्त्र-पर-कृत-पर-विद्या-प्रभञ्जिनि! इदं दीपं गृह्ण गृह्ण, मम शत्रून् मर्दय मर्दय स्वाहा।

## महा-विद्या-स्तव-पुरश्चरण विधिः

भूत-प्रेत-पिशाचानां, डाकिन्यां ब्रह्म-राक्षसाम्।
पठेत् सप्त-रात्रिं तु, होमं कृत्वा त्रयायुतम्।।
साकल्यं पायसश्चैव, कटु-तैलं च सर्षपम्।
त्रि-पाठं प्रत्यहं कुर्यात्, एक-विंशति-दिनानि च।
दशांशं हवनं कुर्यात्, दशांशं चैव तर्पणम्।
दशांशं मार्जनं चैव, दशांशं द्विज-भोजनम्।
दशांशं दक्षिणा देया, कार्य - सिद्धिर्न संशयः।।

## 'रुद्र-यामले' दश-रात्रौ विधिस्तथा

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि, हवनं कार्यमुत्तमम्।
स्तम्भने रक्त-पुष्पाणि, कार्य-सिद्धिस्तु जायते।।
मारणे च सुरा मांसं, सद्यो याति यमालयम्।
दधि-होमं विग्रहे चैव, उच्चाटने रुधिरस्तथा।।
ग्रह-शान्तौ पयः पक्वान्नं, ज्वर-शान्तौ च चन्दनं।
रोग-शान्तौ तथा दुग्धं, भूमि-कामे च पायसम्।।
ब्रह्म-भूत-पिशाचेभ्यो, ग्रहेभ्यो क्लेश-शान्तये।
रोगादि-शान्ति-कर्मणि, गृह-मध्ये तु स्थापयेत्।।
स्मरणे पुत्र-कामे तु, शान्ति-कामे तु गो-गृहे।
कलशं स्थापनं कुर्यात्, पूजयेत् तु समाहितः।।

मारणे श्मशान-भूमौ, पठेत् स्तोत्रं समाहितः।
उच्चाटने विग्रहे च, अश्वत्थस्य च मूलके।।

## क्रोड-तन्त्रे

स्तम्भने पूर्व-मुखे च, मारणे दक्षिणं मुखम्।
उच्चाटने विग्रहे च, पश्चिमाभिमुखं पठेत्।।
प्रेत-शान्तौ रोग-शान्तौ, शतावृत्तिं पठेन्नरः।
त्रि-सन्ध्यमेकावृत्त्या तु, पठेत् साध्यमनुत्तमम्।।
मारणे उच्चाटने च, विग्रहे तु विशेषतः।
त्रि-षष्ट्यावृत्ति-मात्रेण, कार्य-सिद्धिर्न संशयः।।
ग्रह-शान्तौ ज्वर-शान्तौ, रोग-शान्तौ विशेषतः।
त्रि-वृत्त्या पठेन्नित्यं, त्रि-सन्ध्यं तु समाहितः।।
अन्ते च सर्व-कार्येषु, एक-विंशतिकं पठेत्।।

## 'रुद्र-यामले' लिङ्गार्चन-विधि

स्तम्भने रजनी ( हरिद्रा ) प्रोक्तं, मारणे लोह-मयं तथा।
ज्वर-शान्तौ चन्दनं च, पृष्ठ-रोगे तु गोमयम्।।
पुत्र-कामे शालि-चूर्णं, भूत-शान्तौ रजतं तथा।
ग्रह-शान्तौ अष्ट-धातून्, सर्व-कार्येषु मृन्मयम्।।

## 'वाराही-तन्त्रे'

स्तम्भने कांस्य-पात्रेण, उच्चाटने विग्रहे तथा।
मारणे लोह-मयं पात्रं, इत्युक्तं रुद्र-यामले।।
ब्रह्म-राक्षस-भूतेषु, डाकिन्यां च विशेषतः।
कार्यं पित्तल-पात्रं तु, तदा सिद्धिर्न संशयः।।
भूमि-कामे पुत्र-कामे, रोग-शान्तौ ज्वरादिषु।
अष्ट-धातु-तमं पात्रं, पूजयेत् भक्ति-तत्परः।।
ग्रह-शान्तौ ताम्र-पात्रं, इत्यतः नान्यथा भवेत्।।

## 'क्रोड-तन्त्रे' जप-विधिः

## तन्मन्त्र अयुतं जपेत् सिद्धिः

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रं ह्रः हूं स्वाहा।

ॐ क्रां क्रीं क्रूं क्रें क्रैं क्रों क्रौं क्रं क्रः स्वाहा।

## सर्व-कार्येषु मूल-मन्त्र अयुतं जपेत्

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं महा-विद्यायै स्वाहा।

-: विशेष-सूचना :-

'श्रीमहा-विद्या-स्तोत्र' के पाठ के लिए नित्य परम्परा-गत रूप से ११ रुद्र-मूर्ति (पार्थिव शिव-लिङ्ग) बनाएँ और उनकी पूजा करे। फिर 'पाठ' करे। सप्तमी, नवमी या चतुर्दशी के दिन 'हवन' करे। 'पाठ' की ४१, ३१, २१ या ११ आवृत्तियाँ करे। तब 'हवन' करे। आराधना रात्रि में ११ बजे से ३ बजे तक करे। दिन में ९ से १२ बजे तक तामस आराध्य के लिए है। राजस आराध्य में ७ से १० बजे रात्रि में, दिन में ८ से ४ बजे तक। सात्विक किसी भी समय कर सकता है। हविष्यान्न का ही भोजन करे। तैल न खाएँ, पीला वस्त्र पहने, सजल नारियल देवी जी को चढ़ाएँ। पीत अक्षत, पीत पुष्प, पीत चन्दन, पीला वेष्ठन रखे। 'कुशा की मूँजी' पाठ की पुस्तक में रखे। 'गोरोचन' पास में अवश्य रखे।

# श्रीमहा-विपरीत-प्रत्यङ्गिरा-स्तोत्र

।। नमस्कार-मन्त्र ।।

श्रीमहा-विपरीत-प्रत्यङ्गिरा-काल्यै नमः।। (तीन बार)

।। पूर्व-पीठका-श्रीमहेश्वर उवाच ।।

शृणु देवि! महा - विद्यां, सर्व - सिद्धि-प्रदायिकां।
यस्याः विज्ञान-मात्रेण, शत्रु-वर्गाः लयं गताः।।०१।।
विपरीता महा-काली, सर्व-भूत-भयङ्करी।
यस्याः प्रसङ्ग-मात्रेण, कम्पते च जगत्-त्रयम्।।०२।।
न च शान्ति-प्रदः कोऽपि, परमेशो न चैव हि।
देवताः प्रलयं यान्ति, किं पुनर्मानवादयः।।०३।।
पठनाद्धारणाद्देवि!, सृष्टि - संहारको भवेत्।
अभिचारादिकाः सर्वेया या साध्य-तमाः क्रियाः।।०४।।
स्मरणेन महा-काल्याः, नाशं जग्मुः सुरेश्वरि!
सिद्धि-विद्या महा-काली परत्रेह च मोदते।।०५।।
सप्त-लक्ष-महा - विद्याः, गोपिताः परमेश्वरि!
महा-काली महा-देवी, शङ्करस्येष्ट-देवता।।०६।।
यस्याः प्रसाद- मात्रेण, पर-ब्रह्म महेश्वरः।
कृत्रिमादि-विषघ्ना सा, प्रलयाग्नि-निवर्तिका।।०७।।
त्वद्-भक्त-दर्शनाद् देवि!, कम्पमानो महेश्वरः।
यस्य निग्रह-मात्रेण, पृथिवी प्रलयं गता।।०८।।
दश-विद्याः सदा ज्ञाता, दश-द्वार-समाश्रिताः।
प्राची-द्वारे भुवनेशी, दक्षिणे कालिका तथा।।०९।।

नाक्षत्री पश्चिमे द्वारे, उत्तरे भैरवी तथा।
ऐशान्यां सततं देवि!, प्रचण्ड-चण्डिका तथा।।१०।।
आग्नेय्यां बगला-देवी, रक्षः-कोणे मतङ्गिनी।
धूमावती च वायव्ये, अध-ऊर्ध्वे च सुन्दरी।।११।।
सम्मुखे षोडशी देवी, सदा जाग्रत्-स्वरूपिणी।
वाम-भागे च देवेशि!, महा-त्रिपुर-सुन्दरी।।१२।।
अंश-रूपेण देवेशि!, सर्वाः देव्यः प्रतिष्ठिताः।
महा-प्रत्यङ्गिरा सैव, विपरीता तथोदिता।।१३।।
महा-विष्णुर्यथा ज्ञातो, भुवनानां महेश्वरि!
कर्ता पाता च संहर्ता, सत्यं सत्यं वदामि ते।।१४।।
भुक्ति-मुक्ति-प्रदा देवी, महा-काली सुनिश्चिता।
वेद-शास्त्र-प्रगुप्ता सा, न दृश्या देवतैरपि।।१५।।
अनन्त-कोटि-सूर्याभा, सर्व-शत्रु-भयङ्करी।
ध्यान-ज्ञान-विहीना सा, वेदान्तामृत-वर्षिणी।।१६।।
सर्व-मन्त्र-मयी काली, निगमागम-कारिणी।
निगमागम-कारी सा, महा-प्रलय-कारिणी।।१७।।
यस्या अङ्ग-धर्म-लवा, सा गङ्गा परमोदिता।
महा-काली नगेन्द्रस्था, विपरीता महोदया।।१८।।
यत्र - यत्र प्रत्यङ्गिरा, तत्र काली प्रतिष्ठिता।
सदा स्मरण-मात्रेण, शत्रूणां निगमागमाः।।१९।।
नाशं जग्मुः नाशमायुः, सत्यं सत्यं वदामि ते।
पर-ब्रह्म महा-देवि!, पूजनैरीश्वरो भवेत्।।२०।।
शिव-कोटि-समो योगी, विष्णु-कोटि-समः स्थिरः।
सर्वैराराधिता सा वै, भुक्ति-मुक्ति-प्रदायिनी।।२१।।

गुरु-मन्त्र-शतं जप्त्वा, श्वेत-सर्षपमानयेत्।
दश-दिशो विकिरेत् तान्, सर्व-शत्रु-क्षयाप्तये।।२२।।
भक्त-रक्षां शत्रु-नाशं, सा करोति च तत्क्षणात्।
ततस्तु पाठ-मात्रेण, शत्रूणां मारणं भवेत्।।२३।।

।। गुरु-मन्त्र ।।

ॐ हूं स्फारय-स्फारय, मारय-मारय, शत्रु-वर्गान् नाशय-नाशय स्वाहा।।

।। विनियोग ।।

ॐ अस्य श्रीमहा-विपरीत-प्रत्यङ्गिरा-स्तोत्र-माला-मन्त्रस्य श्रीमहाकाल-भैरव ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, श्रीमहा-विपरीत-प्रत्यङ्गिरा देवता, हूं वीजं, ह्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकं, मम श्रीमहा-विपरीत-प्रत्यङ्गिरा-प्रसादात् सर्वत्र सर्वदा सर्व-विध-रक्षा-पूर्वक सर्व-शत्रूणां नाशार्थे यथोक्त-फल-प्राप्त्यर्थे वा पाठे विनियोगः।

।। ऋष्यादि-न्यास ।।

शिरसि श्रीमहा-काल-भैरव-ऋषये नमः। मुखे त्रिष्टुप्-छन्दसे नमः। हृदि श्रीमहा-विपरीत-प्रत्यङ्गिरा-देवतायै नमः। गुह्ये हूं-बीजाय नमः। पादयोः ह्रीं-शक्तये नमः। नाभौ क्लीं-कीलकाय नमः। सर्वाङ्गे मम श्रीमहा-विपरीत-प्रत्यङ्गिरा-प्रसादात् सर्वत्र सर्वदा सर्व-विध-रक्षा-पूर्वक सर्व-शत्रूणां नाशार्थे यथोक्त-फल-प्राप्त्यर्थे वा पाठे विनियोगाय नमः।

।। कर-न्यास ।।

हूं ह्रीं क्लीं ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः। हूं ह्रीं क्लीं ॐ तर्जनीभ्यां नमः। हूं ह्रीं क्लीं ॐ मध्यमाभ्यां नमः। हूं ह्रीं क्लीं ॐ अनामिकाभ्यां नमः। हूं ह्रीं क्लीं ॐ कनिष्ठिकाभ्यां नमः। हूं ह्रीं क्लीं ॐ कर-तल-द्वयोर्नमः।

॥ अङ्ग-न्यास ॥

हूं ह्रीं क्लीं ॐ हृदयाय नमः। हूं ह्रीं क्लीं ॐ शिरसे स्वाहा। हूं ह्रीं क्लीं ॐ शिखायै वषट्। हूं ह्रीं क्लीं ॐ कवचाय हुम्। हूं ह्रीं क्लीं ॐ नेत्र-त्रयाय वौषट्। हूं ह्रीं क्लीं ॐ अस्त्राय फट्।

॥ मूल स्तोत्र-पाठ ॥

ॐ अं अं अं नमो विपरीत-प्रत्यङ्गिरायै सहस्रानेक-सूर्य-लोचनायै कोटि-विद्युज्जिह्वायै महा-व्याधिन्यै-संहार-रूपायै जन्म-शान्ति-कारिण्यै। मम स-परिवारकस्य भावि-भूत-भवच्छत्रून् स-दारापत्यान् संहारय संहारय, महा-प्रभावं दर्शय दर्शय, हिलि हिलि, मिलि मिलि, भूरि भूरि, विद्युज्जिह्वे! ज्वल ज्वल, प्रज्वल प्रज्वल, ध्वंसय ध्वंसय, प्रध्वंसय प्रध्वंसय, ग्रस ग्रस, पिब पिब, नाशय नाशय, त्रासय त्रासय, वित्रासय वित्रासय, द्रावय द्रावय, विद्रावय विद्रावय, हूं-हूं-हूं-हूं-हूं-हूं-हूं, ह्रीं-ह्रीं-ह्रीं-ह्रीं-ह्रीं-ह्रीं-ह्रीं, क्लीं-क्लीं-क्लीं-क्लीं-क्लीं-क्लीं-क्लीं, ॐ-ॐ-ॐ-ॐ-ॐ-ॐ-ॐ फट् फट् स्वाहा।।२४।।

हूं-हूं-हूं-हूं-हूं-हूं-हूं, ह्रीं-ह्रीं-ह्रीं-ह्रीं-ह्रीं-ह्रीं-ह्रीं, क्लीं-क्लीं-क्लीं-क्लीं-क्लीं-क्लीं-क्लीं विपरीत-प्रत्यङ्गिरे! हूं-हूं-हूं-हूं-हूं-हूं-हूं, ह्रीं-ह्रीं-ह्रीं-ह्रीं-ह्रीं-ह्रीं-ह्रीं, क्लीं-क्लीं-क्लीं-क्लीं-क्लीं-क्लीं-क्लीं, ॐ-ॐ-ॐ-ॐ-ॐ-ॐ-ॐ, फट् फट् स्वाहा। हूं ह्रीं क्लीं ॐ विपरीत-प्रत्यङ्गिरे! मम स-परिवारकस्य यावच्छत्रून् खड्गेन घातय घातय, त्रिशूलेन मारय मारय, विपरीत-प्रत्यङ्गिरे! मम स-दाराऽपत्यस्य भूत-भावि-भवच्छत्रून् देवता-पितृ-पिशाच-नाग-गरुड-किन्नर-विद्याधर-गन्धर्व-यक्ष-राक्षस-लोक-पालान् ग्रह-भूत-नर-लोकान् स-मन्त्रान् सौषधान् सायुधान् स-सहायान् बाणैः छिन्धि छिन्धि, भिन्धि भिन्धि,

निकृन्तय निकृन्तय, छेदय छेदय, उच्चाटय उच्चाटय, मारय मारय, तेषामऽहङ्कारादि-धर्मान् कीलय कीलय, घातय-घातय, नाशय नाशय, विपरीत-प्रत्त्यङ्गिरे! स्फ्रें फेत्कारिणि! ॐ अं जः-ॐ अं जः-ॐ अं जः-ॐ अं जः-ॐ अं जः-ॐ अं जः-ॐ अं जः, ॐ अं ठः-ॐ अं ठः-ॐ अं ठः-ॐ अं ठः-ॐ अं ठः-ॐ अं ठः-ॐ अं ठः, मम स-परिवारकस्य शत्रूणां सर्वाः विद्याः स्तम्भय स्तम्भय, नाशय नाशय, शिरांसि स्तम्भय स्तम्भय, नाशय नाशय, मुखान् स्तम्भय स्तम्भय, नाशय नाशय,नेत्राणि स्तम्भय स्तम्भय, नाशय नाशय, दन्तान स्तम्भय स्तम्भय, नाशय नाशय, जिह्वां स्तम्भय स्तम्भय, नाशय नाशय, कण्ठान् स्तम्भय स्तम्भय, नाशय नाशय, हृदयान् स्तम्भय स्तम्भय, नाशय नाशय, हस्तान् स्तम्भय स्तम्भय, नाशय नाशय, पादान् स्तम्भय स्तम्भय, नाशय नाशय, गुह्यं स्तम्भय स्तम्भय, नाशय नाशय, कुटुम्बान् स्तम्भय स्तम्भय, नाशय नाशय, वृत्तिं स्तम्भय स्तम्भय, नाशय नाशय, स्थानं कीलय कीलय, नाशय नाशय, प्राणान् कीलय कीलय, नाशय नाशय, ॐ अं जः-ॐ अं जः-ॐ अं जः-ॐ अं जः-ॐ अं जः-ॐ अं जः-ॐ अं जः, ॐ अं ठः-ॐ अं ठः-ॐ अं ठः-ॐ अं ठः-ॐ अं ठः-ॐ अं ठः-ॐ अं ठः, हूं-हूं-हूं-हूं-हूं-हूं-हूं, ह्रीं-ह्रीं-ह्रीं-ह्रीं-ह्रीं-ह्रीं-ह्रीं, क्लीं-क्लीं-क्लीं-क्लीं-क्लीं-क्लीं-क्लीं विपरीत-प्रत्यङ्गिरे! हूं-हूं-हूं-हूं-हूं-हूं-हूं, ह्रीं-ह्रीं-ह्रीं-ह्रीं-ह्रीं-ह्रीं-ह्रीं, क्लीं-क्लीं-क्लीं-क्लीं-क्लीं-क्लीं-क्लीं, ॐ-ॐ-ॐ-ॐ-ॐ-ॐ-ॐ फट् फट् स्वाहा मम स-परिवारकस्य सर्वतो रक्षां कुरु कुरु, ॐ हुं फट् स्वाहा।।२५।।

हूं ह्रीं क्लीं ॐ विपरीत-प्रत्यङ्गिरे! मम स-परिवारकस्य भूत-भावि-भवच्छत्रूणां उच्चाटनं कुरु कुरु, हूं हूं, फट् फट्

स्वाहा, ह्लीं-ह्लीं-ह्लीं-ह्लीं-ह्लीं वं-वं-वं-वं-वं लं-लं-लं-लं-लं रं-रं-रं-रं-रं यं-यं-यं-यं-यं ॐ-ॐ-ॐ-ॐ-ॐ नमो भगवति!, विपरीत-प्रत्यङ्गिरे!, दुष्ट-चाण्डालिनि!, त्रिशूल-वज्रांकुश-शक्ति-शूल-खड्ग-धनुः-शर-पाश-धारिणि!, शत्रु-रुधिर-चर्म-मेदो-मांसास्थि-मज्जा-शुक्र-मेहन-वसा-वाक्-प्राण-मस्तकादि-भक्षिणि!, पर-ब्रह्म-शिवे!, ज्वाला-दायिनि!, ज्वाला-मालिनि!, शत्रूच्चाटन-मारण-क्षोभण-स्तम्भन-मोहन-द्रावण-जृम्भण-भ्रामण-रौद्रण-सन्तापन-यन्त्र-मन्त्र-तन्त्रान्तर्याग-पुरश्चरण-भूतशुद्धि-पूजा-फल-परम-निर्वाण-हरण-कारिणि!, कपाल-खट्वाङ्ग-वरासि-धारिणि! मम स-परिवारकस्य भूत-भावि-भवच्छत्रून् स-सहायान् सायुधान् स-वाहनान् हन हन, रण रण, दह दह, दल दल, दम दम, धम धम, पच पच, मथ मथ, लङ्घय लङ्घय, खादय खादय, चर्वय चर्वय, व्यथय व्यथय, ज्वरय ज्वरय, मूकान् कुरु कुरु, ज्ञानं हर हर, ह्लीं-ह्लीं-ह्लीं-ह्लीं-ह्लीं, वं-वं-वं-वं-वं, लं-लं-लं-लं-लं, रं-रं-रं-रं-रं, यं-यं-यं-यं-यं, ॐ-ॐ-ॐ-ॐ-ॐ हूं हूं फट् फट् स्वाहा।।२६।।

ह्लीं-ह्लीं-ह्लीं-ह्लीं-ह्लीं-ह्लीं-ह्लीं, हूं-हूं-हूं-हूं-हूं-हूं-हूं, क्लीं-क्लीं-क्लीं-क्लीं-क्लीं-क्लीं-क्लीं विपरीत-प्रत्यङ्गिरे! ह्लीं-ह्लीं-ह्लीं-ह्लीं-ह्लीं-ह्लीं-ह्लीं, हूं-हूं-हूं-हूं-हूं-हूं-हूं, क्लीं-क्लीं-क्लीं-क्लीं-क्लीं-क्लीं-क्लीं, ॐ-ॐ-ॐ-ॐ-ॐ-ॐ-ॐ फट् फट् स्वाहा। मम स-परिवारकस्य कृते मन्त्र-यन्त्र-तन्त्र-हवन-कृत्यौषधि-विष-चूर्ण-शस्त्राद्यभिचार-सर्वोपद्रवादिकं येन कृतं, कारितं, कुरुते, कारयते, करिष्यति, कारयिष्यति वा तान् सर्वान् हन हन, स्फारय स्फारय, मारय मारय, विपरीत-प्रत्यङ्गिरे! मम स-परिवारकस्य सर्वतो रक्षां कुरु कुरु, ह्लीं-ह्लीं-ह्लीं-ह्लीं-ह्लीं-

ह्रीं-ह्रीं, हूं-हूं-हूं-हूं-हूं-हूं-हूं, क्लीं-क्लीं-क्लीं-क्लीं-क्लीं-क्लीं-क्लीं विपरीत-प्रत्यङ्गिरे! ह्रीं-ह्रीं-ह्रीं-ह्रीं-ह्रीं-ह्रीं-ह्रीं, हूं-हूं-हूं-हूं-हूं-हूं-हूं, क्लीं-क्लीं-क्लीं-क्लीं-क्लीं-क्लीं-क्लीं, ॐ-ॐ-ॐ-ॐ-ॐ-ॐ-ॐ फट्-फट् स्वाहा।।२७।।

हूं ह्रीं क्लीं ॐ विपरीत-प्रत्यङ्गिरे! मम स-परिवारकस्य शत्रवः कुर्वन्ति, करिष्यन्ति, चक्रुश्च, कारयामासुः, कारयन्ति, कारयिष्यन्ति यान् यान् कृत्यान् तैः सार्द्धं तान् तान् विपरीतान् कुरु कुरु, नाशय नाशय, मारय मारय, श्मशानस्थान् कुरु कुरु, भावि-भूत-भवच्छत्रूणां यावत् कृत्यादिकां क्रियां विपरीतां कुरु कुरु, तान् डाकिनी-मुखे हारय हारय, भीषय भीषय, त्रासय त्रासय, मारय मारय, परम-शमन-रूपेण हन हन, धर्म-विच्छिन्न-निर्वाणं हर-हर, तेषां इष्ट-देवान् नाशय नाशय, क्षोभय क्षोभय, हारय हारय, प्राणादि-मनो-बुद्ध्यहङ्कार-क्षुत्-तृष्णा-कर्षण-लयन-श्रवण-आवागमन-भरणादिकं नाशय नाशय, हूं ह्रीं क्लीं ॐ फट् फट् स्वाहा।।२८।।

क्षं ळं हं सं षं शं। वं लं रं यं। मं भं बं फं पं। नं धं दं थं तं। णं ढं डं ठं टं। ञं झं जं छं चं। ङं घं गं खं कं। अः अं औं ओं ऐं एं लॄं लृं ॠं ऋं ऊं उं ईं इं आं अं। हूं-हूं-हूं-हूं-हूं-हूं-हूं, ह्रीं-ह्रीं-ह्रीं-ह्रीं-ह्रीं-ह्रीं-ह्रीं, क्लीं-क्लीं-क्लीं-क्लीं-क्लीं-क्लीं-क्लीं, ॐ-ॐ-ॐ-ॐ-ॐ-ॐ-ॐ विपरीत-प्रत्यङ्गिरे! हूं-हूं-हूं-हूं-हूं-हूं-हूं, ह्रीं-ह्रीं-ह्रीं-ह्रीं-ह्रीं-ह्रीं-ह्रीं, क्लीं-क्लीं-क्लीं-क्लीं-क्लीं-क्लीं-क्लीं, ॐ-ॐ-ॐ-ॐ-ॐ-ॐ-ॐ फट् फट् स्वाहा क्षं ळं हं सं षं शं। वं लं रं यं। मं भं बं फं पं। नं धं दं थं तं। णं ढं डं ठं टं। ञं झं जं छं चं। ङं घं गं खं कं। अः अं औं ओं ऐं एं लॄं लृं ॠं ऋं ऊं उं ईं इं आं अं।।२९।।

अं: अं औं ओं ऐं एं लॄं लं ॠं ऋं ऊं उं ईं इं आं अं। ङं घं गं खं कं। ञं झं जं छं चं। णं ढं डं ठं टं। नं धं दं थं तं। मं भं बं फं पं। वं लं रं यं। क्षं ळं हं सं षं शं। ॐ-ॐ-ॐ-ॐ-ॐ-ॐ-ॐ विपरीत-प्रत्यङ्गिरे! ॐ-ॐ-ॐ-ॐ-ॐ-ॐ-ॐ फट् फट् स्वाहा। अः अं औं ओं ऐं एं लॄं लं ॠं ऋं ऊं उं ईं इं आं अं। ङं घं गं खं कं। ञं झं जं छं चं। णं ढं डं ठं टं। नं धं दं थं तं। मं भं बं फं पं। वं लं रं यं। क्षं ळं हं सं षं शं। ॐ-ॐ-ॐ-ॐ-ॐ-ॐ-ॐ विपरीत-प्रत्यङ्गिरे! मम स-परिवारकस्य स्थाने मम शत्रूणां कृत्यान् सर्वान् विपरीतान् कुरु कुरु, भस्मी- कुरु कुरु, तेषां मन्त्र-यन्त्र-तन्त्रार्चन-श्मशानारोहण-भूमि-स्थापन-भस्म-प्रक्षेपण-पुरश्चरण-होम-तर्पणाभिषेकादिकान् कृत्यान् दूरी कुरु कुरु, नाशं कुरु कुरु, हूं विपरीत-प्रत्यङ्गिरे! मां सं-परिवारकं सर्वतः सर्वेभ्यो रक्ष रक्ष हूं ह्रीं फट् स्वाहा।।३०।।

अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः। कं खं गं घं ङं। चं छं जं झं ञं। टं ठं डं ढं णं। तं थं दं धं नं। पं फं बं भं मं। यं रं लं वं। शं षं सं हं ळं क्षं। क्लीं ह्रीं श्रीं ॐ-ॐ-ॐ-ॐ-ॐ-ॐ-ॐ हूं-हूं-हूं-हूं-हूं-हूं-हूं, ह्रीं-ह्रीं-ह्रीं-ह्रीं-ह्रीं-ह्रीं-ह्रीं, क्लीं-क्लीं-क्लीं-क्लीं-क्लीं-क्लीं-क्लीं, ॐ-ॐ-ॐ-ॐ-ॐ-ॐ-ॐ विपरीत-प्रत्यङ्गिरे! हूं-हूं-हूं-हूं-हूं-हूं-हूं, ह्रीं-ह्रीं-ह्रीं-ह्रीं-ह्रीं-ह्रीं-ह्रीं, क्लीं-क्लीं-क्लीं-क्लीं-क्लीं-क्लीं-क्लीं, ॐ-ॐ-ॐ-ॐ-ॐ-ॐ-ॐ क्लीं ह्रीं श्रीं ॐ-ॐ-ॐ-ॐ-ॐ-ॐ-ॐ, अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः। कं खं गं घं ङं। चं छं जं झं ञं। टं ठं डं ढं णं। तं थं दं धं नं। पं फं बं भं मं। यं रं लं वं। शं षं सं हं ळं क्षं। विपरीत-प्रत्यङ्गिरे! मम स-परिवारकस्य शत्रूणां, विपरीतादि-क्रियां नाशय नाशय,

त्रुटिं कुरु कुरु, तेषां इष्ट-देवादि-विनाशं कुरु कुरु, सिद्धिं अपनयापनय, विपरीत-प्रत्यङ्गिरे!, शत्रु-मर्दिनि! शत्रूणां भयङ्करि! नाना-कृत्यादि-मर्दिनि!, ज्वालिनि!, महा-घोरे-तरे!, त्रिभुवन भयङ्करि!, शत्रूणां चक्षुः-श्रोत्रादि-हारिणि! मम स-सपरिवारकस्य सर्वतः सर्वेभ्यः सर्वदा रक्षां कुरु कुरु स्वाहा।।३१।।

श्रीं ह्रीं ऐं ॐ धरणि! मम स-परिवारकस्य भूमिं रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा।।३२।।

श्रीं ह्रीं ऐं ॐ महा-लक्ष्मि! मम स-परिवारकस्य पादौ रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा।।३३।।

श्रीं ह्रीं ऐं ॐ चण्डिके! मम स-परिवारकस्य जङ्घे रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा।।३४।।

श्रीं ह्रीं ऐं ॐ चामुण्डे! मम स-परिवारकस्य गुह्यं रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा।।३५।।

श्रीं ह्रीं ऐं ॐ ऐन्द्रि! मम स-परिवारकस्य नाभिं रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा।।३६।।

श्रीं ह्रीं ऐं ॐ नारसिंहि! मम स-परिवारकस्य बाहू रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा।।३७।।

श्रीं ह्रीं ऐं ॐ वाराहि! मम स-परिवारकस्य हृदयं रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा।।३८।।

श्रीं ह्रीं ऐं ॐ वैष्णवि! मम स-परिवारकस्य कण्ठं रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा।।३९।।

श्रीं ह्रीं ऐं ॐ कौमारि! मम स-परिवारकस्य वक्त्रं रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा।।४०।।

श्रीं ह्रीं ऐं ॐ माहेश्वरि! मम स-परिवारकस्य नेत्रे रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा।।४१।।

श्रीं ह्रीं ऐं ॐ ब्राह्मि! मम स-परिवारकस्य शिरो रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा।।४२।।

श्रीं ह्रीं ऐं ॐ विपरीत-प्रत्यङ्गिरे! मम स-परिवारकस्य स-छिद्रं सर्व-गात्राणि रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा।।४३।।

ॐ सन्तापिनि! स्फ्रें स्फ्रें मम स-परिवारकस्य शत्रु-सङ्घं सन्तापय सन्तापय हूं फट् स्वाहा।।४४।।

ॐ संहारिणि! स्फें स्फ्रें मम स-परिवारकस्य शत्रु-सङ्घं संहारय संहारय हूं फट् स्वाहा।।४५।।

ॐ रौद्रि! स्फ्रें स्फ्रें मम स-परिवारकस्य शत्रु-सङ्घं रौद्रय रौद्रय हूं फट् स्वाहा।।४६।।

ॐ भ्रामिणि! स्फ्रें स्फ्रें मम स-परिवारकस्य शत्रु-सङ्घं भ्रामय भ्रामय हूं फट् स्वाहा।।४७।।

ॐ जृम्भिणि! स्फ्रें स्फ्रें मम स-परिवारकस्य शत्रु-सङ्घं जृम्भय जृम्भय हूं फट् स्वाहा।।४८।।

ॐ द्राविणि! स्फ्रें स्फ्रें मम स-परिवारकस्य शत्रु-सङ्घं द्रावय द्रावय हूं फट् स्वाहा।।४९।।

ॐ क्षोभिणि! स्फ्रें स्फ्रें मम स-परिवारकस्य शत्रु-सङ्घं क्षोभय क्षोभय हूं फट् स्वाहा।।५०।।

ॐ मोहिनि! स्फ्रें स्फ्रें मम स-परिवारकस्य शत्रु-सङ्घं मोहय मोहय हूं फट् स्वाहा।।५१।।

ॐ स्तम्भिनि! स्फ्रें स्फ्रें मम स-परिवारकस्य शत्रु-सङ्घं स्तम्भय स्तम्भय हूं फट् स्वाहा।।५२।।

।। फल-श्रुति ।।

धृणोति य इमां विद्यां, शृणोति च सदाऽपि ताम्।
यावत् कृत्यादि-शत्रूणां, तत्क्षणादेव नश्यति।।०१।।

मारणं शत्रु-वर्गाणां, रक्षणं चात्मनः परम्।
आयुर्वृद्धिर्यशो-वृद्धिस्तेजो-वृद्धिस्तथैव च।।०२।।
कुबेर इव वित्ताढ्यः, सर्व-सिद्धिमवाप्नुयात्।
वाय्यवादीनामुपशमं, भूत-ज्वर-विनाशनम्।।०३।।
पर-विद्या-हरा सा वै, पर-प्राण-हरा तथा।
पर-क्षोभादिक-करा, सर्व-सम्पत् - करा शुभा।।०४।।
स्मृति-मात्रेण देवेशि!, शत्रु-वर्गाः लयं गताः।
इदं सत्यमिदं सत्यं, दुर्लभा देवतैरपि।।०५।।
शठाय पर-शिष्याय, न प्रकाश्या कदाचन।
पुत्राय भक्ति-युक्ताय, स्व-शिष्याय तपस्विने।।०६।।
प्रदातव्या महा-विद्या, चात्म-वर्गाय दापयेत्।
विना ध्यानैर्विना जापैर्विना पूजा-विधानतः।।०७।।
विना षोढा विना ज्ञानैर्मोक्ष-सिद्धिः प्रजायते।
पर-नारी-हरा विद्या, पर - रूप - हरा तथा।।०८।।
वायु-चन्द्र-स्तम्भ-करा, मैथुनानन्द-दायिनी।
त्रि-सन्ध्यमेक-सन्ध्यं वा, यः पठेद्भक्तितः सदा।।०९।।
सत्यं वदामि देवेशि!, मम कोटि-समं भवेत्।
क्रोधाद्देव-गणास्सर्वे, लयं यास्यन्ति निश्चितम्।।१०।।
किं पुनर्मानवा देवि!, भूत-प्रेतादयो मृताः।
विपरीता-समा विद्या, न भूता न भविष्यति।।११।।
पठनान्ते पर-ब्रह्म-विद्यां स-भास्करां तथा।
मातृका-पुटितां कृत्वा, दशधा प्रजपेत् सुधीः।।१२।।
वेदादि-पुटिता देवि!, मातृकाऽनन्त-रूपिणी।
तया हि पुटितां विद्यां, प्रजपेत् साधकोत्तमः।।१३।।

॥ पर-ब्रह्म-विद्या ॥

ॐ-ॐ-ॐ-ॐ-ॐ-ॐ-ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः। कँ खँ गँ घँ ङँ। चँ छँ जँ झँ ञँ। टँ ठँ डँ ढँ णँ। तँ थँ दँ धँ नँ। पँ फँ बँ भँ मँ। यँ रँ लँ वँ। शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ। ॐ-ॐ-ॐ-ॐ-ॐ-ॐ-ॐ विपरीत-पर-ब्रह्म-महा-प्रत्यङ्गिरे! ॐ-ॐ-ॐ-ॐ-ॐ-ॐ-ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः। कँ खँ गँ घँ ङँ। चँ छँ जँ झँ ञँ। टँ ठँ डँ ढँ णँ। तँ थँ दँ धँ नँ। पँ फँ बँ भँ मँ। यँ रँ लँ वँ। शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॐ-ॐ-ॐ-ॐ-ॐ-ॐ-ॐ। ( १०-वारं जपेत् ) ॥

॥ प्रार्थना ॥

ॐ विपरीत-पर-ब्रह्म-महा-प्रत्यङ्गिरे! स-परिवारकस्य सर्वेभ्यः सर्वतः सर्वदा रक्षां कुरु कुरु, मरण-भयमपनयापनय, त्रि-जगतां बल-रूप-वित्तायुर्मे स-परिवारकस्य देहि देहि, दापय दापय, साधकत्वं प्रभुत्वं च सततं देहि देहि, विश्व-रूपे! धनं पुत्रान् देहि-देहि, मां स-परिवारकं, मां पश्यन्तु। देहिनः सर्वे हिंसकाः हि प्रलयं यान्तु, मम स-परिवारकस्य यावच्छत्रूणां बल-बुद्धि-हानिं कुरु-कुरु, तान् स-सहायान् सेष्ट-देवान् संहारय संहारय, तेषां मन्त्र-यन्त्र-तन्त्र-लोकान् प्राणान् हर हर, हारय हारय, स्वाभिचारमपनयापनय, ब्रह्मास्त्रादीनि नाशय नाशय, हूं हूं स्फ्रें स्फ्रें ठः ठः ठः फट् फट् स्वाहा।

॥ श्रीमहा-विपरीत-प्रत्यङ्गिरा-स्तोत्रम् ॥

***

# श्रीमहा-विपरीत-प्रत्यङ्गिरा-स्तोत्र

## विशेष ज्ञातव्य

वैसे तो शास्त्रों में प्रायः सभी महा-विद्याओं और अन्य भी देवताओं के 'विपरीत-प्रत्यङ्गिरा मन्त्र-स्तोत्रादि' मिलते हैं। किन्तु यह स्तोत्र उन सबकी चरम सीमा है। इसकी 'पूर्व-पीठिका' और 'फल-श्रुति' में कुछ भी अतिशयोक्ति नहीं है। केवल करने की सामर्थ्य भर हो। किसी भी प्रकार का अभिचार, रोग, ग्रह-पीड़ा, देव-पीड़ा, दुर्भाग्य; शत्रु या राज-भय आदि क्या है ऐसा, जिसका शमन इससे नहीं हो सकता। आजकल कुछ ढोंगी तान्त्रिक अपने को कृत्या-सिद्ध बताकर लोगों को आतङ्कित कर रहे हैं, उनके लिए यह ऐसा उत्तर है, जिसका कोई प्रत्युत्तर नहीं है। इसके साधक को 'कृत्या' देख भी नहीं सकती, अहित कर पाना तो आकाश-कुसुम है। अब पाठ करने सम्बन्धी बातों पर ध्यान दें–

(१) 'पूर्व-पीठिका' के तेईस श्लोकों का पाठ करके, दस दाने सफेद सरसों (इसे ही पीली सरसों भी कहते हैं। अन्य नाम हैं– सिद्धार्थ, राई, राजिका आदि। इनके आगे 'श्वेत या सफेद' विशेषण लगा दें।) लेकर गुरु-मन्त्र से १०० बार (१०८ बार नहीं) अभिमन्त्रित कर दशों दिशाओं में दस-दस दाना फेंक दें। फिर विनियोगादि आगे की क्रिया करके पाठ करें।

आप चाहें, तो सरसों के दाने अधिक भी ले सकते हैं, किन्तु सभी दिशाओं में एक-सी संख्या में ही दानें फेंकने होंगे, जो उत्तम पक्ष है। कमी-बेशी ठीक नहीं।

(२) फल-श्रुति के अन्त में 'पर-ब्रह्म-विद्या' का १० बार जप करें। अधिक संख्या में पाठ करें तो 'पर-ब्रह्म-विद्या' का जप केवल

प्रथम और अन्तिम पाठ में करे। बीच के पाठों में मात्र 'स्तोत्र' का पाठ होगा। और भी स्पष्ट कर दूँ– पहला पाठ पूरा होगा। बीच के पाठों में केवल 'स्तोत्र' पढ़ें तथा अन्तिम पाठ में 'फल-श्रुति', 'पर-ब्रह्म-विद्या' का जप तथा 'प्रार्थना' सभी सम्मिलित होंगे।

(३) पुरश्चरण आवश्यक नहीं किन्तु सर्वोत्तम होगा कि विधि-पूर्वक एक सहस्त्र पाठ (१०००) कर लिए जाएँ। प्रयोग के लिए १०० पाठ पर्याप्त हैं। यदि आवश्यक हो तो अधिक करें।

(४) पुरश्चरण और प्रयोग-काल में नित्य 'शिवा-बलि' अवश्य दें। कौल-साधक तत्त्वों से तथा पाशव-कल्प के साधक अनुकल्पों से बलि दें।

# श्रीमहा-विद्या-स्तोत्रम् ( २ )

।। पूर्व-पीठिका-श्रीशिव उवाच ।।

दुर्लभं तारिणी - मार्गं, दुर्लभं तारिणी-पदं।
मन्त्रार्थं मन्त्र - चैतन्यं, दुर्लभं शव-साधनम्।।०१।।

श्मशान-साधनं योनि-साधनं ब्रह्म - साधनं।
क्रिया - साधनकं भक्ति - साधनं मुक्ति-साधनम्।
स्तव-प्रसादाद् देवेशि!, सर्वाः सिद्ध्यन्ति सिद्धयः।।०२।।

।। मूल-स्तोत्र-पाठ ।।

नमस्ते चण्डिके! चण्डि!, चण्ड-मुण्ड-विनाशिनि!।
नमस्ते कालिके! काल-महा-भय-विनाशिनि!।।०१।।

शिवे! रक्ष जगद्धात्रि!, प्रसीद हर - वल्लभे!।
प्रणमामि जगद्धात्रीं, जगत् - पालन-कारिणीम्।।०२।।

जगत्-क्षोभ-करीं विद्यां, जगत्-सृष्टि-विधायिनीं।
करालां विकटां घोरां, मुण्ड-माला-विभूषिताम्।।०३।।

हरार्चितां हराराध्यां, नमामि हर - वल्लभां।
गौरीं गुरु - प्रियां गौर - वर्णालङ्कार - भूषिताम्।।०४।।

हरि-प्रियां महा-मायां, नमामि ब्रह्म - पूजितां।
सिद्धां सिद्धेश्वरीं सिद्ध - विद्या-धर-गणैर्युताम्।।०५।।

मन्त्र-सिद्धि-प्रदां योनि-सिद्धिदां लिङ्ग-शोभितां।
प्रणमामि महा-मायां, दुर्गां दुर्गति - नाशिनीम्।।०६।।

उग्रामुग्र - मयीमुग्र - तारामुग्र - गणैर्युतां।
नीलां नील-घन-श्यामां, नमामि नील - सुन्दरीम्।।०७।।

श्यामाङ्गीं श्याम-घटितां, श्याम-वर्ण-विभूषितां।
प्रणमामि जगद्धात्रीं, गौरीं सर्वार्थ - साधिनीम्।।०८।।

विश्वेश्वरीं महा-घोरां, विकटां घोर-नादिनीं।
आद्यामाद्य - गुरोराद्यामाद्य - नाथ - प्रपूजिताम्।।०९।।

श्रीदुर्गां धनदामन्न - पूर्णां पद्मां सुरेश्वरीं।
प्रणमामि जगद्धात्रीं, चन्द्र-शेखर-वल्लभाम्।।१०।।

त्रिपुरां सुन्दरीं बालामबला-गण - भूषितां।
शिव-दूतीं शिवाराध्यां, शिव-ध्येयां सनातनीम्।।११।।

सुन्दरीं तारिणीं सर्व-शिवा-गण-विभूषितां।
नारायणीं विष्णु-पूज्यां, ब्रह्म-विष्णु-हर-प्रियाम्।।१२।।

सर्व-सिद्धि-प्रदां नित्यामनित्यां गुण-वर्जितां।
सगुणां निर्गुणां ध्येयामर्चितां सर्व - सिद्धिदाम्।।१३।।

विद्यां सिद्धि-प्रदां विद्यां, महा - विद्यां महेश्वरीं।
महेश - भक्तां माहेशीं, महा-काल-प्रपूजिताम्।।१४।।

प्रणमामि जगद्धात्रीं, शुम्भासुर-विमर्दिनीं।
रक्त-प्रियां रक्त-वर्णां, रक्त-बीज-विमर्दिनीम्।।१५।।

भैरवीं भुवनां देवीं, लोल-जिह्वां सुरेश्वरीं।
चतुर्भुजां दश - भुजामष्टादश - भुजां शुभाम्।।१६।।

त्रिपुरेशीं विश्व-नाथ-प्रियां विश्वेश्वरीं शिवां।
अट्टहासामट्टहास-प्रियां धूम्र - विनाशिनीं।।१७।।

कमलां छिन्न-भालां च, मातङ्गीं सुर-सुन्दरीं।
षोडशीं विजयां भीमां, धूमां च वलगामुखीम्।।१८।।

सर्व - सिद्धि-प्रदां सर्व-विद्या-मन्त्र-विशोधिनीं।
प्रणमामि जगत् - तारां, सारां च मन्त्र - सिद्धये।।१९।।

।। फल-श्रुति ।।

इत्येवं च वरारोहे!, स्तोत्रं सिद्धि-करं परं।
पठित्वा मोक्षमाप्नोति, सत्यं वै गिरि - नन्दिनि!।।०१।।

कुज - वारे चतुर्दश्याममायां जीव - वासरे।
शुक्रे निशि-गते स्तोत्रं, पठित्वा मोक्षमाप्नुयात्।।०२।।

त्रि-पक्षे मन्त्र-सिद्धिः स्यात्, स्तोत्र-पाठाद्धि शङ्करि!।
चतुर्दश्यां निशा-भागे, शनि-भौम-दिने तथा।।०३।।

निशा-मुखे पठेत् स्तोत्रं, मन्त्र-सिद्धिमवाप्नुयात्।
केवलं स्तोत्र-पाठाद्धि, मन्त्र - सिद्धिरनुत्तमा।
जागर्ति सततं चण्डि!, स्तोत्र-पाठाद् भुजङ्गिनी।।०४।।

।। मुण्ड-माला-तन्त्रे एकादश-पटले श्रीमहा-विद्या-स्तोत्रम्।।

## महा-विद्याओं की महिमा

'कुब्जिका तन्त्र', प्रथम पटल के अनुसार कलि-युग में कृष्णत्व को पाकर शुक्ल-वर्णा होती हुई भी नील-रूपिणी सहज हो वाक्-शक्ति प्रदान करती हैं, अतः 'नील-सरस्वती' नाम पड़ा है। तारने-मुक्ति देने के कारण 'तारा' को 'तारिणी' कहते हैं। भुवनों का पालन करने से और सृष्टि-स्थिति-कारिणी होने से 'भुवनेशी' प्रसिद्ध हैं। सदा श्री प्रदान करने से 'श्रीविद्या' और निर्गुणा महा-देवी 'षोडशी' नाम से प्रख्यात हैं। दुःखों का संहार करनेवाली, यम (मृत्यु) के सङ्कट को दूर करनेवाली और काल-भैरव की भार्या होने से 'भैरवी' कही गई हैं। त्रि-शक्ति, त्रि-गुणा, मोहिनी और मोक्ष-दायिनी होने से 'छिन्ना' नाम पड़ा है। धूम्रासुर का नाश करने से 'धूमावती' प्रसिद्ध हैं, जो धूम-रूपा हैं और चतुर्वर्ग को देनेवाली, जगत् का उपकार करनेवाली जगन्माता हैं। 'व' से वारुणी, 'ग' से सिद्धिदा और 'ल' से चैतन्य पृथिवी-स्वरूपा 'वगला' प्रसिद्ध हैं। मद-शील के कारण और सभी आपत्तियों से छुड़ानेवाली होने से मतङ्गासुर का नाश करनेवाली 'मातङ्ग' कही गई हैं। वैकुण्ठ-वासिनी देवी 'कमला' हैं। वे ही पाताल-वासिनी होकर 'लक्ष्मी'-रूपा सुन्दरी हैं।

उक्त दसों महा-विद्याएँ नित्य धर्म-अर्थ-काम और मोक्ष-इन चारों वर्गों के फल देनेवाली हैं। कलि-युग में ये पूरा फल देती हैं। इनके सम्बन्ध में कंजूस, पाखण्डी, निन्दा-वादी, भक्ति और आस्था-हीन व्यक्ति को कभी न बताना चाहिए। केवल सद्-गुणी, अच्छे लक्षणवाले व्यक्ति को ही इनकी उपासना देनी चाहिए। इन महा-विद्याओं के समान तीनों भुवनों में अन्य कोई नहीं है। इनमें से किन्हीं एक महा-विद्या का नामोच्चारण करने मात्र से सभी पापों से छुटकारा मिल जाता है। जो इनका स्मरण करता रहता है, वह भव-बन्धन से मुक्त हो जाता है।

***

## श्रीमहा-विद्या-कवचम् ( १ )

सदा - शिव ऋषिर्देवि!, उष्णिक् छन्दः उदाहृतं।
विनियोगश्च देवेशि!, ततश्च मन्त्र-सिद्धये।

।। विनियोग ।।

ॐ अस्य श्रीमहा-विद्या-कवचस्य श्रीसदा-शिव ऋषिः, उष्णिक् छन्दः, श्रीमहा-विद्या देवता, सर्व-सिद्धि-प्राप्त्यर्थे पाठे विनियोगः।

।। ऋष्यादि-न्यास ।।

ॐ श्रीसदा-शिव-ऋषये नमः शिरसि, ॐ उष्णिक्-छन्दसे नमः मुखे, ॐ श्रीमहा-विद्या-देवतायै नमः हृदि, ॐ सर्व-सिद्धि-प्राप्त्यर्थे पाठे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

।। मानस-पूजन ।।

ॐ लं पृथ्वी-तत्त्वात्मकं गन्धं श्रीमहा-विद्या-प्रीत्यर्थे समर्पयामि नमः।

ॐ हं आकाश-तत्त्वात्मकं पुष्पं श्रीमहा-विद्या-प्रीत्यर्थे समर्पयामि नमः।

ॐ यं वायु-तत्त्वात्मकं धूपं श्रीमहा-विद्या-प्रीत्यर्थे घ्रापयामि नमः।

ॐ रं अग्नि-तत्त्वात्मकं दीपं श्रीमहा-विद्या-प्रीत्यर्थे दर्शयामि नमः।

ॐ वं जल-तत्त्वात्मकं नैवेद्यं श्रीमहा-विद्या-प्रीत्यर्थे निवेदयामि नमः।

ॐ सं सर्व-तत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीमहा-विद्या-प्रीत्यर्थे निवेदयामि नमः।

॥ कवच-स्तोत्र ॥

मस्तकं पार्वती पातु, पातु पञ्चानन-प्रिया।
केशं मुखं पातु चण्डी, भारती रुधिर - प्रिया।।०१।।

कण्ठं पातु स्तनं पातु, कपालं गण्डमेव हि।
काली कराल-वदना, विचित्रा स्वर-घण्टिनी।।०२।।

वक्षो - मूलं नाभि - मूलं, दुर्गा त्रिपुर - सुन्दरी।
दक्ष - हस्तं पातु तारा, सर्वाणी सर्वमेव च।।०३।।

विश्वेश्वरी पृष्ठ - देशं, नेत्रं पातु महेश्वरी।
हृत् - पद्मं कालिका पातु, उग्र-तारा नभो-गतम्।।०४।।

नारायणी गुह्य - देशं, मेढ्रं मेढ्रेश्वरी तथा।
पाद - युग्मं जया पातु, सुन्दरी चांगुलीषु च।।०५।।

षट्-पद्म-वासिनी पातु, सर्व-पद्मं निरन्तरं।
इडा च पिङ्गला पातु, सुषुम्ना पातु सर्वदा।।०६।।

धनं धनेश्वरी पातु, अन्न-पूर्णा सदाऽवतु।
बाह्यं बाह्येश्वरी पातु, नित्यं मां चण्डिकाऽवतु।।०७।।

जीवं मां पार्वती पातु, मातङ्गी पातु सर्वदा।
छिन्ना धूमा च भीमा च, भये पातु जले वने।।०८।।

कौमारी चैव वाराही, नारसिंही यशो मम।
पातु नित्यं भद्र-काली, श्मशानालय-वासिनी।।०९।।

उदरे सर्वदा पातु, शर्वाणी सर्व-मङ्गला।
जगन्माता जयं पातु, नित्यं कैलास-वासिनी।।१०।।

शिव - प्रिया सुतं पातु, सुतां पर्वत-नन्दिनी।
त्रैलोक्यं पातु वगला, भुवनं भुवनेश्वरी।।११।।

सर्वाङ्गं सर्व-निलया, पातु नित्यं च पार्वती।
चामुण्डा पातु मे रोम-कूपं सर्वार्थ-साधिनी।।१२।।

ब्रह्माण्डं मे महा-विद्या, पातु नित्यं मनोहरा।
लिङ्गं लिङ्गेश्वरी पातु, महा-पीठं महेश्वरी।।१३।।

गौरी मे सन्धि-देशं च, पातु वै त्रिपुरेश्वरी।
सुरेश्वरी सदा पातु, श्मशाने च शवेऽवतु।।१४।।

कुम्भके रेचके चैव, पूरके काम - मन्दिरे।
कामाख्या काम-निलयं, पातु दुर्गा महेश्वरी।।१५।।

डाकिनी काकिनी पातु, नित्यं मे शाकिनी तथा।
हाकिनी लाकिनी पातु, राकिनी पातु सर्वदा।।१६।।

ज्वालामुखी सदा पातु, मुख - मध्ये शिवाऽवतु।
तारिणी विभवे पातु, भवानी च भवेऽवतु।।१७।।

त्रैलोक्य - मोहिनी पातु, सर्वाङ्गं विजनेऽवतु।
राज-कुले महा-घाते, संग्रामे शत्रु-सङ्कटे।।१८।।

प्रचण्डा साधकं मां च, पातु भैरव-मोहिनी।
श्रीराज - मोहिनी पातु, राज - द्वारे विपत्तिषु।।१९।।

सम्पत् - प्रदा भैरवी च, पातु बाला बलं मम।
नित्यं मा शम्भु - वनिता, पातु मां त्रिपुरान्तका।।२०।।

।। फल-श्रुति ।।

इत्येवं कथितं देवि!, रहस्यं सार्व-कालिकं।
भुक्तिदं मुक्तिदं सौख्यं, सर्व-सम्पत् - प्रदायकम्।।०१।।

यः पठेत् प्रातरुत्थाय, साधकेन्द्रो भवेद् भुवि।
कुज-वारे चतुर्दश्याममायां मन्द - वासरे।।०२।।

गुरौ गुरुं समभ्यर्च्य, यः पठेत् साधकोत्तमः।
स याति भवनं देव्याः, सत्यं सत्यं न संशयः।।०३।।

एवं यदि वरारोहे!, पठेद भक्ति - परायणः।
मन्त्र-सिद्धिर्भवेत् तस्य, चाचिरान्नात्र संशयः।।०४।।

सत्यं लक्ष-पुरश्चर्या, फलं प्राप्य शिवां व्रजेत्।
शिव-मार्गं राज - मार्गं, प्राप्य जीवः शिवो भवेत्।।०५।।

पठित्वा कवचं स्तोत्रं, मुक्तिमाप्नोति निश्चितं।
पठित्वा कवचं स्तोत्रं, दश-विद्यां यजेद् यदि।।०६।।

विद्या-सिद्धिः मन्त्र-सिद्धिः, भवत्येव न संशयः।
तदैव ताम्बूले सिद्धिः, जायते नात्र संशयः।।०७।।

शव-सिद्धिः चिता-सिद्धिः, दुर्लभा धरणी-तले।
अयत्नात् सुलभ-सिद्धिः, ताम्बूलान्नात्र संशयः।।०८।।

निशा - मुखे निशायां च, महा-काले निशान्तके।
पठेद् भक्त्या महेशानि!, गाणपत्यं लभेत् तु सः।।०९।।

।। मुण्ड-माला-तन्त्रे, एकादश-पटले मन्त्र-सिद्धि-स्तोत्र-कवचं नाम श्रीमहा-विद्या-कवचम्।।

## श्रीमहा-विद्या-कवचं ( २ )

ॐ प्राच्यां रक्षतु मे तारा, काम-रूप-निवासिनी।
आग्नेयां षोडशी पातु, याम्यां धूमावती स्वयम्।।०१।।

नैर्ऋत्यां भैरवी पातु, वारुण्यां भुवनेश्वरी।
वायव्यां सततं पातु, छिन्नमस्ता महेश्वरी।।०२।।

कौबेर्यां पातु मे देवी, श्रीविद्या बगला-मुखी।
ऐशान्यां पातु मे नित्यं, महा-त्रिपुर-सुन्दरी।।०३।।

ऊर्ध्वं रक्षतु मे विद्या, मातङ्गी पीठ-वासिनी।
सर्वतः पातु मे नित्यं, कामाख्या कालिका स्वयम्।।०४।।

ब्रह्म-रूपा महा-विद्या, सर्व-विद्या-मयी स्वयम्।
शीर्षे रक्षतु मे दुर्गा, भालं श्रीभव-गेहिनी।।०५।।

त्रिपुरा भ्रू-युगे पातु, शर्वाणी पातु नासिकाम्।
चक्षुषी चण्डिका पातु, श्रोत्रे नील-सरस्वती।।०६।।

मुखं सौम्य-मुखी पातु, ग्रीवां रक्षतु पार्वती।
जिह्वां रक्षतु मे देवी, जिह्वा-ललन-भीषणा।।०७।।

वाग्-देवी वदनं पातु, वक्षः पातु महेश्वरी।
बाहू महा-भुजा पातु, करांगुलीः सुरेश्वरी।।०८।।

पृष्ठतः पातु भीमास्या, कट्यां देवी दिगम्बरी।
उदरं पातु मे नित्यं, महा-विद्या महोदरी।।०९।।

उग्र-तारा महा-देवी, जंघोरू परि-रक्षतु।
गुदं मुष्कं च मेढ्रं च, नाभिं च सुर-सुन्दरी।।१०।।

पदांगुलीः सदा पातु, भवानी त्रिदशेश्वरी।
रक्तं-मांसास्थि-मज्जादीन, पातु देवी शवासना।।११।।

महा-भयेषु घोरेषु, महा-भय-निवारिणी।
पातु देवी महा-माया, कामाख्या-पीठ-वासिनी।।१२।।

भस्माचल-गता दिव्य-सिंहासन-कृताश्रया।
पातु श्रीकालिका-देवी, सर्वोत्पातेषु सर्वदा।।१३।।

रक्षा-हीनं तु यत् स्थानं, कवचेनापि वर्जितम्।
तत्-सर्वं सर्वदा पातु, सर्व-रक्षण-कारिणी।।१४।।

श्रीकाली
पूजा-पद्धति